ƒ

विदेह शरदिन्दु चौधरी विशेषांक

ISBN: 978-93-340-2847-8

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। कॉपीराइट (©) धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ, अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादन अथवा संचारन-प्रसारण नै कएल जा सकैत अछि।

(c) २०००- २०२३. सर्वाधिकार सुरक्षित। भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितक रूपमे विद्यमान अछि *(किछु दिन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर, स्रोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर)।*

ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ 'विदेह' पड़लै। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि, जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि।

(c)२०००- २०२३. विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004). सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur. In respect of materials e-published in Videha, the Editor, Videha holds the right to create the web archives/ theme-based web archives, right to translate/ transliterate those archives and create translated/ transliterated web-archives; and the right to e-publish/ print-publish all these archives. रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना/ संग्रह (संपूर्ण उत्तरदायित्व रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता मध्य) editorial.staff.videha@gmail.com कैं मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ पठा सकैत छथि, संगमे ओ अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो सेहो पठाबथि। एतऽ प्रकाशित रचना/ संग्रह सभक कॉपीराइट रचनाकार/ संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि आ जतऽ रचनाकार/ संग्रहकर्त्ताक नाम नै अछि ततऽ ई संपादकाधीन अछि। सम्पादक: विदेह ई-प्रकाशित रचनाक वेब-आर्काइव/ थीम-आधारित वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार, ऐ सभ आर्काइवक अनुवाद आ लिप्यंतरण आ तकरो वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार; आ ऐ सभ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ऐ सभ लेल कोनो रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै, से रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक इच्छुक रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता विदेहसँ नै जुड़थु। विदेह ई पत्रिकाक मासमे दू टा अंक निकलैत अछि जे मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ www.videha.co.in पर ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

Font/ Keyboard Source: https://fonts.google.com/ , https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts , https://keyman.com/

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

© Preeti Thakur (sales.videha@gmail.com)

VIDEHA SHARDINDU CHAUDHARY SPECIAL ISSUE: Editor Gajendra Thakur

समानान्तर परम्पराक विद्यापति- मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (विद्यापतिक चित्र: विदेह चित्रकला सम्मानसँ पुरस्कृत पनकलाल मण्डल द्वारा)। कवीश्वर ज्योतिरीश्वर(लगभग १२७५-१३५०)सँ पूर्व (कारण ज्योतिरीश्वरक ग्रन्थमे हिनक चर्च अछि), मैथिलीक आदि कवि। संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापति ठक्कुरःसँ भिन्न। सम्भवतः बिस्फी गामक बार्बर कास्टक श्री महेश ठाकुरक पुत्र। समानान्तर परम्पराक बिदापत नाचमे विद्यापति पदावलीक (ज्योतिरीश्वरसँ पूर्वसँ) नृत्य-अभिनय होइत अछि।ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापतिः- कश्मीरक अभिनव गुप्त (दशम शताब्दीक अन्त आ एगारहम शताब्दीक प्रारम्भ)- ग्रन्थ "ईश्वर प्रत्याभिज्ञा-विभर्षिणी" मे विद्यापतिक उल्लेख करै छथि। श्रीधर दासक सदुक्तिकर्णामृत, (रचना ११ फरबरी १२०६, मध्यकालीन मिथिला, वि.कु. ठाकुर)- श्रीधर दास विद्यापतिक पाँच टा पद उद्धृत केने छथि जे विद्यापतिक पदावलीक भाषा छी। "जाव न मालतो कर परगास/ तावे न ताहि मधुकर विलास।" आ "मुन्दला मुकुल कतय मकरन्द।" ज्योतिरीश्वर (१२७५-१३५०) षष्ठः कल्लोल- ॥अथ विद्यावन्त वर्णना॥ अष्टमः कल्लोलः- ॥अथ राज्य वर्णना॥ मे उल्लेख।

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

<u>अक्खर खम्भा (आखर खाम्ह)</u>

तिहुअन खेत्तहि काजि तसु कित्तिवल्लि पसरेइ। अक्खर खम्भारम्भ जउ मज्झो बन्धि न देइ॥ ***(कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा।)*** माने आखर रूपी खाम्ह निर्माण कऽ ओइपर **(*गद्य-पद्य रूपी*)** मंच जँ नै बान्हल जाय तँ ऐ त्रिभुवनरूपी क्षेत्रमे ओकर कीर्तिरूपी लत्ती केना पसरत।

शुक्ल यजुर्वेद (२६.२)-यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च।।हम सभ गोटेकेँ ई पवित्र वाणी (वेदवाणी) सुनाबी। ब्राह्मणकेँ, क्षत्रियकेँ, शूद्रकेँ आ आर्यकेँ; अपन लोककेँ आ अपरिचितकेँ सेहो (माने सभकेँ)। मुदा ऐ वेदवाक्यक विपरीत मनुस्मृति वेदवाणीक अध्ययन/ श्रवणकेँ समाजक किछु गोटे लेल निषेध करऽ चाहलक, मुदा स्मृति सेहो वेदवाक्यकेँ प्रमाण मानैत अछि (शब्द प्रमाण) तेँ तकर विरुद्ध देल ओकर निर्देश स्वयं अमान्य भऽ जाइत अछि।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant.
-Robert Louis Stevenson

Videha: Maithili Literature Movement

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्ति:

ওঁ দ্যৌ: শান্তিৰন্তৰিক্ষ Ẇ শান্তি:

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्तिः पृथ्वी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति वनस्पतय: शान्तिर्विश्वे देवा: शान्तिर्ब्रह्म

ওঁ দ্যৌ: শান্তিৰন্তৰিক্ষ ẇ শান্তি◌ঃ পৃথ্বী শান্তিৰাপ: শান্তিৰোষধয: শান্তি রনস্পতয: শান্তির্রিশ্বে দেরা: শান্তির্ঁৰহ্ম

ब्रह्मणसँ प्रार्थना जे द्युलोकमे, अंतरिक्षमे, पृथ्वीपर, जलमे, औषधमे, वनस्पतिमे, विश्वमे, सभ देवतागणमे आ ब्रह्ममे शांति हुअय।

ॐ-ब्रह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूलोकक बीच, आप:- जल, विश्वेदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

ব্রঁহ্মণসঁ প্রার্থনা জে দ্যুনোকমে, অংতৰিক্ষমে, পৃথ্বীপৰ, জনমে, ঔষধমে, রনস্পতিমে, রিশ্বমে, সভ দেরতাগণমে আ ব্রঁহ্মমে শাঁতি হুঅয।

ওঁ-ব্রঁহ্মণ, দ্যৌ-সূর্য-তৰেগণ, অংতৰিক্ষ- পৃথ্বী আ দ্যূনোকক রীচ, আপ:-জন, রিশ্বেদেরা- সভ দেরতা, ব্রঁহ্ম- সর্জক।

ॐ, स॒हस्रंशीर्षा॒ पुरुंषः। स॒ह॒स्रा॒क्षः स॒हस्रंपात्।

ওঁ, স↓ হস্রা↑ শীর্ষা↓ পুরু↑ ষঃ। স↓ হ↓ স্রা↓ ক্ষঃ

স↓ হস্রা↑ পাৎ।

स भूमिं ग्वंग वि॒श्वतों वृ॒त्वा। अत्यंतिष्ठद् दशाङ्गु॒लम्॥

স ভূমিঁ↑ Ẇ রি↓ শ্বতো↑ বৃ↓ ত্বা। অত্য↑ তিষ্ঠদ্ দশাঙ্গু↓ লম্॥

हजार माथ, हजार आँखि, हजार पएर संग विश्वकेँ आच्छादित केने अछि, दस आंगुरक गनतीक वशमे नै अछि ओ।

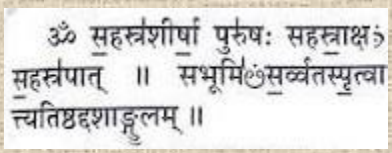

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः
सहस्रपात् ॥ सभूमिꣳसर्व्वतस्पृत्वा
त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥

प॒द्भ्यागँ् शू॒द्रो अंजायत॥

প↓ দ্ভ্যাগ্ঁ↑ শূ↓ দ্রো অ↑ জায়ত॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

प॒द्भ्यां भूमि॒र्दिश॒ः श्रोत्राँत्।

প↓ দ্ভ্যাং ভূমি↓ র্দিশঃ↓ শ্রোত্রা↑ ↑ ৎ।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

❀ (White Florette- innocence and purity)

☸ (Wheel of Dharma)

卐 (Swastik)

ẇ (Gwang ग्वंग- two small circles connected by u and a dot placed over it, used in reference of Vedic texts)

꣼ (सिद्धिरस्तु, सिद्धम সিদ্ধিৰস্তু, সিদ্ধম Devanagari Anji)

(Bengali Anji, Siddham)

𑓆 (Tirhuta Anji, Ankush of Ganeshji, placed at the beginning of something)

सोशल मीडिया, अन्तर्जाल आ दूरदर्शनक कार्यक्रम सभमे वेदमे ई लिखल अछि, ई वर्णित अछि, शूद्रक प्रति, स्त्रीक प्रति, शूद्रक स्त्रीक प्रति अपमान जनक गप लिखल अछि; ई सभ सूनि कऽ कियो विकीपीडिया आ आन आन ठाम अन्तर्जालपर लेख सभमे परिवर्तन कऽ देने रहथि। एक गोटे अंग्रेजीमे लिखलनि- "अथर्ववेदमे शूद्रक पत्नीकेँ बिना स्वीकृतिक कियो हाथ पकड़ि लऽ जा सकय, बला वक्तव्य अछि।" हम कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक, खण्ड-८; प्रबन्ध निबन्ध समालोचना भाग-२, २०१४ मे अपन आलेख "विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निवारण" मे लिखने रही- ".. ई ओहिना भेल जेना अथर्ववेदमे शूद्रक पत्नीकेँ बिना स्वीकृतिक कियो हाथ पकड़ि लऽ जा सकए बला वक्तव्य।"

मुदा अथर्ववेद बा कोनो वेदमे ओइ तरहक वक्तव्य कत्तौ नै आयल अछि। तकर विपरीत शुक्ल यजुर्वेद ई कहैत अछि:-

शुक्ल यजुर्वेद (२६.२)-यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च।।हम सभ गोटेकें ई पवित्र वाणी (वेदवाणी) सुनाबी। ब्राह्मणकें, क्षत्रियकें, शूद्रकें आ आर्यकें; अपन लोककें आ अपरिचितकें सेहो (माने सभकें)। मुदा ऐ वेदवाक्यक विपरीत मनुस्मृति वेदवाणीक अध्ययन/ श्रवणकें समाजक किछु गोटे लेल निषेध करऽ चाहलक, मुदा स्मृति सेहो वेदवाक्यकें प्रमाण मानैत अछि (शब्द प्रमाण) तें तकर विरुद्ध देल ओकर निर्देश स्वयं अमान्य भऽ जाइत अछि।

वेद मे उपलब्ध शूद्र शब्दक उल्लेखित अंशक संग्रह नीचाँ देल जा रहल अछि। शूद्रक अपमानजनक उल्लेख तँ नहिये अछि, वरन् पएरसँ पवित्र पृथ्वीक जन्मक उल्लेख अछि आ तही उत्पत्तिक सादृश्यताक कारणसँ मानव समुदायक पालक शूद्र कहल गेल छथि।

पद्भ्यागँ् शूद्रो अंजायत॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्राँत्।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

REFERENCE OF SHUDRAS IN VEDAS [Dr Tulsi Ram, 2013, Atharveda: Samaveda: Yajurveda: Rigveda; English Translations]

ATHARVA VEDA (3 references)

KANDA-14

(MARRIAGE AND FAMILY) Kanda 14/Sukta 1 (Surya's Wedding)

Devata: Dampati; Rshi: Surya Savitri

60*. Bhagastataksha caturah padanbhagastataksha catvaryuspalani. Tvasta pipesa madhyatonu vardhrantsa no astu sumangali.*

Bhaga, lord sustainer and ordainer of life, has framed the value orders of life: Dharma, Artha, Kama and Moksha; four social orders: Brahmana, Kshatriya, Vaishya and **Shudra**; four stages of personal life: Brahmacharya, Grhastha, Vanaprastha and Sanyasa. Tvashta, lord maker and organiser of life, has placed the woman as partner of man in matrimony in this order and organisation. May the bride be good and auspicious for us.

भाग- पालनकर्ता आ जीवनक अधिष्ठाता- जीवनक मूल्य क्रम तैयार केने छथिः धर्म, अर्थ, काम आ मोक्ष; चारि सामाजिक क्रम- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्र; व्यक्तिगत जीवनक चारि चरण- ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ आ सन्यास।त्वष्टा- स्वामी निर्माता आ जीवनक आयोजक- एहि क्रममे आ सङ्गठनमे स्त्रीकेँ विवाहमे पुरुषक साथीक रूपमे रखने छथि। से वधू हमर सभक लेल नीक आ शुभ होथि।

Kanda 19/Sukta 6 (Purusha, the Cosmic Seed)

Purusha Devata, Narayana Rshi

6. *Brahmano sya mukhamasid bahu rajanyo bhavat. Madhyam tadasya yadvaishyah padbhyam sudro ajayata.*

Brahmana, (man of knowledge, divine vision and the Vedic Word in the human community) is the mouth of the Samrat Purusha. Kshatriya, man of

justice and polity, is the arms of defence and organisation. The middle part is the Vaishya who produces and provides food and energy. And the ancillary services that provide sustenance and support with auxiliary labour are the feet, the **Shudra** that bears the burden of society.

ब्राह्मण (ज्ञानी, दिव्य दृष्टि आ मानव समुदाय लेल वैदिक शब्द) सम्राट पुरुषक मुख अछि। क्षत्रिय -न्याय आ राजनीतिक लोक- रक्षा आ सङ्गठनक हाथ छथि। मध्य भाग वैश्य छथि जे भोजन आ ऊर्जाक उत्पादन आ आपूर्ति करैत छथि। आ सहायक सेवा जे सहायक श्रमक सङ्ग निर्वाह आ सहायता प्रदान करैत अछि, ओ अछि पैर, शूद्र जे समाजक भार वहन करैत छथि।

Kanda 19/Sukta 32 (Darbha)

Darbha Devata, Bhrgu Ayushkama Rshi

8. *Priyam ma darbha krunu brahmarajanyabhyam sudraya charyaya cha. Yasmai ca kamayamahe sarvasmai cha vipasyate.*

O Darbha, destroyer and preserver, eternal sanative, render me dear and loving to and loved by all Brahmanas, Kshatriyas, Vaishyas, **Shudra**s, whoever we love and desire, and all those who have the eye to see (and discriminate right and wrong).

हे दर्भा, विनाशक आ संरक्षक, शाश्वत विवेकशील; हमरा सभकेँ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, सभक प्रिय आ प्रेमी बना दिअ। संगे ओ सभ हमरा सभसँ प्रेम् करथि जिनका सँ हम प्रेम करी बा जिनकर कामना करी; आ ओ सभ जिनका लग देखबाक दृष्टि अछि (आ सही आ गलतमे भेद बुझैत छथि)।

SAMAVEDA (o reference)

YAJURVEDA (7 references)

CHAPTER- VIII

30. (Dampati Devata, Atri Rshi)

Purudasmo visuruupa indurantarmahimanamanaja dhirah. Ekapadim dvipadim tripadim chatupadimastapadim bhuvananu prathantam svaha.

The man of mighty deeds, who eliminates suffering and creates joy, of versatile attainments, bright and honourable, constant and resolute, should wait for the great new arrival. Men of the household, cultivate the vaidic culture of one, two, three, four and eight steps of attainment: one: Aum; two: worldly fulfilment and the freedom of moksha; three: the joy of the truth of word and the health of body and mind; four: the attainment of Dharma, wealth, fulfilment of desire, and moksha; eight: the joy of all the four classes

and all the four stages of life (Brahmana, Kshatriya, Vaishya and **Shudra**, Brahmacharya, Grihastha, Vanaprastha and Sanyasa). Build homes for the people and advance in life.

शक्तिशाली कर्मक पुरुष, जे दुःखकेँ समाप्त करैत अछि आ आनन्द उत्पन्न करैत अछि, बहुमुखी उपलब्धिक, उज्ज्वल आ सम्मानजनक, स्थिर आ दृढ़ संकल्पित, ओकरा महान नव आगमनक प्रतीक्षा करबाक चाही। घरक लोक, उपलब्धिक एक, दू, तीन, चारि आ आठ चरणक वैदिक संस्कृति विकसित करैत छथि: एकः ओम; दुइः सांसारिक पूर्ति आ मोक्ष रूपी स्वतन्त्रता; तीनः वचनक सत्यक आनन्द आ शरीर आ मस्तिष्कक स्वास्थ्य; चारिः धर्मक प्राप्ति, धन, इच्छाक पूर्ति, आ मोक्ष; आठः जीवनक चारि वर्ग आ चारि चरणक आनन्द (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्र, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वनप्रस्थ आ सन्यास)। लोकक लेल घर बनाउ आ जीवन मे प्रगति करू।

CHAPTER- XVIII

48. (Brihaspati Devata, Shunah-shepa Rshi)

Rucham no dhehi brahmanesu rucham rajasu naskrudhi. Rucha vishyesu shudreshu mayi dhehi rucha rucham.

Brihaspati, lord of the universe, eminent teacher and master of vast knowledge, inspire our Brahma section of the community—scholars, scientists, teachers and researchers with brilliance and love. Infuse brilliance, love and justice into our Kshatrias, defence, administration and justice section of the community. Bless with light, love and generosity our Vaishyas, producers and distributors among the community. And bless our **Shudra**s, the ancillary services, with light, love and loyalty. Bless me with light and love toward us all.

बृहस्पति- ब्रह्माण्डक स्वामी, प्रख्यात शिक्षक आ विशाल ज्ञानक स्वामी- समुदायक ब्रह्म वर्ग- विद्वान, वैज्ञानिक, शिक्षक आ शोधकर्ता- केँ प्रतिभा आ प्रेम सँ प्रेरित करू। हमर क्षत्रिय-रक्षा, प्रशासन आ न्याय- समुदायक वर्गमे प्रतिभा, प्रेम आ न्यायक संचार करू। हमर वैश्य-समुदायक निर्माता आ वितरक- सभकेँ प्रकाश, प्रेम आ उदारतासँ आशीर्वाद दियौ। आ हमर सभक शूद्र -समुदायक सहायक सेवी- केँ प्रकाश, प्रेम आ निष्ठा सँ आशीर्वाद दियौ। हमरा सभ केँ प्रकाश आ प्रेम सँ आशीर्वाद दियौ।

CHAPTER- XXV

23. (Dyau etc. Devata, Prajapati Rshi)

Aditirdyauraditirantarikshamaditirmata sa pita sa putrah. Vishve deva aditih pancha jana aditirjatamaditirjanitvam.

In the essence: Light is indestructible; sky is indestructible; mother Prakriti (matter-energy-thought) is indestructible; Father, the Cosmic Spirit is indestructible; Son, the soul (jiva), is indestructible; all the divinities of nature and humanity are indestructible; five people, Brahmana, Kshatriya, Vaishya, **Shudra**, others, are indestructible; whatever is born is

indestructible; whatever will be born is indestructible. (All that was, is and shall be is indestructible in the essence.)

सारमे: प्रकाश अविनाशी अछि; आकाश अविनाशी अछि; माता प्रकृति (पदार्थ-ऊर्जा-विचार) अविनाशी अछि; पिता, ब्रह्मांडीय आत्मा अविनाशी अछि; पुत्र, आत्मा (जीव) अविनाशी अछि; प्रकृति आ मानवताक सभ देवत्व अविनाशी अछि; पाँच व्यक्ति, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आ आन अविनाशी अछि; जे किछु जन्मल अछि से अविनाशी अछि; जे किछु जन्मत से अविनाशी अछि। (जे किछु छल, अछि बा रहत/ आओत से सार मे अविनाशी अछि।)

CHAPTER- XXVI

2. (Ishvara Devata, Laugakshi Rshi)

Yathemam vacham kalyanimavadani janebhyah. Brahmarajanyabhyam Shudraya charyaya cha svaya charayaya cha. Priyo devanam dakshinayai daturiha bhuyasamayam me kamah samrudhyatamupa mado namatu.

Just as this blessed Word of the Veda I speak for the people, all without exception, Brahmana, Kshatriya, **Shudra**, Vaishya, master and servant, one's own and others, so do you too. May I be dear and favourite with the noble divinities and the generous people for the gift of the sacred speech. May this noble aim of mine be fulfilled here in this life. May the others too follow and come my way beyond this life.

जेना वेदक ई धन्य वचन हम बिना कोनो अपवादक, ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र, वैश्य, स्वामी आ सेवक, अपन आ अन्य लोकक लेल कहैत छी, तहिना अहाँ सेहो करैत छी। पवित्र भाषणक ऐ उपहारक लेल हम महान देवत्व आ उदार लोक सभक प्रिय आ मनभावन रही। हमर ई महान उद्देश्य ऐ जीवन मे पूर हुअय। आन सभ सेहो हमर मार्गक अनुसरण करैत बढ़ैत जाय आ से ऐ जीवनसँ आगाँ धरि बढ़य।

CHAPTER- XXX

5. (Parameshvara Devata, Narayana Rshi)

Brahmane brahmanam kshatraya rajanyam marudbhyo vaishyam tapase Shudram tamase taskaram narakaya virahanam papmane klibamakrayayaayogum kamaya punshchalumatikrustaya magadham.

Give us, we pray, the Brahmanas for education and research, culture and human values; the Kshatriyas for governance, defence and administration; the Vaishyas for economic development, and the **Shudra**s for assistance and labour in the ancillary services. Remove, we pray, the thief roaming in the dark, the murderer bent on lawlessness, the coward disposed to sin, the armed terrorist bent on destruction, the harlot out for pleasure of flesh, and the bastard fond of scandal.

Note: In mantras 5-22 in which various aspects of organised life are listed, there is repetition of ‘asuva’ and ‘parasuva’ from mantra 3, which means: ‘Give us, we pray, what is good’, and, ‘Remove, we pray, what is evil’. This is the prayer. Also, there are echoes of ‘havamahe’ from mantra 4, which means: ‘We invoke and develop’, and, ‘we challenge and fight out’. This is the call for action under the divine eye.

शिक्षा आ शोध, संस्कृति आ मानवीय मूल्यक लेल ब्राह्मण; शासन, रक्षा आ प्रशासनक लेल क्षत्रिय; आर्थिक विकासक लेल वैश्य; आ सहायक सेवामे सहायता आ श्रम लेल शूद्र हमरा दिअ से हम प्रार्थना करैत छी। हम प्रार्थना करैत छी जे अन्हारमे घुमैत चोर, अराजकता पर बिर्त खूनी, पाप पर बिर्त कायर, विनाश पर बिर्त सशस्त्र आतंकवादी, दैहिक सुख लेल बाहर गेल वेश्या, आ कलंकक शौकीन नाजायजकेँ हटा दियौ।

नोटः मंत्र 5-22 मे, जइमे संगठित जीवनक बिभिन्न पक्ष सूचीबद्ध अछि, मंत्र 3 सँ 'आशुवा' आ 'परशुवा' क पुनरावृत्ति होइत अछि, जकर अर्थः 'हमरा सभ केँ दिअ, हम प्रार्थना करैत छी, जे नीक अछि', आ, 'हटाउ, हम प्रार्थना करैत छी, जे अधलाह अछि'। ई प्रार्थना अछि। सङ्गहि, मंत्र 4 सँ 'हवामाहे' क प्रतिध्वनि अछि, जकर अर्थः 'हम आह्वान करैत छी आ आगू बढ़बै छी', आ, 'हम माँटि दइ छी आ लड़ै छी'। ई दिव्य दृष्टिक अन्तर्गत काज करबाक आह्वान अछि।

CHAPTER- XXX

22. (Rajeshvarau Devate, Narayana Rshi)

Athaitanastauau virupanalabhateitidirgham chatihrasvam chatisthulam chatikrusham chatishuklam chatikrushnam chatikulvam chatilomasham cha. Ashudra abrahmanaste prajapatyah. Magadhah punshchali kitavah kliboshudra abrahmanaste prajapatyah.

The good human being accepts and works with these eight classes of people of different forms and colours: too tall, too short, too fat, too thin, too white, too dark, too hairless, too hairy. Also they are neither Brahmanas nor **Shudra**s (nor the others). They too, all of them, are children of God, Prajapati. Even the bastard and the ‘despicable’, the wanton, the gambler, and the coward and the eunuch, neither **Shudra**s nor Brahmanas (nor the others), they too are children of God, Prajapati, father of all.

नीक लोक विभिन्न रूप आ रङ्गक ऐ आठ वर्गक लोकक संग स्वीकार करैत अछि आ काज करैत अछिः खूब लम्बा, बड्ड छोट, बड्ड मोट, खूब पातर, बड्ड गोर, बड्ड कारी, बहुत कम केशबला, खूब केशबला। ओ सभ ने ब्राह्मण छथि, नहिये शूद्र (आ नहिये आन कियो)। ओ सभ सेहो भगवान प्रजापतिक सन्तान छथि। एतऽ धरि जे नाजायज बा 'घृणित', ऊधमी, जुआरी, आ कायर आ नपुंसक, ने शूद्र, नहिये ब्राह्मण (नहिये आन कियो), ओ सभ सेहो भगवान प्रजापतिक सन्तान छथि, प्रजापति- सभक पिता।

CHAPTER- XXXI

11. (Purusha Devata, Narayana Rshi)

Brahmanosya mukhamashid bahu rajanyah krutah. Uru tadasya yadvaishyah padbhyam Shuudro ajayata.

The Brahmana, man of divine vision and Vedic Word, is the mouth of the Samrat Purusha, the human community. The Kshatriya, man of justice and polity, is created as the arms of defence. The Vaishya, who produces food and wealth for the society, is the thighs. And the man of sustenance and support with labour is the **Shudra** who bears the burden of the human family.

दिव्य दृष्टि आ वैदिक वचनक लोक ब्राह्मण, सम्राट पुरुष-मानव समुदाय-क मुख छथि। न्याय आ शिष्टताक लोक क्षत्रियकेँ रक्षाक हथियारक रूपमे बनाओल गेल अछि। वैश्य, जे समाजक लेल भोजन आ धन उत्पन्न करैत छथि, जांघ छथि। आ श्रमक सङ्ग निर्वाह आ सहारा देबऽबला व्यक्ति शूद्र छथि जे मानव परिवार सभकक भार वहन करैत छथि।

RIG VEDA (2 references)

Mandala 10/Sukta 90

Purusha Devata, Narayana Rshi

12. Brahmano sya mukhamasidbahu rajanyah kritah. Uru tadasya yadvaisyah padbhyam sudro ajayata.

The Brahmana, man of divine vision and the Vedic Word, is the mouth of the Samrat Purusha, the human community. Kshatriya, man of justice and polity, is created as the arms of defence. The Vaishya, who produces food and wealth for the society, is the thighs. And the man of sustenance and ancillary support with labour is the **Shudra** who bears the burden of the human family as the legs bear the burden of the body.

दिव्य दृष्टि आ वैदिक वचन बला ब्राह्मण, सम्राट पुरुष-मानव समुदाय- क मुख छथि। क्षत्रिय- न्याय आ राजनीतिक लोक- केँ रक्षाक हथियारक रूपमे बनाओल गेल अछि। वैश्य, जे समाजक लेल भोजन आ धन उत्पन्न करैत छथि, जांघ छथि। आ जीविकोपार्जन आ श्रमक सङ्ग सहायक व्यक्ति शूद्र छथि जे मानव परिवारक भार वहन करैत छथि जेना पैर शरीरक भार वहन करैत अछि।

Mandala 10/Sukta 124

Devata: Agni (1); Rshi: Agni, Varuna, Soma

1. *Imam no agna upa yajnamehi panchayamam trivritam saptatantum. Aso havyavaluta nah puroga jyogeva dirgham tama ashayishthah.*

Agni, yajnic light of life, come to this life yajna of ours: which has five divisions, i.e., Brahma-yajna, Deva-yajna, Pitr-yajna, Atithi-yajna, and Balivaishvadeva-yajna; conducted by five people, i.e, four socioeconomic classes of Brahmans, Kshatriyas, Vaishyas and **Shudra**s and others like

chance visitors from other groups there might be; which is threefold, i.e., paka yajna, haviryajna and somayajna; and which has seven extensions, i.e., Agnishtoma, Atyagnishtoma, Ukthya, Shodashi,Vajapeya, Atiratra and Aptoyami. You are our leader and pioneer, Agni, and you are the carrier of our yajna to the divinities as well as harbinger of the fruits of yajna to us. Pray come and be our all-time dispeller of the cavern of deep darkness from life. (Yajna is a creative process of development in life from the individual to the social, national, global and environmental level of life. The explanation above is related to the social level. Swami Brahmamuni explains the yajna at the individual level, and that is also suggested in Rgveda 10, 7, 6: 'Svayam yajasva', and yajurveda 4, 13: "Iyam te yajniya tanu", which means: Develop yourself by yajna according to the seasons of your growth, and remember your life in body, mind and soul is worthy of yajnic service for your personal development, your body being the first instrument of your wider yajna of life. This personal yajna is fivefold, for the elemental balance of earth, water, heat, air and ether; threefold for the balance of vata, pitta and kaf, and also for balanced growth of body, mind and soul; sevenfold for the growth of rasa, rakta, mansa, meda, asthi, majja and virya. Thus yajna is the process of growth beginning with the individual, accomplished at the cosmic level.)

अग्नि -जीवनक यज्ञक प्रकाश- हमर सभक ऐ जीवन-यज्ञमे आउ, जइमे पाँच विभाग छै, अर्थात, ब्रह्म-यज्ञ, देव-यज्ञ, पितृ-यज्ञ, अतिथि-यज्ञ, आ बलिवैश्वदेव-यज्ञ; पाँच लोक द्वारा संचालित, अर्थात, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्र क चारि सामाजिक-आर्थिक वर्ग आ पाँचम आन समूह कखनो काल आयल आगंतुक। आ से तीनटा छै- अर्थात, पाक यज्ञ, हविर्यज्ञ आ सोमयज्ञ; आ जकर सात विस्तार छै, अर्थात, अग्निष्टोम, अत्यग्निष्टोम, उक्त्या, षोडषी, वाजपेय, अतिरात्र आ अप्तोयमी। अग्नि, अहाँ हमरा सभक नेता आ अग्रगामी छी, आ अहाँ देवत्व लेल हमर यज्ञक वाहक छी आ सङ्गहि हमरा सभक लेल यज्ञक फलक अग्रदूत छी। प्रार्थना अछि जे आउ आ हमरा सभक जीवन तरहरि सन अन्हार सदाक लेल दूर करैबला बनू। (यज्ञ व्यक्तिगतसँ जीवनक सामाजिक, राष्ट्रीय, वैश्विक आ पर्यावरणीय स्तर धरि जीवनक विकासक एकटा रचनात्मक प्रक्रिया अछि। उपरोक्त व्याख्या सामाजिक स्तरसँ सम्बन्धित अछि। स्वामी ब्रह्ममुनी व्यक्तिगत स्तर पर यज्ञक व्याख्या करैत छथि, आ ई ऋग्वेद 10,7,6 मे सेहो सुझाओल गेल अछि: 'स्वयं यज्ञ'; आ यजुर्वेद 4,13: 'इयम ते यज्ञीय तनू', जकर अर्थ अछि- अपन विकासक ऋतुक अनुसार यज्ञ द्वारा अपना कैं विकसित करू, आ मोन राखू जे शरीर, मन आ आत्मा युक्त अहाँक जीवन यज्ञक सेवाक लेल अछि, आ तइसँ अहाँक व्यक्तिगत विकास हएत; अहाँक शरीर अहाँक जीवनक व्यापक यज्ञक पहिल साधन अछि। ई व्यक्तिगत यज्ञ पाँच प्रकारक अछि, पृथ्वी, जल, ऊष्मा, वायु आ आकाशक मौलिक संतुलनक लेल; तीन प्रकारक- वात, पित्त आ कफक संतुलनक लेल; आ शरीर, मन आ आत्माक संतुलित विकासक लेल सेहो; सात प्रकारक माने रस, रक्त, मानस, मेधा, अस्थि, मज्जा आ विर्यक विकासक लेल। ऐ तरहेँ यज्ञ व्यक्तिसँ शुरू होइत विकासक प्रक्रिया अछि, जे ब्रह्मांडीय स्तर पर सम्पन्न होइत अछि।)

आब आउ यूरोपक विद्वान लोकनि द्वारा वेदक गलत अनुवादक किछु उदाहरण देखू:-
EXAMPLES OF SOME MISTRANSLATIONS OF VEDAS BY WESTERN SCHOLARS

I

W.D. Whitney's translation of the Atharvaveda (7, 107, 1) edited and revised by K.L. Joshi, published by Parimal Publications, Delhi, 2004:

Namaskrutya dyavapruthivibhyamantarikshaya mrutyave.

Mekshamyurdhvastisthaan ma ma hinsishurishvarah.

"Having paid homage to heaven and earth, to the atmosphere, to Death, I will urinate standing erect; let not the Lords (Ishvara) harm me." I give below an English rendering of the same mantra translated by Pundit Satavalekara in Hindi:

"Having done homage to heaven and earth and to the middle regions and Death (Yama), I stand high and watch (the world of life). Let not my masters hurt me."

An English rendering of the same mantra translated by Pundit Jai Dev Sharma in Hindi is the following:

"Having done homage to heaven and earth (i.e. father and mother) and to the immanent God and Yama (all Dissolver), standing high and alert, I move forward in life. These masters of mine, pray, may not hurt me."

I would like to quote my own translation of the mantra now under print:

"Having done homage to heaven and earth, and to the middle regions, and having acknowledged the fact of death as inevitable counterpart of life under God's dispensation, now standing high, I watch the world and go forward with showers of the cloud. Let no powers of earthly nature hurt and violate me."

‘Showers of the cloud’ is a metaphor, as in Shelley’s poem ‘the Cloud’: “I bring fresh showers for the thirsting flowers”, which suggests a lovely rendering.

The problem here arises from the verb ‘mekshami’ from the root ‘mih’ which means ‘to shower’ (sechane). It depends on the translator’s sense and attitude to sacred writing how the message is received and communicated in an interfaith context with no strings attached (or unattached).

[Dr Tulsi Ram, 2013, Atharveda: English Translation; Page xxvi]

II

The idea that there was slavery in the Vedic Society originated with the Western Indologists with their intentional or careless translation of a Sanskrit word into “slave”. For example, in the Taittiriya Samhita (Krishna Yajurveda), [7.5.10] [kanda 7,prapathaka 5, verse 10], a part of translation by Keith reads “slave girls dance around the fire”. But in a footnote in the same page [pg., 628, Vol. 2] the author Keith says that the verse describes the dance of maidens. Suddenly the maidens have become “slave girls”. Both Paranjape and Avinash Bose point to the mistranslation of the word ‘yosha’ as courtesan by the indologist Pischel [Bose, Hymns from the Veda, p. 36].

[Veda Books,SRI AUROBINDO KAPALI SHASTRY INSTITUTE OF VEDIC CULTURE, page 240]

III

In 1795, H.T. Colebrooke, then a young scholar, wrote his maiden paper, “On the Duties of a Faithful Hindu Widow,” for the Asiatic Society (Asiatic Researches IV 1795: 205-15). He cited the hymn from the Rig Veda as sanctioning widow burning, which William Jones immediately contested (Canon 1993 I:lxx). Colebrooke translated the end of the hymn as “let them pass into fire, whose original element is water.” A quarter of a century later, the Orientalist, H.H. Wilson pointed out that the hymn had been distorted

(Wilson 1854: 201-14; Cassels 2010: 89). Wilson translated the verse as per the reading corroborated by Sayana, the authoritative medieval commentator on the Vedas, and demonstrated that it did not refer to widow burning (Rocher and Rocher 2012: 24-25).

[Meenakshi Jain,2016; Sati: Evangelicals, Baptist Missionaries; and the Changing Colonial Discourse, Page 5)

विदेह ३५८ म अंक १५ नवम्बर २०२२ (वर्ष १५ मास १७९ अंक ३५८)

(विदेह www.videha.co.in)

शरदिन्दु चौधरी विशेषांक

अनुक्रम

शरदिन्दु चौधरी विशेषांक

१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय (पृ. २-२)

२.१.प्रस्तुत विशेषांकक संदर्भमे **(पृ. ३-६)**

२.२.शरदिन्दु चौधरीक परिचय - (प्रस्तुति श्री जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल') **(पृ. ७-१२)**

२.३.शरदिन्दु चौधरी जी केर साक्षात्कार जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल' द्वारा **(पृ. १३-१८)**

२.४.कल्पना झा- मैथिली साहित्यक सेवक नहि, मैथिली भाषाक सेवकः शरदिन्दु चौधरी **(पृ. १९-२४)**

२.५.राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'- हमर ज्ञान-पिपाशाक स्रोत: शरदिन्दु चौधरी **(पृ. २५-२९)**

२.६.जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'- ओहिना नहि तमसाइत छथि शरदिन्दु चौधरी **(पृ. ३०-३४)**

२.७.विभा रानी- शरदिंदु भाईक गम्भीर सिद्धांतप्रियता! **(पृ. ३५-४१)**

२.८.डा. नारायणजी- विसंगतिक विरुद्ध प्रतिरोधक-स्वर **(पृ. ४२-४४)**

२.९.मुन्नी कामत- भाषाविद् श्री शरदिन्दु चौधरी **(पृ. ४५-४८)**

२.१०.गौरीनाथ- शरदिन्दु चौधरी हेबाक माने **(पृ. ४९-५३)**

२.११.जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'- कथ्य, तथ्य आ सत्यक चिन्तन **(पृ. ५४-६१)**

२.१२.अजित कुमार झा- 'समय-साल' कैँ अकानैत: शरदिन्दुजीक संपादन ओ संपादकीय **(पृ. ६२-६९)**

२.१३.अशोक- शरदिन्दु जी **(पृ. ७०-७४)**

२.१४.शिवशंकर श्रीनिवास- जेहने मधुर तेहने दृढ़ **(पृ. ७५-७९)**

२.१५.केदार कानन- हमर शरदू भैया **(पृ. ८०-८४)**

२.१६.आशीष अनचिन्हार- मैथिली साहित्यमे शरदिन्दु चौधरी केर योगदान **(पृ. ८५-९०)**

२.१७.गजेन्द्र ठाकुर- शरदिन्दु चौधरीक संस्मरण साहित्य [बात-बातपर बात (I-IV)] **(पृ. ९१-१०२)**

२.१८.गजेन्द्र ठाकुर- शरदिन्दु चौधरीक संस्मरणात्मक हास्य-व्यंग्य संग्रह- 'जँ हम जनितहुँ' **(पृ. १०३-११०)**

२.१९.गजेन्द्र ठाकुर- शरदिन्दु चौधरीक तीनटा व्यंग्य संग्रह- 'बड़ अजगुत देखल..', 'गोबरगणेश' आ 'करिया कक्काक कोरामिन' **(पृ. १११-११७)**

२.२०.लक्ष्मण झा सागर- खाँटी मैथिलीस्ट शरदू जी! **(पृ. ११८-१२४)**

२.२१.जगदानन्द झा 'मनु'- सत्य देखल **(पृ. १२५-१३०)**

२.२२.श्रीधरम- शरदिन्दु कुमार चौधरीक साहित्य : 'स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती' **(पृ. १३१-१४१)**

३. विदेह ३५९ म अंक ०१ दिसम्बर २०२२ (वर्ष १५ मास १८० अंक ३५९)- अंक ३५८ पर टिप्पणी (पृ. १४२-१४५)

गजेन्द्र ठाकुर विदेह ई पत्रिका **http://www.videha.co.in/**
ISSN 2229-547X क सम्पादक छथि आ आइ काल्हि दिल्लीमे रहै छथि।

१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

ई अंक शरदिन्दु चौधरी पर विशेषांक अछि। साहित्य अकादेमी, ललित कला अकादेमी आ संगीत नाटक-अकादेमीक सम्मान/ पुरस्कारसँ बेशी महत्वपूर्ण विदेहक जीवित रचनाकार/ कलाकर्मी पर विशेषांक भऽ गेल अछि, से उद्गार पाठक लोकनि सोशल मीडियापर व्यक्त केलन्हि अछि। सभ सहयोगी आ पाठकगणकेँ धन्यवाद।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१.प्रस्तुत विशेषांकक संदर्भमे

विदेह द्वारा 'जीबैत मुदा उपेक्षित' शृखंला केर अंतर्गत अगस्त 2022 कैँ विदेह "शरदिन्दु चौधरी" विशेषांक प्रकाशित करबाक सार्वजनिक घोषणा केलक आ प्रस्तुत अछि ई विशेषांक। एहि सूचनाकैँ एहि लिंकपर देखि सकैत छी-घोषणा।

एहि विशेषांकसँ पहिने विदेह 7 टा विशेषांक प्रकाशित कऽ चुकल अछि आ एहिठाम आब हम कहि सकैत छी जे ई एकटा चुनौतीपूर्ण काज छै। अनेक संकट केर सामना करए पड़ैत अछि हमरा लेख एकट्ठा करएमे। मुदा संगहि ईहो हम कहब जे संकटसँ बेसी हमरा लग समर्थन अछि। हँ, ई मानएमे हमरा कोनो दिक्कत नहि जे जतेक लेख केर उम्मेद केने रहैत छी हम ततेक नै आबैए, जतेक लोक लिखबाक लेल गछैत छथि से सभ अंत- अंत धरि आबि चुप्प भऽ जाइत छथि। आ एकर कारणो छै, किनको ई लागै छनि जे आनपर लिखब से हम अपने रचना किए ने लीखि लेब, किनको लग पोथिए नै रहै छनि, कियो विदेहक समावेशी रूपसँ दुखी छथि, तँ किनको मित्रकैँ विदेहसँ दिक्कत छनि तँइ ओ नहि देता। एकरो हम संकटे बुझै छियै जे सभ फेसबुकपर लंबा-लंबा लेख वा कमेंट टाइप कऽ लै छथि सेहो सभ विदेह लेल हाथसँ लिखल पठाबैत छथि। जे सभ कहियो फेसबुकपर टाइप कऽ लीखै छथि तिनकर आलेख हम सभ टाइप करिते छी। खएर पहिने कहलहुँ जे संकटसँ बेसी समर्थन अछि तँइ आइ पहिलसँ लऽ कऽ आठम विशेषांक धरि पहुँचलहुँ हम। 2015 सँ लऽ कऽ 2022 धरि 8 टा विशेषांक प्रकाशित भेल मने बर्खमे एकटा। निश्चिते समर्थन बेसी भेटल हमरा। जखन कि विदेहक ई आठो विशेषांक केर अलावे आनो विषयपर विशेषांक प्रकाशित भेल अछि। एकर अतिरिक्त ईहो बात संतोषदायक अछि जे विदेहक हरेक विशेषांक

अभिनंदनग्रंथ हेबासँ बाँचि गेल अछि। मुख्यधारा जकाँ विदेहकेँ अभिनंदनग्रंथ नहि चाही। अभिनंदनग्रंथ अहू दुआरे नै चाही जे ओहिसँ लेखक वा जिनकापर निकालल गेल छनि तिनकामे सुधारक गुंजाइश खत्म भऽ जाइत छै। तँइ विदेहक विशेषांकमे आलोचना-प्रसंशा सभ भेटत।

शरदिन्दु चौधरी मैथिलीक मुख्यधारामे रहितहुँ उपेक्षित छथि आ तकर कारण जनबाक लेल पाठककेँ हुनकर पोथी पढ़ए पड़तिन हुनकर आचरण ओ लेखन केर संबंध देखए पड़तनि। मैथिलीमे किछुए लेखक छथि जिनकर लेखन ओ आचरण एकसमान छनि जाहिमेसँ शरदिन्दुजी एकटा सेहो छथि। एहन नै छै जे शरदिन्दु जीपर लिखल नै गेलै मुदा ओ सभ एकट्ठा नै भऽ सकल छै तँइ ओकर प्रभाव हेड़ा गेल छै। एहि संदर्भमे हम कहि सकै छी जे विदेहक ई प्रस्तुत विशेषांक एहन पहिल प्रयास अछि जाहिमे ई बुझबाक प्रयास कएल अछि जे शरदिन्दु जीक रचना केहन छनि। ई अलग बात जे हम सभ कतेक सफल वा असफल भेलहुँ से पाठक कहता। एहि विशेषांक केर शुरूआत विदेहक आने विशेषांक जकाँ अछि। संगे-संग ई क्रम ने तँ उम्रक वरिष्ठता केर पालन करैए आ ने रचनाक गुणवत्ताक। हँ, एतेक धेआन जरूर राखल गेल छै जे पाठकक रसभंग नहि होइन आ से विश्वास अछि जे रसभंग नै हेतनि।

पाठक जखन एहि विशेषांककेँ पढ़ताह तँ हुनका वर्तनी ओ मानकताक अभाव लगतनि। वर्तनीक गलती जे थिक से सोझे-सोझ हमर सभहक गलती थिक जे हम सभ संशोधन नै कऽ सकलहुँ मुदा ई धेआन रखबाक बात जे विदेह शुरुएसँ हरेक वर्तनी बला लेखककेँ स्वीकार करैत एलैए। तँइ मानकता अभाव स्वाभाविक। एकर बादो बहुत वर्तनीक गलती रहल गेल अछि जे कि हमरे सभहक गलती अछि। मैथिलीमे किछुए एहन पत्रिका अछि जकर वर्तनी एकरंगक रहैत अछि आ ई हुनक खूबी छनि मुदा जखन ओहो सभ कोनो विशेषांक निकालै छथि तखन वर्तनी तँ ठीक रहैत छनि मुदा सामग्री

अधिकांशतः बसिये रहैत छनि। ऐतिहासिकताक दृष्टिसँ कोनो पुरान सामग्रीक उपयोग वर्जित नै छै मुदा सोचियौ जे 72-80 पन्नाक कोनो प्रिंट पत्रिका होइत छै ताहिमे लगभग आधा सामग्री साभार रहैत छनि, तेसर भागमे लेखक केर किछु रचना रहैत छनि आ चारिम भागमे किछु नव सामग्री रहैत छनि। मुदा हमरा लोकनि नव सामग्रीपर बेसी जोर दैत छियै। एकर मतलब ई नहि जे वर्तनीमे गलती होइत रहै। हमर कहबाक मतलब ई जे संपादक-संयोजककेँ कोनो ने कोनो स्तरपर समझौता करहे पड़ैत छै से चाहे वर्तनीक हो कि, मुद्राक हो कि विचारधारक हो कि सामग्रीक हो। हमरा लोकनि वर्तनीक स्तरपर समझौता कऽ रहल छी मुदा कारण सहित। प्रिंट पत्रिका एक बेर प्रकाशित भऽ गेलाक बाद दोबारा नै भऽ सकैए (भऽ तँ सकैए मुदा फेर पाइ लागि जेतै) तँइ ओकर वर्तनी यथाशक्ति सही रहैत छै। इंटरनेटपर सुविधा छै जे बीचमे (इंटरनेटसँ प्रिंट हेबाक अवधि) ओकरा सही कऽ सकैत छी मुदा सामग्रिए बसिया रहत तँ सही वर्तनी रहितो नव अध्याय नै खुजि सकत तँइ हमरा लोकनि वर्तनी बला मुद्दापर समझौता केलहुँ। हमरा लोकनि कएलनि, कयलनि ओ केलनि तीनू शुद्ध मानैत छी, एतेक शुद्ध मानैत छी एकै रचनामे तीनू रूप भेटि जाएत। आन शब्दक लेल एहने बूझू।

उम्मेद अछि जे पाठक विदेहक आने विशेषांक जकाँ एकरा पढ़ताह आ पढ़ि एकर नीक-बेजाएपर अपन सुझाव देताह। विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांक केर पोथी रूप "स्वतंत्रचेता" केर नामसँ प्रकाशित भेल उम्मेद जे भविष्यमे शरदिन्दुपर केंद्रित एहि विशेषांक केर पोथी रूप सेहो आएत।

विदेह द्वारा 'जीबैत मुदा उपेक्षित' शृखंलामे प्रकाशित भेल आन विशेषांक सभहक लिस्ट एना अछि)एहिठाम जे अंकक लिस्ट देल गेल अछि ताहि अंकपर क्लिक करबै तँ ओ अंक खुजि जाएत-(

1) अरविन्द ठाकुर विशेषांक 189 म अंक 1 नवम्बर 2015 (ई विशेषांक 2020 मे पोथी रूपमे सेहो आएल अछि)
2) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक 191 म अंक 1 दिसम्बर 2015
3) रामलोचन ठाकुर विशेषांक 319म अंक
4) राजनन्दन लाल दास विशेषांक 333म अंक
5) रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक 15 जून 2022
6) केदारनाथ चौधरी विशेषांक 15 जून 2022 अंक 352
7) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' विशेषांक 1 नवम्बर 2022 अंक 357

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.२.श्री शरदिंदु चौधरी क परिचय- (प्रस्तुति श्री जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल')

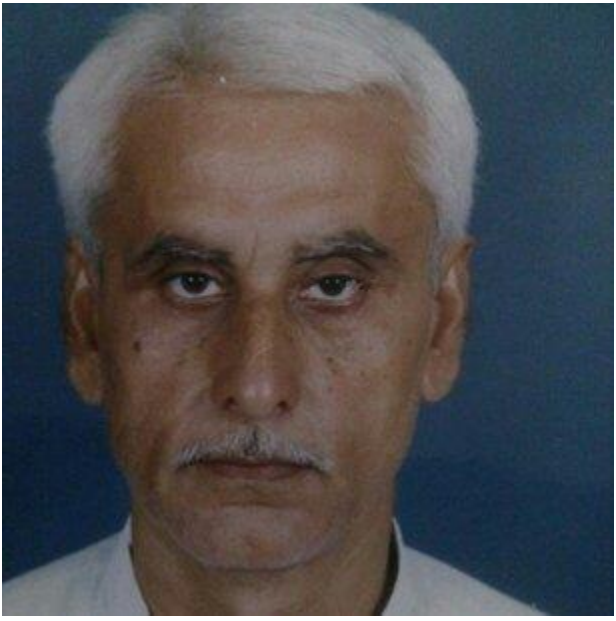

नाम-शरदिंदु चौधरी

माता : स्व.मोती देवी

पिता : पं.सुधांशु शेखर चौधरी

स्थान : मिश्रटोला, दरभंगा, बिहार

जन्म तिथि : 7-10-1956

शिक्षा : एमए (राजनीति शास्त्र) पटना विश्वविद्यालय, एलएलबी (मगध

विश्वविद्यालय, गया)

वृत्ति- पत्रकारिता :

1981-84-मिथिला मिहिर,सप्ताहिक

1984-86-मिथिला मिहिर, दैनिक

1987-89-मिथिला मिहिर,मासिक

1995-2002-आर्यावर्त्त, हिन्दी दैनिक,(फीचर संपादक)

2000-2014-समय-साल, मैथिली द्वैमासिक

पूर्वोत्तर मैथिल, गुआहाटी, 2015-16

मैथिली-हिन्दीमे लेखन

व्यस्थापक,संचालक ----शेखर प्रकाशन,पटना (मुद्रक,प्रकाशक एवं पोथी विक्रय केन्द्र)

शरदिन्दुजी चौधरीक परिवारक अन्य सदस्य :

पत्नी : श्रीमती चित्रा चौधरी

पुत्री :

1.स्वाति शेखर (पत्नी श्री सुशीम मिश्र)

२.प्रीति शेखर (पत्नी विवेक आनन्द ठाकुर)

३.सुश्री दीप्ति शेखर

पुत्र : राजाशेखर

प्रकाशित कृति मौलिक: (एखन धरि शरदिन्दुजीक जतेक मौलिक पोथी प्रकाशित भेलनि से विदेह पोथी डाउनलोडपर राखल गेल अछि आ एहिठाम जे पोथीक लिस्ट देल गेल अछि ताहिमे पोथीक नामपर क्लिक करबै तँ ओ पोथी खुजि जाएत)

जँ हम जनितहुँ (२००२)

बड़ अजगुत देखल (२००५)

गोबरगणेश (२०११)

करिया कक्काक कोरामिन (२०१६)

बात-बातपर बात खण्ड-१ (२०१९)

मर्मान्तक-शब्दानुभूति (बात-बातपर बात खण्ड-२) (२०२०)

हमर अभाग: हुनक नहि दोष (बात-बातपर बात-३) (२०२१)

साक्षात् (बात-बातपर बात-४) (२०२१)

प्रकाशित कृति सम्पादन:

मैथिली पत्रकारिता-दशा ओ दिशा

साक्षात्कारक दर्पणमे-सुधांशु शेखर चौधरी

विद्यापति गीतिका (दू भाग)

मैथिली गद्य गौरव (दू भाग)

अभिमत (हिन्दी)

बीससँ बेसी स्मारिकाक सम्पादन, जाहिमे चेतना समितिक स्मारिकाक 9 बेर, भंगिमाक 3 बेर, अरिपनक 2-3 बेर।

अन्य प्रकाशन-प्रसारण: आकाशवाणी आ दूरदर्शन,पटनासँ दर्जनो वार्ता प्रसारित, मैथिली तथा हिन्दी पत्र - पत्रिका सभमे सयसँ बेसी रचना प्रकाशित आर्यावर्त, हिन्दुस्तान,प्रदीप,नव भारत टाइम्स आदि दैनिक समाचार पत्रमे सम्पादकीय पृष्ठपर साठिटासँ बेसी राजनीतिक आलेख प्रकाशित।

पत्रिका सभमे व्यंग्य लेखन: मिथिला मिहिर, देश-कोस, अंतिका, घर-बाहर, समय-साल आदिमे।

शेखर-सम्मानक संचालन: साहित्यकार आ सम्पादक पिता पं।सुधांशु शेखर चौधरीक स्मृतिमे साहित्यसँ इतर क्षेत्रमे उल्लेखनीय योगदान हेतु उपयुक्त व्यक्तिकें पुरस्कारक रूपमे एगारह हजार टाका,शाल आ प्रशस्ति पत्र देल जाइत छनि। वर्ष 2004सँ 2008 धरि आ 2019 तथा 2022 मे निम्नलिखित व्यक्ति सभकें पुरस्कार देल गेल छनि: श्री पंचानन मिश्र, नरेन्द्र झा, राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर', विद्यानाथ झा, रमण कुमार झा और स्नेहा झाकें क्रमशः अनुसंधान एवं ज्ञानवर्धक गैर-साहित्यिक आलेख हेतु, मिथिलाक आर्थिक स्थिति आ सुधारपर आलेख हेतु, पत्रकारिता हेतु, मिथिलाक जैविक सम्पदा माछ,मखान,पान आदिक प्रोसेसिंग आदि विषयपर सैकड़ो आलेख हेतु, मैथिलीक विद्यार्थीकें प्रतियोगी परीक्षाक तैयारी हेतु उपयुक्त पोथीक लेखन हेतु आ टीवी पत्रकारितामे प्रशंसनीय

विश्लेष्णात्मक प्रस्तुतिकरण हेतु देल गेलनि अछि।

विशेष: बी पी एस सी और यू पी एस सीक प्रतियोगिता परीक्षाक तैयारीमे प्रतियोगी सभकें मैथिली विषयक लेल समुचित मार्गदर्शन आ पोथी उपलब्ध करबैत छथि।

एहि फोटोमे वामा कातसँ (श्रीमती चित्रा चौधरी, श्री शरदिन्दु चौधरी, प्रीति शेखर, विवेक आनंद ठाकुर ओ श्री जगदीश चंद्र ठाकुर अनिल)

एहिमे बामसँ दहिन छथि सुशीम मिश्र (आत्मज सुकान्त सोम आत्मज यात्रीजी), दीप्ति शेखर(आत्मजा शरदिन्दु चौधरी), शरदिन्दु चौधरी,प्रीति शेखर (आत्मजा शरदिन्दु चौधरी),विवेक आनन्द (आत्मज जगदीश चन्द्र ठाकुर)राजा शेखर(आत्मज शरदिन्दु चौधरी),श्रीमती चित्रा चौधरी(पत्नी शरदिन्दु चौधरी)आ स्वाती शेखर(पत्नी सुशीम मिश्र)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.३.शरदिन्दु चौधरी जी केर साक्षात्कार जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल' द्वारा

मैथिली आ मिथिलाक लेल निर्भीक, स्वाभिमानी, जागरूक, ज्ञानी आ दृष्टि-संपन्न पत्रकार चाही - शरदिन्दु चौधरी

जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल' : भाषा आन्दोलन एवं राज्य आन्दोलन केर दिशा की छै?

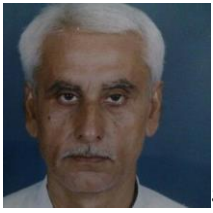

शरदिन्दु चौधरी : माटिपर काज कहाँ भ' रहल अछि ! काज छै, गाम-गाममे मैथिलीक प्रति लोककें जागरूक बनेबाक,मैथिली पढ़बाक आ पढयबाक लेल उचित व्यवस्था करब, पाठ्य पुस्तकक प्रकाशन आ लोक लग ओकर उपलब्धता सुनिश्चित करब त लोक दिल्ली जाक' फोटो खिचयबामे लागि जाइत अछि, आन्दोलनक नामपर अपनाकें प्रदर्शित करबामे लागि जाइत अछि। जन सामान्यसँ कोनो सरोकार नहि,ए सीमे बैसिक' सर्वहारा आ जन सामान्यक बात करैत लोक अपन व्यवसाय चलबैत

अछि। मिथिलामे पान दोकानबला, चाह दोकानबलासभ मैथिलीमे नहि गप करैत अछि, कतहु साइन बोर्ड मैथिलीमे नहि अछि, के देखतै?

अधिकांश मैथिल मैथिली भाषाक प्रयोग छोड़ि चुकल छथि, ने पढैत छथि,ने लिखैत छथि मात्र भाषण दैत छथि- हुनक परिवारमे देखू, हुनक साहचर्यमे रहिक' देखू मैथिल समाजकें मार्गदर्शन करबाक लेल मैथिली पत्रकारिताकें समृद्ध होयब आवश्यक अछि। मैथिलकें, मिथिलाकें आ मैथिलीकें अपन अस्मिताक रक्षा करैत अपन भूभागकें सुसंपन्न बनयबाक लेल पत्रकारिताक धारकें, स्वरकें तेज करहि पड़तैक आ ताहि लेल निर्भीक,स्वाभिमानी, जागरूक,ग्यानी आ दृष्टि-संपन्न पत्रकार चाही, पत्रकारिता समाजकें प्रभावित करयबला सशक्त माध्यम अछि, पत्रकारिताक काज होइछ समाजकें साकांक्ष राखब आ नीक बाटपर ल' जयबामे मार्गदर्शन करब, त्याज्य अथवा खराब काजक निन्दा करब आ नीक काज करबाक लेल प्रोत्साहित करब, समाजमे पसरल ईर्ष्या,द्वेष,साप्रदायिकता,भेद-भाव,जातीयता आदिक चातुर्यपूर्ण ढंगसँ विरोध करैत समाजमे सौहार्द बनौने रहब, शिक्षा, स्वास्थ्य आ समाजोपयोगी सभ सुविधा बहाल रहय ताहि हेतु तथा जनोपयोगी विषयक संचालन,देख-रेख ठीकसँ भ' रहल अछि कि नहि ताहिपर नजरि रखैत ओहि विषयक प्रति जनमानसकें आकृष्ट करब। मैथिलीमे सशक्त दसोटा पत्रकार तैयार होथि त मैथिली आ मिथिलाक कल्याण भ' सकैत अछि

जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल' : मैथिलीमे पुरस्कारक राजनीतिपर अपनेक कि कहब अछि?

शरदिन्दु चौधरी : राजनीतिए पुरस्कारक माध्यम बनि गेल अछि। पोथीपर पुरस्कार नहि देल जाइत अछि। जिनकर पोथी नीक छनि, हुनको रानीतिएक मजबूरीसँ पुरस्कार भेटैत छनि। पहिने तय भ' जाइ छै जे पुरस्कार किनका देबाक अछि, शेष प्रक्रियाक औपचारिकता मात्र होइत अछि। एकटा पैघ विद्वान सम्पादकीयमे लिखैत छथि जे मैथिलीक सभसँ पैघ पुरस्कार कीनल जाइत अछि, अगिला बेर हुनका पुरस्कार द' देल जाइत छनि, ओ खुशीसँ ल' लैत छथि आ चुप भ' जाइत छथि

जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल' : की पुरस्कार प्रदान करब अथवा स्वीकार करब अपराध थिक?

शरदिन्दु चौधरी : हमर अभिप्राय अछि पोथीपर पुरस्कारक निर्णय हो, व्यक्तिपर नहि, चयन प्रक्रिया स्वस्थ हो से लोककें लगबाक चाही,जूरीमे उपयुक्त लोक रहथि आ हुनकापर कोनो दबाब नहि होनि।

रचनाकर्मक उत्कृष्टता सुनिश्चित करबाक बदला साहित्यकार लोकनि पुरस्कार लुझबाक लेल गोल-गोलैसीमे लागि जाइत छथि आ उपकृत करबाक लेल पुरस्कार देल जाइत अछि,से अनुचित अछि।

संस्था सभ सेहो एहि खेलमे शामिल भ' गेल अछि, 'अहाँ हमरा अपन संस्थामे सम्मानित करू, हम अहाँकें अपना संस्थामे सम्मानित करब' यैह खेल चलि रहल अछि, ई उचित नहि अछि।

जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल' : मैथिलीमे वर्तमान व्यंग्य कोम्हर जा रहल अछि?

शरदिन्दु चौधरी : व्यंग्य त आबे लिखा रहल अछि, पहिने त व्यंग्यक नामपर एकटा ख़ास वर्गक खिधांसमात्र लिखाइत छल। एमहर सक्रियता कम भेल अछि।बटुक भाइ नहि रहलाह,ओहो किछु सालसँ सक्रिय नहि छलाह, मन्त्रेश्वर बाबू, वैद्यनाथ 'विमल', वीरेंद्र नारायण झा आ हमरो सक्रियता कम भेल अछि एमहर नवकृष्ण ऐहिक, राज कुमार मिश्र छथि, हिनका लोकनिसँ बेसी आशा कयल जा सकैत अछि

जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल' : मैथिलीमे अकादमीए नै, संस्था,पत्रिका सभपर सेहो बारि देबाक राजनीति छै, एहिपर अपनेक की कहब अछि?

शरदिन्दु चौधरी : सभ ठाम 'ग्रुप' बनि गेल छै। मैथिली आ मिथिलाक कल्याण लक्ष्य रहतै तखने अनियमितता दूर भ' सकैत अछि, अहू लेल सक्षम पत्रकारिताक आवश्यकता अछि।

जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल' : मैथिलीमे प्रकाशनक स्थितिपर अपनेक की विचार अछि?

शरदिन्दु चौधरी : प्रकाशन त बहुत भ' रहल अछि,किन्तु सार्थक प्रकाशन बीस प्रतिशत मात्र अछि। भाषाक विकास लेल विद्यार्थी आ मैथिली पाठ्यक्रमक अनुरूप पोथी छापल जयबाक चाही। मैथिली पाथ्यक्रमक पोथी विद्यार्थी वर्गकें उपलब्ध नहि भ' रहल छनि। साहित्यकार आ प्रकाशक दुनूक दायित्व छनि जे पाठकक संख्या निरंतर बढय, से सोचथि। लेखनक क्षेत्रमे अयबाक लेल सभसँ पहिल शर्त अछि भाषाक ज्ञान आ शब्द सामर्थ्य, शुद्ध आ प्रांजल भाषा त लेखनक लेल आवश्यक अछिये। मैथिलीक दुर्भाग्य अछि जे जिनका शब्दक ज्ञान नहि छनि,सेहो महान साहित्यकारक कोटिमे

आबिक' बैसि जाइत छथि आ हुनक चारण भ' क' ज्ञानी लोक ओत' उपस्थित रहैत छथि। एकटा लेखक जखन गुट बना सकैत छथि, गुट बदलि सकैत छथि, पाइ खर्च क' क', पैरवी क'क' पुरस्कार-सम्मान पाबि सकैत छथि त कनेक मेहनति क'क' अपन शब्दकें सम्मान नहि द' सकैत छथि? शब्द सामर्थ्यक धनीक साहित्यकारक संख्या आंगुरपर गन'बला अछि तखन एतेक रास प्रकाशन कोन काजक?

जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल' : शेखर प्रकाशन की सभ केलक आ वर्तमानमे की सभ क' रहल अछि?

शरदिन्दु चौधरी : शेखर प्रकाशन प्रकाशक आ मुद्रक दुनू रूपमे काज करैत आयल अछि, 52 टा महत्वपूर्ण पोथी अपना दमपर छपलक, आधा-आधी खर्चपर लगभग तीन दर्जन पोथी छपने अछि।

एकर महत्व भाषा संस्थान,मैसूर,साहित्य अकादमी,दिल्ली आ मैथिली अकादमी, पटना जनैत अछि। प्रतियोगी परीक्षा सभमे मैथिली विषयक संग सफल भेनिहार विद्यार्थी लोकनि जनैत छथि।

साहित्यसँ इतर क्षेत्रमे उल्लेखनीय योगदान हेतु उपयुक्त व्यक्तिकें पुरस्कारक रूपमे एगारह हजार टाका,शाल आ प्रशस्ति पत्र देल जाइत छनि। वर्ष 2004सँ 2008 धरि आ 2019 तथा 2022 मे अनुसंधान एवं ज्ञानवर्धक गैर-साहित्यिक आलेख हेतु, मिथिलाक आर्थिक स्थिति आ सुधारपर आलेख हेतु,

पत्रकारिता हेतु, मिथिलाक जैविक सम्पदा माछ,मखान,पान आदिक प्रोसेसिंग आदि विषयपर सैकड़ो आलेख हेतु, मैथिलीक विद्यार्थीकें प्रतियोगी परीक्षाक तैयारी हेतु उपयुक्त पोथीक लेखन हेतु आ टीवी पत्रकारितामे

प्रशंसनीय विश्लेष्णात्मक प्रस्तुतिकरण हेतु क्रमशः श्री पंचानन मिश्र, नरेन्द्र झा,राम भरोस कापड़ि'भ्रमर',विद्यानाथ झा,रमण कुमार झा और स्नेहा झाकें ई पुरस्कार देल गेलनि अछि।

जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल' : अपनेक घरमे मैथिलीक की स्थिति अछि?

शरदिन्दु चौधरी : हमर सभ धिया-पुता मैथिली बजैत अछि, मैथिली विषय राखि क्यो पढैत से पढ़ाइए ठीकसँ नहि होइत छलै।

जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल' : राज्य सरकार द्वारा पत्रकार लोकनि लेल जे पेंशन योजना स्वीकृत भेलै तकर लाभ अपनेकें किए नहि प्राप्त भेल?

शरदिन्दु चौधरी : हम जखन बुझलिऐ आ आवेदन प्रस्तुत करितहुँ त कहलक समय समाप्त भ' गेलै।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.४.कल्पना झा- मैथिली साहित्यक सेवक नहि, मैथिली भाषाक सेवकः शरदिन्दु चौधरी

कल्पना झा

मैथिली साहित्यक सेवक नहि, मैथिली भाषाक सेवकः शरदिन्दु चौधरी

एही बर्ख (२०२२)१६ सँ १९ अप्रैल धरि, तृतीय "चेतना रंग उत्सव"क आयोजन चेतना समिति पटना द्वारा विद्यापति भवनमे कएल गेल छलए,जे सुधांशु शेखर चौधरी जीकेँ समर्पित छलनि। एहि आयोजनक प्रचार-प्रसार किछु साहित्यिक व्हाट्सएप समूह सभमे देखलहुँ,त' हमरो मोन लोभाएल। सुधांशु शेखर जी द्वारा रचित नाटक सभक मंचन सेहो होएबाक घोषणा छलैक। एही "रंग उत्सव"मे हमरा पहिल बेर शरदिन्दु सरकेँ दर्शन भेल। फेसबुक पर मित्र-सूचीमे छलाह,शेखर प्रकाशनमे कोनो पर्टिकुलर पोथीक उपलब्धता अछि वा नहि,ताहि संदर्भमे गप्प सेहो भेल छलए मुदा दर्शन नहि भेल छलए।

ओहि रंग उत्सव आ तकरा उपरान्त "उपमान" पत्रिकाक विमोचनक अवसर पर,आ फेर एक-दू बेर विद्यापति भवनमे दर्शन भेल,शरदिन्दु सरकेँ। जतबा

काल देखलियनि,सुनलियनि,एकटा बात गौर केलहुँ हम,जे शरदिन्दु सर बाजैत कम छथि,सुनैत बेसी छथि। सोझाँ बैसल लोकक आ वस्तु-स्थितिक ऑब्जर्वेशन करैत रहैत छथि आ सभ किछु जेना मोन-मस्तिष्कमे स्टोर करैत जाइत छथि। एकदम साधारण पहिरन-ओढ़न। कोनो तरहक दिखावा नहि,ने ब्रांडेड कपड़ा-जुत्ताक,ने अपन ज्ञान-बुद्धिक। जखन कि एहि कलयुगमे जतबा रहैत छै,ताहि सँ बेसीक दिखावा करबाक चलन छै,चाहे ओ धन-वित्त होअए कि ज्ञान-बुद्धि।

एमहर जखन शरदिन्दु चौधरी जी पर विशेषांक निकालबाक घोषणा सोझाँ आएल(फेसबुक पर),त' हुनकर रचना सभ ताकि ताकि पढ़ब शुरु केलहुँ। एहिलेल 'विदेह' टीम साधुवादक पात्र छथि,जे उपेक्षित रचनाकार सभपर विशेषांक निकालबाक पहल केलनि अछि।एहि सँ लोक ताकि ताकि क' ओहन रचनाकार लोकनिक रचना सभ पढ़ए लागैत अछि। हुनकर रचना पर किछु लिखथि वा नहि लिखथि,से बादक बात।

हँ,त' कहि रहल छलहुँ जे शरदिन्दु जीक सभटा रचना,बात- बात पर बात(१-४),बड़ अजगुत देखल,जँ हम जनितहुँ,करिया कक्काक कोरामिन,गोबरगणेश, बेरा-बेरी पढ़ि गेलहुँ। हुनकर रचना सभ पढ़लाक उपरान्त हुनकर ओहने व्यक्तित्वक झलक भेटल,जेहन हुनकर दर्शन क' मोनमे धारणा बनल छलए। शरदिन्दु जीक अधिकांश रचना चूँकि संस्मरणात्मक छनि,तैँ सत्य पर आधारित छनि आ हुनकर व्यक्तित्वक परिचय सेहो दैत छनि।

यथार्थ लिखब माने सत्य लिखब,बड़ कठिन काज छै,कारण सत्य अधिक काल कटुए होइत छै।आ तैँ ई काज बहुत कम लोक करैत छथि। शरदिन्दु सर अपन संस्मरणात्मक पोथी "बात-बात पर बात" चारू भागमे आ हास्य व्यंग्य "जँ हम जनितहुँ"मे समाजसँ जुड़ल(विशेष रूपसँ साहित्यिक जगतक)

सत्यकेँ त' उजागर कएनहि छथि,कोनो व्यक्ति विशेषक नामक संग हुनकर कुकृत्यकेँ देखार करबामे सेहो संकोच नहि कएलनि अछि। आ एतबे नहि,अपना विषयमे सेहो सभटा स्पष्ट कहि देलनि अछि, "साक्षात्" शीर्षक पोथीमे।अपन दिनचर्या पर्यन्त बेझिझक पाठकक सोझाँ कहि देलनि अछि, घरक साफ-सफाइक बात होअए, कि गंदा बरतन सिंकमे राखि साफ करबाक बात,किछु सार्वजनिक करैत संकोच नहि कएलनि अछि।एहन स्पष्टवादी लोक भेटब कठिने नहि असंभव बात छै एखनुक दिखावायुक्त समयमे।

शरदिन्दु जी रचित सभटा पोथी पढ़लाक उपरान्त सोचमे पड़ि गेलहुँ, जे कोन पोथी पर समीक्षात्मक आलेख लिखल जाए। यथार्थ लिखैत बहुत रास रहस्योद्घाटन सेहो कएल गेल अछि पोथी सभमे,जाहि पर बहुत किछु लिखल जा सकैछ।मैथिली संस्था सभक पोल खोलल गेल अछि,महान साहित्यकार लोकनिक किरदानीक चर्चा भेल अछि।एतेक रास मुद्दा देखि/पढ़ि मोन उलबुका सन गेल।अंततः हम निर्णय नहिए क' सकलहुँ आ शरदिन्दु सरकेँ जतबा बुझि सकलियनि,हुनक लेखनीक माध्यमसँ आ हुनका साक्षात् देखि/सुनि,ताही आधार पर अपन मोनमे आएल भावक अभिव्यक्ति क' रहल छी, संक्षेपमे।

"बात-बात पर बात-१"मे मैथिली-भाषा,साहित्य आ प्रकाशनसँ अपन बात शुरु करैत अपन मान्यता स्पष्ट रूपेँ रखलनि आछि,जे-"मैथिले मैथिलीक बाधक अछि-दुनू स्तरपर,भाषाक स्तरपर आ साहित्यक स्तरपर।"आ हमर मान्यता अछि जे हिनक एहि मान्यतासँ बहुत लोक सहमति रखताह,हम त' पूर्णतः सहमति राखैत छी।

तहिना "मूर्खक लाठी माझ कपार"मे मैथिली साहित्यक दुर्भाग्यक समीचीन विवरण देलनि अछि आ एकर कारण ओ निवारण पर सेहो विचार केलनि

अछि। अक्षरशः सत्य लिखलनि अछि-"हमर मैथिलीक दुर्भाग्य अछि जे जकरा शब्दक ज्ञान नहि छैक सेहो सभ महान साहित्यकारक कोटिमे आबिक' बैसि जाइत छथि आ हुनक चारण भ' क' ज्ञानी लोक सभ ओत' उपस्थित रहैत छथि।"

मैथिली साहित्यक एही दुर्गतिक कारणेँ प्रायः हुनक भाव किछु एना बहार भेल छनि-"हमरा एकोरत्ती कचोट नहि अछि जे हम मैथिली साहित्यक सेवक नहि छी। हमरा गर्व अछि जे हम मैथिली भाषाक सेवक छी।"

राजनीतिमे जतेक राजनीति नहि होइत छै,ततेक राजनीति मैथिली साहित्यिक जगतमे व्याप्त छै,पुरस्कार लोलुपतामे कोन तरहक खेल सभ होइत छै,से सभ बहुत लोक देखैत-सुनैत-बुझैत गबदी मारने रहैए। मुदा शरदिन्दु सर ई सभ देखि/सुनि चुप नहि रहि सकलाह। किंवा ई सभ देखि/सुनि आहत भेल हेताह,तखनहि एना लिखबालेल विवश भेल हेताह। असहनीय स्थिति भ' जाइत छै,तखन मोनक बात स्वतः बहरा जाइत छै। बुद्धिजीवी लोकक संकीर्ण मानसिकताकेँ देखार करैत लिखैत छथि-"सौतिया डाहो सँ बेसी एक-दोसराकेँ देखबाक प्रवृत्ति, अपन रचनाकेँ मीठ,अनकर रचनाकेँ तीत कहबाक रीति आ गोधियाँवाद,संबंधवाद,गुटवाद पर साहित्यकेँ गीजबाक-मथबाक जे नीति चलल अछि, से साहित्यक संग संग समाजकेँ सेहो पाताले दिस ल' जा रहल अछि।"

ओना एहन बात मर्यादित भाषामे,ककरो अपमानित नहि करैत लिखब कठिन छै,तथापि भाषाकेँ संयमित रखबाक प्रयास केलनि अछि शरदिन्दु सर,से सराहनीय। मुदा संयमित भाषाक प्रयोगक प्रयास रहितहु कतहु कतहु कनि अमर्यादित भाषाक प्रयोग भ' गेल छनि,जकरा इग्नोर नहि कएल जा सकैए।

बुद्धिजीवी लोकक द्वारा एहन भाषाक प्रयोग अशोभनीय छै। गारि आ मारिकेँ गप्प मूर्ख लोककेँ शोभा दैत छै। हम क्षमायाचनाक संग ई बात लिखि रहल छी। आदरणीय छथि आ सभदिन रहताह शरदिन्दु सर हमरालेल।

"जँ हम जनितहुँ"क "इहो पुरुष अलबत्ते"मे देखल जाए-"कते महानुभावक दाबी रहैत छनि जे वैह टा दूधक धोअल छथि आ शेष सभ पातकी।हुनका सँ गप्प होएत त' ओ एक्के लाड़निए अपना छोड़ि सभ वर्गक लोककेँ भ्रष्ट प्रमाणित क' देताह।गप्पक क्रममे हुनक वाक्पटुता, देहक संचालन आ विषयक प्रस्तुति देखि होएत, जे वस्तुतः महान छथि आ हुनक आक्रोशो उचिते छनि।मुदा जँ हुनक धोअल चरित्रक पता लागि जाएत,त' स्वतः थूक फेका जाएत...."सभटा गप्प सत्य लिखल अछि। वास्तवमे एहन लोक बहुतो छथि मुदा "थूक फेका जाएत..."कनि अभद्र सन लागल हमरा।

तहिना "हमर अभाग:हुनक नहि दोष"क "इर्ष्या, द्वेष नहि समन्वय चाही"मे ई लिखब कनि अमर्यादित सन लागल-"अहाँकेँ एहिठाम बाँसमे बान्हिक' पीटी त' कोनो हर्ज नहि ने।"

व्यंग्य वा कटाक्ष रूपमे ककरो किछु कहब क्षम्य छै,मुदा स्पष्ट रूपेँ ककरो नाम उजागर करैत एना पिटबाक बात कहब/लिखब एकरत्ती अशोभनीय कहल जाएत।

"साक्षात्" बात-बातपर बात-४ एकटा नब प्रयोग सन लागल।स्वयं द्वारा स्वयंकेँ साक्षात्कार लेब रोचक सेहो अछि। एकर भूमिकामे लिखने छथि - "कहैत छथि बिहारक अंग्रेजी पत्रकारिताक भीष्म पितामह पंडित स्व. दीनानाथ झा-इंटरव्यू लेनिहारकेँ बोर देबए पड़ैत छैक।जेहन बोर तेहन माछ।" एहि हिसाबेँ,स्वयंकेँ देल बोर सँ स्वयं माछ सन फँसब,रोचक। आगाँ एही

भूमिकामे इहो बात कहने छथि - "प्रस्तुत साक्षात्कार स्वयं हम अपने लेने छी साक्षात्कार लेबाक अनुभवक कारणेँ। देखी सुतरैत आछि कि नहि।" खूब सुतरल अछि सर। एकदम बेबाक इंटरव्यू अछि।

एहि भूमिकामे एकटा निवेदन केलनि अछि जे सभ पत्र-पत्रिका मे एकटा साक्षात्कार अवश्य राखल जाए।

ई दर्पण जकाँ होइत छैक। से सत्ते।

हिनक निवेदनकेँ गम्भीरतासँ लेल जाए से हमर निवेदन ।

आ शरदिन्दु सरसँ निवेदन जे एहिना निर्भीकतापूर्वक आगाँ सेहो नब-नब संस्मरण लिखि पाठकक सोझाँ परसैत रहथि। साहित्यिक जगतमे व्याप्त राजनीति,पुरस्कार लोलुपताक खिस्सा सभसँ पाठकगणकेँ अवगत करबैत रहथि,जाहिमे मैथिलीक प्रतिष्ठित संस्था सभक सेहो संलिप्तता रहैत छै।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.५.राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'- हमर ज्ञान-पिपाशाक स्रोत: शरदिन्दु चौधरी

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'

हमर ज्ञान-पिपाशाक स्रोत: शरदिन्दु चौधरी

हमरा मोन नहि अछि- शरदिन्दु चौधरीसँ कहिया भेंट भेल, हेम-छेम बढ़ल आ बादमे अन्तरंग भऽ गेलहुँ। हम नेपालमे, जनकपुरधाममे मैथिली भाषा, साहित्यक एकटा जिज्ञाशु पाठक रहलहुँ अछि। किछु पढ़बाक, जानबाक ललक हमरा मैथिली पुस्तक विक्रेताक पाछाँ बेहाल करैत रहल। ई आदति हमरा हाईस्कूलक पढ़ाईसँ लागि गेल रहए।

डॉ. धीरेन्द्रक सान्निध्यमे मैथिली पुस्तक, विक्रेता आ भेटबाक स्थान सभ ज्ञात होइत रहल आ हम तकरा लेल अपस्यांत होइत रहलहुँ। पहिने तँ दरभंगाक टावर चौक लग ग्रन्थालय प्रकाशन हमर स्रोत रहय। जे पुस्तक खोजी ओ सभ उपलब्ध करबैत रहलाह। तकरा बाद मिथिला पुस्तक भण्डार आ सभसँ बेसी स्रोत बनलाह आदरणीय रमानन्द रेणुजी।

हम आगाँ बढ़ैत गेलहुँ। कैम्पसमे गेलहुँ। तकरा बाद पढ़ाईक संगहि हमर लेखन सघन रूपसँ आगाँ बढ़ल। सन् १९६४ मे छपल हमर बालकथा 'इमान्दार बालक' सँ मिहिरक लेखक बनलहुँ आ तकरा बन्न होएबा धरि दर्जनों लेख-रचना प्रकाशित होइत रहल। ताहु बीच अनेकों जिज्ञासा उठैत रहल आ तकरा शान्त करबा लेल पुस्तक विक्रेता आ भण्डारकेँ खोजैत रहलहुँ।

ताही खोजीक क्रममे हमरा शरदिन्दुजी सँ भेँट भेल। हमरा लगैत अछि परिचय मिहिर कार्यालयसँ भेल छल। आत्मियता हुनका घरेमे सजायल पुस्तक सभक बीच बढ़ल जे हमर ज्ञानपिपाशाक महत्वपूर्ण स्रोत छल।

मैथिलीक नवप्रकाशन होइक, शब्दकोष हो अथवा कोनो संग्रह शरदिन्दु चौधरीसँ हम प्राप्त करैत रहलहुँ। हम अपन पुस्तक सेहो हुनका विक्रयक हेतु दैत रहलहुँ। एहिमे दुनू दिश एकटा सम्बन्ध विकसित भेल ओ एखन धरि बन्हने अछि।

पुस्तकक विक्री-वितरणमे एकटा सभसँ पैघ अवरोध होइछ- किताब लऽ कऽ-विक्रेताक तकर पाइ सोझ भऽ रचनाकारकेँ देबऽ नहि चाहब। ई दुर्गुण लगभग सभ विक्रेतामे देखल गेल अछि। जहाँ धरि शरदिन्दु जीक सबाल छैक हमरा कठिनाई नहि भेल। सामान्यतः हम अदला-बदलीक रूपमे पुस्तकक लेन-देन करैत रहलहुँ अछि। हमर आवश्यक पुस्तक हुनक 'शेखर प्रकाशन'सँ लऽ लैत छी, तहिना अपन प्रकाशन दऽ दैत छियनि। एहिसँ कोनो कठिनता नहि होइत अछि।

शरदिन्दु चौधरीक नाम बहुतो मैथिली सेवीक लेल अनोन लागि सकैत छैक। तकर कारण छैक हुनक लेखनी। ओ सामान्यतः मोलाहिजा कऽ ककरो कृति, व्यक्तित्व वा कारनामाकेँ लिखबाक जरूरति नहि बुझलनि। जे कही ठाँए पटाका। एहिसँ सम्बन्धित पक्षकेँ छनछना कऽ लागब अस्वभाविक नहि। ई काज हुनकर नीक छन्हि से हमर कहब नहि, तखन सत्य बात अवश्य लिखी मुदा कोना भाषा आ साहित्यक लेल लिखी तकर ज्ञान हयब जरूरी। आ कखन

किछु लिखी तकरो महशूस कएल जएबाक चाही। तकर विचार नहि रखने ओ अनेरे विवादित भऽ जाइत छथि। जखन कि हुनक उद्देश्य प्रायः ककरो चोट पहुँचाएब नहि रहैत छन्हि, अनटोटल बातकेँ मात्र विरोध करब रहैत छन्हि।
जहिया मधुकान्त जीक सहयोगे ओ समय-साल निकालैत छलाह तहियो अपन कटाक्षपूर्ण टिप्पणीसँ कतेकोकेँ नजरिमे खटकैत रहलाह। हम यद्यपि नियमित हुनक आग्रहपर लिखैत रहलहुँ समय-सालमे। कहियो कोनो तरहक असुविधा नहि भेल।
हुनक टिप्पणी सभ अबैत रहैत अछि। खास कऽ व्यंग्य विधापर हुनक कलम नीक चलैत छन्हि। मुदा व्यंग्य जतऽ विनोद उत्पन्न करैत छैक, हुनक व्यंग्य कतेकोकेँ सुइया जकाँ भोंकइत छैक आ तएँ शरदिन्दुजी कतेकोकेँ नजरिमे खटकैत रहलाह अछि।
ओ किताब लिखैत छथि, पुस्तकक सम्पादन करैत छथि, पत्रिका सभक सम्पादन करैत रहलाह अछि- एहि मानेमे ओ साहित्यकार, पत्रकार आ नीक सम्पादक छथि। मनुक्खकेँ चिन्हबाक हुनक नजरि 'डोकहरक आँखि' जकाँ तेज थिक। आ हुनक इएह नेत्र आ घ्राण शक्तिक कारणेँ हमहुँ एक बेर उपकृत भेल छी।
मोन पड़ैत अछि २००६ साल नवम्बर ३ क ओ दिन जखन हमरा 'शेखर सम्मान' भेटल छल। आवश्यक नहि साहित्य अकादेमी, प्रबोध साहित्य सम्मान अथवा आने कोनो कथित प्रतिष्ठित सम्माने सम्मान योग्य होइत अछि। कोनो संघ-संस्थाक निष्ठापूर्वक दैत आएल सम्मान आन कोनो विवादित सम्मान-पुरस्कारसँ पैघ महत्व रखैत अछि।
से शेखर प्रकाशनसँ प्राप्त हमर ओ सम्मान जे पूर्व मुख्यमंत्री जगन्नाथ मिश्रक हाथे भेटल छल ताहिमे उद्धृत वाक्य हमरामे ऊर्जा उत्पन्न कएने छल- आखिर हमर काजकेँ एहि तरहेँ मूल्यांकन तँ भेल अछि। निश्चय एहि प्रक्रियामे गठित चयन समितिक हाथ भऽ सकैछ, मुदा शरदिन्दु चौधरीजी सँ हमर एतेक नम्हर

सम्बन्ध, हमर साहित्य, हमर पत्रकारिता (३९ वर्षसँ गामघर साप्ताहिकक निरन्तर प्रकाशन)क बारेमे हुनका सभकेँ कोनो धारणा बनएबामे सहायक भेल होइक। कहबाक अर्थ- मात्र कटु बाते नहि, प्रतिभाकेँ मूल्यांकनक नजरि आ परबाह सेहो छन्हि शरदिन्दुजीमे जे हुनका आनसँ फूट बनबैत अछि।

शरदिन्दु चौधरी विभिन्न परीक्षामे शामिल होबऽ बला परीक्षार्थी लोकनिक हेतु सन्दर्भ सामग्री सेहो उपलब्ध करएबाक काज करैत आएल छथि जे महत्त्वपूर्ण भेल करैत अछि। एखन मैथिली साहित्यक विक्री वितरणक काजमे शेखर प्रकाशनक माध्यमसँ कएल जा रहल हुनक काज सराहनीय मात्र नहि बहुतोकेँ लेल सन्दर्भ ग्रन्थक उपलब्धिक स्रोत उपलब्ध करएबाक काज थिक जाहिसँ हिनक प्रतिष्ठा बढ़ल अछि।

एहिठाम एकटा आर घटनाक चर्च करब जे हमरा बेसी प्रभावित कैने रहए। नेपालमे मधेश आन्दोलन तेजीमे रहैक। लगभग डेढ़ दशक पूर्वक बात छै। भारतीय मिडियामे एहि आन्दोलनकेँ नेपालसँ फूट होबऽ बला आन्दोलन बता एकटा भ्रम सृजन कयल जाइत रहै। अथवा भऽ सकैए- भारतीय मिडिया एहि आन्दोलनकेँ गम्भीरतासँ बुझि नहि पौने रहए। तखन एत्तऽ नियार भेलै जे भारतीय मिडियाकेँ मधेश आन्दोलनक वास्तविकतासँ अवगत कराओल जाए। आ साथी लोकनि एहि काजमे हमरे चुनलनि। हुनका सभकेँ ई विश्वास रहनि जे पटनामे हमर नीक सम्बन्ध अछि, ताहिसँ पत्रकार लोकनिक जुटानमे आ बातकेँ बुझबाक गम्भीरतामे ई सहायक हयतैक।

हम सभ पटना गेलहुँ। हमर लक्ष्य रहए- शरदिन्दु चौधरी, जनिक सहयोगसँ पत्रकार सभकेँ जुटाओल जा सकैछ। रातिमे २ बजे डेरापर पहुँचलहुँ। घनघोर वर्षा। दोसर दिन कार्यक्रम रखबाक नियार। समयक नितान्त अभाव। जे से भिनसर भेल तँ भोरे शरदिन्दुजीकेँ सभ बात कहलियनि। ओ हमरा निशिन्त कयलनि, हम सम्पर्क करै छी। हम संतुष्ट तँ भेलौं मुदा विश्वस्त नहि। कारण एतेक कम समयमे पत्रकार लोकनि की आबि पओताह। तएँ एकटा कोठरीमे

पाँच-छवटा कुर्सी लगा इन्तजार करऽ लगलहुँ। प्रायः ९ बजेक समय रहैक। कहबाक जरूरति नहि- समयपर पत्रकार सभक जे जुटान होबऽ लागल तँ अगल-बगलसँ कुर्सी आदि खोजैत बैसबाक व्यवस्था करऽ पड़ल रहैक। प्रिण्ट आ इलेक्ट्रोनिक मिडियाक पत्रकारसँ कोठरी भरि गेल रहैक। मोन प्रसन्न भऽ गेल रहए। तखन हम मधेश आन्दोलनक सत्य सभक सामने रखने रहिऐक जे दोसर दिनक भोरका संस्करणमे लगभग सभ अखबारमे छपल छल। एतहु हमरा शरदिन्दु चौधरीक आप्तता नीक सहयोग कएने रहए। अर्थात् ओ मात्र कठोर नहि, मित्र सभक हेतु खुआ बनि जाइत छथि।

ई सत्य छै जे मैथिली साहित्य हुनका ओतेक मोजर नहि देलकनि जकर ओ हकदार रहलाह अछि। एखनो हुनक एकांत सेवा मैथिली प्रकाशन क्षेत्रमे सदैव प्रशंसित रहतनि- रहबाक चाही। हम हुनक सेवाक निरन्तर विस्तारक कामना करैत छी।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.६.जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'- ओहिना नहि तमसाइत छथि शरदिन्दु चौधरी

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'

ओहिना नहि तमसाइत छथि शरदिन्दु चौधरी

आर्यावर्त बंद भ' गेलै.

नोकरी छुटि गेलनि.

दिल्ली, मुंबइ कि कोलकाता नहि भगलाह.

पटनेमे रहिक' जीविकोपार्जनक लक्ष्य बनौलनि,

शेखर प्रकाशनक केलनि स्थापना

आरम्भ केलनि मैथिलीक सेवा

पोथी प्रकाशन आ पोथी बिक्रयक काज

साहित्यकार लोकनिसँ छलाह परिचित

सबहक सहयोगक रहनि भरोस

किछु गोटे करबो केलखिन

निष्ठापूर्वक सहयोग

किछु गोटे छपा लेलखिन पोथी

द'क' किछु पाइ

गेलखिन से घूरिक' फेर नहि एलखिन

नै देलखिन शेष राशि

नै ल' गेलखिन शेष किताब

किछु त ल' गेलखिन सभटा किताब

द'क' मात्र आश्वासन

शीघ्रे राशि पठयबाक

तकिते रहि गेलाह हुनक बाट

मासक मास आ सालक साल

एहेन स्थितिमे कहू त तामस कोना ने हेतनि !

एकटा सज्जन

हिनका पोथी

देबे ने केलखिन

आ मंचपर बाजि देलखिन

जे फल्लाँजी एखन तक पोथीक दाम नै देलनि

एहेन स्थितिमे कहू त तामस कोना ने हेतनि !

विशेषांक लेल एकटा संस्थाक काज केलनि

पारिश्रमिकक बदला पौलनि

दू सय अस्सी टाकाक चेक

एहेन स्थितिमे कहू त तामस कोना ने हेतनि !

एकटा संस्था केलकनि

पुरस्कार देबाक घोषणा

कहलखिन अध्यक्ष

हुनका देबनि पुरस्कार त

माहुर खाक' मरि जायब हम

एहन स्थितिमे कहू त तामस कोना ने हेतनि !

क्यो अप्पन रचनाक प्रशंसा

छद्म नामसँ करथि स्वयं

क्यो अप्पन पोथीसँ बेसी

महत्वपूर्ण नामहि कें बूझथि

एहन स्थितिमे कहू त तामस कोना ने हेतनि !

पत्रकारिता- धर्मक पालन नै करता क्यो

सम्पादकीयमे फोटो लेकिन रह्य अबस्से

शुद्ध-शुद्ध लिखबा केर बदला

करथि गोलैसी

पुरस्कार लुझबा केर खातिर

वेकल रहथि क्यो

एहन स्थितिमे कहू त तामस कोना ने हेतनि !

क्यो जीविते अपना नामपर

चलाबथि पुरस्कार

क्यो रचना नहि छपलापर

भ जाथि

मारि करबाक लेल तैयार

कियो अपन अपकर्मके

मानथि सदाचार

एहन स्थितिमे कहू त तामस कोना ने हेतनि !

मिथिला आ मैथिलीक बाटपर काँट बहुत अछि

से के बूझत ! से के देखत ! कहिया देखत !

बहुत बात अछि शेष बढ़ाबय रक्त चाप जे

ओहिना नहि तमसाइत छथि शरदिन्दु चौधरी !

-संपर्क-8789616115

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.७.विभा रानी- शरदिंदु भाईक गम्भीर सिद्धांतप्रियता!

विभा रानी

शरदिंदु भाईक गम्भीर सिद्धांतप्रियता!

मैथिली हमर भाषा नहिं छल. हमरा घर मे सभ किओ हिंदी बाजै छल. हमर मोहल्लावाला सभ बस्ती- बलिया स' माइग्रेट क' के आएल छल. ओ सब भोजपुरी बजैत छल. हमरा कान मे मात्र हमर घर मे पूजा कराबए लेल आबएवाला पंडित जी बच्चा झा छलखिन्ह, जिनका स' हम सभ शुद्ध मैथिली सुनैत छलहुं.

बीए मे गेलाक बाद बोध भेल जे मैथिली सीखबाक चाही. असल मे, जहन हम आरके कॉलेज मे गेलहुं त' टीचिंग स्टाफक अतिरिक्त सभ किओ मैथिलीए मे बाजय छलखिन्ह. आब हुनका हिंदी मे जवाब देनाई अथवा हुनका सभ स' हिंदी मे गप्प केनाई हमरा बड्ड अबूह लागै छल. अही अबूहक चक्कर मे हम भोजपुरी सीखि गेल छलहुं. कलकत्ता मे बांग्ला सीखि गेलहुं. महाराष्ट्र मे मराठी नहिं सीखि सकलहुं, कियैक त' अहि ठां लोग आओर हिंदी- अंग्रेजी मे गप्प करैत रहलन्हि आ हमहू एक गोट सुभीतगर कोना ताकि क' अजगर बनि पडि रहि गेलहुं.

मुदा ओ कॉलेजक दिन छलै. तैं हम तय कएल जे हम आब मैथिली सीखब. टूटल- फ़ूटल मैथिली बाज' लागल छलहुं. आब जहन बाज' लागलहुं, त' दिमागी कीडा काटय लागल. एक गोट कथा सेहो लिखि लेलहुं. मुदा, एतेक भरोस नहिं छल अपन मैथिली पर. साओन के जनमल बेंग भादो मे कहल जे एहेन दाही त' हम कहियो देखबे नहिं कएल. याहि हमर स्थिति छल. मोन हुदबुद क' रहल छल जे की करी? घर मे आर्यावर्त अबैत छल. ओही मे एक गोट विज्ञापन देखल- मिथिला मिहिरक नवतुरिया लेखन अंक लेल. आब हुदबुद्दी कछमच्छी मे बदलि गेल. हम त' भाई नवतुरिये छी. हमर ई पहिल कथा अछि. उमिर मे सेहो नवे छी. एम ए मे पढि रहल छी. त' सभ मामिले फिट. कथा लिखि लेने छलहुं. की लिखने छलहुं, सेहो नहिं बूझल छल. मात्र ईयाहि टा बूझल छल जे हम मैथिली मे एक गोट कथा लिखि नेने छी.

फेर सएह यक्ष प्रश्न! देखाबी ककरा स'? बच्चा झा पंडी जी त' अहि मे सहायक नहिं हेताह. मोन एलन्हि दोसर झा जी. सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया मे काज करै छलाह. बड्ड गर्व स' अपना के कहैत छलाह जे हम CBI मे काज करै छी. लोक सभ चौंक जाए छलै- आंय! CBI? माने सेंट्रल ब्यूरो ऑफ इंवेस्टिगेशन?' ओ शुद्ध मैथिली बाजै छलखिन्ह पूरा परिवार सहित. हमर घरक सोझे मे आएल छलाह किराया पर. नवयुवक. तुरंते बियाह भेल छलन्हि. कनिया सेहो खांटी मैथिली बजै छलखिन्ह. कॉलेजक स्टाफ के बाद झा जीक कनियां स' हमर स्पोकेन मैथिलीक अभ्यास चलि रहल छल.

एक दिन सांझ मे जहन ओ बैंक स' घुरलाह, हम हुनका ओहि ठां पहुंचि गेलहुं. ओ चूडा भूंजाक नाश्ता क' रहल छलाह. हम हुनका स' कहलियन्हि जे हम एक गोट मैथिली मे कथा लिखलहुंए. अहां कनेक ओकरा जांचि देबै?'

ओ कहलन्हि- 'हम त' नोकरिया, बैंक वाला आदमी छी. बैंकिंगक परीक्षाक रीजनिंग टेस्ट पूछब त' बता देब. ई खिस्सा- कहानी सभ हम की जान' गेलहुं?

हम हिम्मति नहिं हारल. कहल- 'कथा नहिं, अहां कनेक भाषा चेक क' दियऊ.'

हुनकरो सम्भवत: हिम्मति बढलन्हि. सकारि लेलन्हि. हम हुनका अपन हस्तलिखित कथा द' देलियै. तहिया कोन कम्प्यूटर आ टाइपिंगक व्यवस्था? दू दिन बाद फेर सांझ मे हम हुनका ओहि ठां पहुंचलहुं. कहल- 'कथा देखि नेने होयब त' द' दियौ. हम ओकरा 'मिथिला मिहिर' मे पठेबाक सोचने छी. तारीख देल छै. एखनि हम एकरा फेयर करब, तहन पठायब. डाक स' मधुबनी स' पटना पहुंच' मे सेहो समय लगतै.'

आब लोक सभ लोके की भेलाह जे अनुरोध करी आ तत्क्षण काज क' दौथु. मुदा, ओ हमर टाइम लाइन सुनलन्हि आ ओहि हिसाबे करेक्शन क' देलन्हि. हम कनेक आश्वस्त भेलहुं जे लाल पेन स' पेज सभ चिर्री- चोथ नहिं भेल छल. कतहु- कतहु निशान लागल छलै. से त' एखनो लोक सभ निशान पाडि दैत छथि आ हम तकरा लेल तैयार सेहो रहै छी.

कथा फेयर कएल आ 'शुभे हो शुभे' करैत 'मिथिला मिहिर' के पठा देलियन्हि. कोनो जवाब नहिं आयल. हमर हुदबुद्धी बढ' लागल छल. मुदा कही त' ककरा स' कही? ककरो कह' मे सेहो संकोच होइत छल जे कही जे हम कथा लिखलहुंए. ओना हिंदी मे लिखबाक शुरुआत भ' गेल छल. मुदा लिखबाक काज कोनो नोटिस कर'वाला काज त' होइत नहिं छै.

आ एक दिन डाक स' हमर नाम स' डाक पहुंचल. तहिया अपना नामे चिट्ठी सेहो एक गोट अजगुत घटना होइत छलै. तहिया चिट्ठी सेहो केयर ऑफ क' के अबै छलै. हमर डाक सेहो आएल. पता चलल जे 'मिथिला मिहिर'क 'नवतुरिया लेखक विशेषांक'क पहिले अंक मे हमर कथा 'कौआहंकनी' छपल अछि. हम त' मारे खुशी के बताह भ' गेलहुं. सांझ मे झा जी के देखेलहुं. ओहो बड्ड प्रसन्न भेलाह आ हमर मैथिली लेखनक यात्राक शुरुआत भ' गेल.

आब कहै छी जे एतेक पैघ राम कहानी हम कियैक लिखलहुं? 'जाना था जापान, पहुंच गए चीन, समझ गए ना!' लिख' आएल छलहुं हम शरदिंदु शेखर चौधरी पर आ लिख' लगलहुं अपन कथा पर. मुदा से नहिं छै. शरदिंदु शेखर चौधरी पर लिख' लेल आ हमरा संगे हुनकर केहेन नाता छलै, ई बुझबा लेल एतेक पैघ भूमिका स' पास होयब ज़रूरी छै.

शरदिंदु शेखर चौधरी ओहि समय 'मिथिला मिहिर' मे छलाह. मैथिली मे लिखबाक संकट कोनो अजुका संकट नहिं छै. ओहू समय मे नवतुरिया लोक सभक आगम कम छलै. तकरे बढावा देब' लेल 'मिथिला मिहिर' ई योजना निकाललक आ एकर जिम्मा शरदिंदु शेखर चौधरी आ टीम पर द' देल गेलै.

होइत छै स्वाभाविक रूपें जे कोनो योजना निकलला पर ओही बहाने रचनाकर्म भ' जाइत छै, जेना कथा- लेखन कम भेला पर प्रभास कुमार चौधरी आन- आन लोक सभ संगे मिलि क' 'सगर राति दीप जरय' केर आंदोलन शुरु केलन्हि, एखनि श्रीधरम आ अंतिका प्रकाशन उपन्यास लेखन के बढावा देब' लेल 'लक्ष्मी- हरि स्मृति उपन्यास लेखन' योजना कार्यांवित क' रहल छथि. 'मिथिला मिहिर' मे सेहो नवतुरिया लेखन अंक लेल बहुत रास कथा सभ पहुंचल छलै.

हमरा बहुत बाद मे पता चलल जे हमर कथा 'कौआहंकनी' कोना क' पहिले अंक मे छपलै. आब फेर कहब जे ओहि समय कोनो सोशल मीडिया त' छलै नहिं जे लोक आओर पता क' लौथु जे फलां व्यक्ति के छै? सम्पादक ल'ग मात्र रचनाकारक रचना छलै. आ ई त' नवतुरिया लेल छलै, तैं आओरो पता लगायब मुश्किल जे के सभ के आ की छथि.

हमर कथा शरदिंदु भाई के बहुत पसंद पडलनि. हुनका संगे सम्भवत: अग्निपुष्प जी सेहो छलखिन्ह. आओर एक दू गोट सेहो, जिनकर नाम हमरा मोन नहिं. सम्पादक मंडलक पैघ- पैघ लोक सभ लेल ई छलै जे ई कोन विभा रानी? कोनो सरनेम नहि. कोना क' बुझल जाओ जे ई के छथि? शरदिंदु भाई कहलखिन्ह जे अहां सभ व्यक्ति आ हुनक सरनेम के छाप' चाहै छी अथवा रचना के? व्यक्तिक सरनेमक गुणवत्ता चाही अथवा रचनाक गुणवत्ता?

मातबर लोक सभ तैयो थथमथ छलाह. शरदिंदु भाई अंत मे कहलखिन्ह जे 'ई कथा बहुत नीक छै. ई कथा भविष्य मे मीलक पाथर साबित हेतै. बहुत सम्भावनावान कथा छै.' हुनका फेर कहल गेलै जे 'ठीक छै. एतबे अहांक जिद अछि त' एकरा दोसर अंक मे छापि लेब.' शरदिंदु भाई फेर कहलखिन्ह जे 'नहिं, रचना छपतै त' इयाहि अंक मे. आ यदि ई रचना अहि अंक मे नहिं छपतै, तहन हम अपना के अहि योजना से अलग करै छी.'

हम बताह सन लोक. आइयो ओहने बताह छी. भितुरका गप्प स' कोनो सरोकार नहिं राखयवाली. 'कौआहंकनी'क त' जे प्रसिद्धि भेंटलै, तकर त' कोनो चर्चे नहिं. हम रातारात जेना मैथिलीक सेलेब राइटर भ' गेलहुं. हमरा लग पाठकीय पत्रक ढेरी लागि गेल. सभ किओ खोज पुछारी कर' लागलै जे ई विभा रानी के? हमरा लग सभ ठाम से रचना पठेबाक पत्र

आब' लागल. हमर मास्टर (बैंकवाला झा जी)जीक जिम्मेदारी आओर बढि गेलै.

मिथिला मिहिर मे हमर छपब बढि गेल. ओही छपबाक क्रम मे हमर परिचय भेल मैथिलीक अन्यान्य दिग्गज सोमदेव जी, जीवकांत भाई, मायानंद मिश्र, उषाकिरण खान, मोहन भारद्वाज, राजमोहन झा, कुणाल भाई, अग्निपुष्प भाई, विभूति आनंद जी, अशोक, शिव शंकर श्रीनिवास, रमेश, तारानंद वियोगी सहित अनेकानेक लेखक सभ स'.

शरदिंदु भाई स' हम एखनो बहुत धखाइत छी. ओ बहुत गम्भीर रहै छथि, हम जतेक हुनका परिलक्षित केलहुं. बहुत कम, ज़रूरति भरि बाजै छथि. बहुत कम बाजयवाला स' हमरा ओहुनो बड्ड भय होबैत रहैये. 'मिथिला मिहिर' बंद होबैत धरि ओ ओत' रहलाह. तकर बाद 'समय-साल' पत्रिका स' जुडलाह. बाद मे हुनक शेखर प्रकाशन एलै. हम एक बेर पटना गेलहुं त' हुनक प्रकाशन मे सेहो गेलहुं आ हुनक मैथिलीक प्रति प्रेम आ निष्ठा देखि अभिभूत भ' गेलहुं. एतेक निस्वार्थ भाव स' किताबक प्रकाशन आ बिक्री मे लागल छथि. किताब स' वास्ता राखनिहार आब कतेक लोक छथि, सभ किओ जनैत छथि. मुदा शरदिंदु भाई जेना संकल्प नेने होथु मैथिलीक सेवा करबाक. ओ मैथिली प्रकाशन के उपयोगी सेहो बनेलन्हि. बीपीएससी आ अन्य परीक्षा मे काज आबयवाला किताब सभक प्रकाशन, उपलब्धता आदि मे ओ लागि गेलन्हि. हम जतेक काल ओत' रहलहुं, देखल जे छात्र सभ आबि क' किताब सभ पूछैत गेलन्हि आ कीनैत गेलन्हि. कोनो कोनो किताब नहिं रहला पर ओ कहलन्हि जे किताब नहिं अछि, अहां फोटोकॉपी करा लिय'. छात्र खुशी-खुशी किताब ल' क' चलि गेलन्हि फोटोकॉपी कराब' लेल. हम पूछबो केलियन्हि, जे 'यदि नहिं घुराबय?' ओ अपन दाढीक भीतर स' मंद मुस्कान स' कहलन्हि- 'जायत कत'? मैथिली किताब सभ ओकरा आओर के

आओर भेंटतै कत' स'? आई चलि जायत त' काल्हि ओकरा एबाक मुंह रहतै आ यदि आबियो गेल त' की ओकरा स' फेर मांगब पार लागतै?'

हमरा जनितब, ककरो स' किछु कहबाक, मंगबाक हुनक स्वभाव नहिं छै. अपन सिद्धांत पर ओ कोनो व्यवस्था स' भीडि जायवाला लोक छथि, चाहे ओ हमर कथा छापबाक समय छल अथवा पटनाक आन- आन महत्वपूर्ण संस्था सभ स' भिडबाक. कुणाल जी कहै छथिन्ह जे 'ओ अपन प्रतिबद्धताक धनी छथि.' मैथिली मे एहेन सिद्धांतवाला लोक सभ त' दीया के कहय, सुरुजक प्रकाश ल' क' ताक' जाऊ, तहनो मुश्किल स' भेटायत. हुनक शेखर प्रकाशन एक गोट स्तम्भ छै मैथिलीक छात्र- छात्रा लेल, मैथिलीक आन- आन लोक सभक अड्डाबाजी लेल सेहो. सुनल, जे एखनि हुनक मोन बेसी खराब रहै छै. हम फोन कएल. ओ फोन नहिं उठेलन्हि. लागल, जे ई खबर सत्य छै. शारीरिक अस्वस्थता मन्हुष्य के भीतर स' उदास आ अवसन्न करै छै. शेखर भाई जल्दी स्वास्थ्य लाभ करथु, ई हमर कामना. अपन सिद्धांतक दीप चतुर्दिक लेसथु, ई हमर कामना!

-संपर्क-मुंबई

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.८.डा. नारायणजी- विसंगतिक विरुद्ध प्रतिरोधक-स्वर

डा. नारायणजी

विसंगतिक विरुद्ध प्रतिरोधक-स्वर

श्री शरदिन्दु चौधरी, जे व्यक्ति छथि, आ जिनका मैथिली साहित्यसँ,प्रकाशन,वितरण आ सम्वर्द्धनसँ आइयो प्रगाढ़ प्रेम छनि,हुनका हम थोड़ जनैत छियनि।तकर कारण अछि, जे हम सभदिनसँ गाममे रहैत छी आ ओ राजधानी पटनामे।आ कोनो तेहन नहि काज रहबाक कारणेँ,अथवा रहलो पर अपन असमर्थताक कारणेँ हम पटना थोड़ गेल -आएल छी।तेँ व्यक्ति भाइ शरदिन्दु चौधरीकेँ थोड़ जनैत छियनि।

मुदा,जेँकि मैथिलीक आधुनिक दृष्टि -सम्पन्न कवि -कथाकार श्री पूर्णेन्दु चौधरीक मातृक हमर गाम छियनि आ ओ शरदिन्दु चौधरीक पितियौत भाए छथि, तँ से हुनकासँ भेट होइत छल आ, अपन भेटमे एकदिन ओ गपक क्रममे कहलनि जे हम शरदू (शरदिन्दु चौधरी)केँ कहने रहियनि जे मैथिली साहित्यक संरक्षण आ सम्वर्द्धनमे रुचि राखह, मुदा ताहि लेल शहीद जुनि भए जाह।से सुनि निश्चितरूपसँ भाइ शरदिन्दु चौधरीक एक टा निर्लोभी आत्मोत्सर्गित व्यक्तिक स्वभाव आ स्वरूप हमर सोझाँ उजागर भेल

छल,जाहिमे मैथिली साहित्यकेँ संरक्षित करबाक सदिश निष्ठा आ संकल्प देखाएल छल,आ से हुनकर छवि हम आइ धरि पाबि रहल छी।

श्री शरदिन्दु चौधरीक संस्मरणात्मक निबंधक पुस्तक - 'हमर अभाग : हुनक नहि दोष' हमर सोझाँ एखन अछि।महकवि विद्यपतिक ई पंक्ति कृष्णक प्रति गोपीक आत्मव्यथाकेँ प्रकट करैत अछि,जाहिमे कृष्णक प्रति गोपीक सम्पूर्ण समर्पण छनि।मुदा,भाइ शरदिन्दु चौधरीक चर्चित उक्तिक अर्थमे मैथिली साहित्यक सृजनसँ जुड़ल विभिन्न प्रक्रिया आ ओहि प्रक्रियासभमे व्याप्त ओहि विसंगतिसं परिचय कराएब थिक,जतए मानवता नष्ट होएबाक नहि मात्र मंद हाहाकार अछि, अपितु,मानवता जगएबाक तीक्ष्ण प्रहार अछि।आ से एहि सम्पूर्ण पुस्तकमे लेखकक एहन विशिष्ट दृष्टि -केन्द्रित अभिव्यक्ति प्रशंसनीय थिक।

श्री शरदिन्दु चौधरी एहि पुस्तकक भूमिकामे अपन विसंगति -बोधक दृष्टिक अभिव्यक्तिक चयन लेल जे निर्णय लेलनि,ताहि सम्बन्धमे स्पष्ट करैत कहैत छथि, '..लेखनकालमे जिनकापर हमर कलम चलैत अछि, तिनक श्याम-पक्षपर केन्द्रित अवश्य रहैत अछि,मुदा हुनका अपमानित करब चेष्टा कथमपि नहि।'

श्री शरदिन्दु चौधरी अपन एहि पुस्तकक 'नव घर उठय - पुरान घर खसय ' शीर्षक निबंधमे नव वर्षक आब होइत आयोजनमे विसांस्कृतिकरणक चिन्ता जनबैत नेनासभमे प्राचीन आ अपन पारम्परिक मूल्यक ज्ञान देबापर बल देलनि आछि,तँ 'हमर अभाग : हुनक नहि दोष'मे मान्य साहित्यकारक अशोभनीय महात्वाकांक्षाकेँ देखबैत छथि।संगहि,'सम्पादक आ पाठकीय पत्र' शीर्षक निबंधमे तँ साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त करबाक लेल साहित्यकारक घोर लिप्साकेँ आ

आचरणकेँ निस्संकोच उजागर करैत देखाइत छथि।ओ कटूक्ति संग मैथिलीक साहित्यकारक ओहि ज्ञानक उपहास करैत नहि थकैत छथि जिनका कौमा आ पूर्ण विराम धरिक ज्ञान नहि छनि,से ज्ञान बघारैत देखल जाइत छथि। पोथीक ' पैघत्वक अकारण प्रदर्शन...' होअय अथवा 'बइमान होयबाक घोषणा 'शीर्षक निबंध पढ़ि तखन आर बेसी कचोटैत अछि, जखन सुविचारित कोनो स्मारिकासँ कोनो आलेख प्राय:: स्तरहीन बुझि अस्वीकारि देल जाइत अछि,मुदा,जखन वैह आलेख कतहु दोसर ठाम छपि जाइत अछि,तखन नहि अत्यन्त मूल्यवान बूझल जाइत अछि,अपितु, यूपीएससी लेल सेहो अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होइत अछि।पुस्तकक अन्तिम निबंध 'ईर्ष्या द्वेष नहि - समन्वय चाही'क विचार अवश्य मैथिली भषा आ साहित्यक समुचित विकास लेल समन्यक आवश्यकताक अनुरोध करैत अछि।

मुदा,समग्रतामे पुस्तकक सम्पूर्ण केन्द्रीय स्वर मैथिली साहित्यक आजुक विकासक क्रियाकलापमे व्याप्त विसंगतिक प्रति निर्भीकतापूर्वक उदाहरण सहित प्रतिरोधक -स्वरकेँ देखार करब थिक,जाहि स्वरकेँ निचेनसँ अकानल जएबाक चाही।

- संपर्क-9431836445

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.९.मुन्नी कामत- भाषाविद् श्री शरदिन्दु चौधरी

मुन्नी कामत

भाषाविद् श्री शरदिन्दु चौधरी

सत्यक बाट पर पाथर हजार,

हजुरे-हजूर मठाधिस बनल

सत्य कैँ टारैय संसार।

आय हम बात कऽ रहल छी पत्रकार, संपादक एवं साहित्यकार ,ओना ओऽ कतेको साहित्यक रचना करैयक बादों स्वयं कैँ साहित्यकार नै मानैत छथि से हिनकर बड़पन्न अछि। नाम - शरदिन्दु चौधरी,गाम - मिश्रटोला दरभंगा।

श्री शरदिन्दु चौधरी जी अपन लेखनक जादुगरी लेल जानल जाएत अछि। हिनकर कलम कहियो हिनका मन सँ समझौता नै केलक आऽ सत्यक श्याहि

संगे दौड़ैत रहल। माँ सरस्वती के उपासक हिनकर समस्त परिवार ज्ञान अर्जन कऽ सबसँ पैघ धन मानलक। हिनकर बाबूजी पंडित सुधांशु शेखर चौधरी जे अपन लेखन सँ मैथिली साहित्य कऽ विभिन्न विधा सँ समृद्ध् केलैथ। हिनकर बाबा पंडित शशि नाथ चौधरी जे मैथिली केँ पैघ विद्वान छेलैथ। तँ हम निधोक कहि सकैत छी जे साहित्यक ई स्नेह हिनका विरासत मऽ भेटल छैथ।

श्री चौधरी जी पॉलिटिकल साइंस सँ ूूएम ए केलखिन आऽ वकालतक डिग्री हासिल केलैथ। मुदा जे खून मऽ रहैत अछि सोझाँ एबिए जैत अछि। साहित्य हिनका खून मऽ सनल छल अहि सँ लाख कोशिश कऽ बादों ई अहि सँ मुक्त नै भऽ पौलखिन।

वकालतक पढ़ौनी करैके बाद जखन ओऽ अहि क्षेत्र मऽ अपन किस्मत अजमाबैय लेल दू - चारि दिन कोट गेलखिन तँ हिनका भान भेल जे अहि पैसा मऽ झूठक सिवा किछ नै अछि। हिनका ऐहन झूठक खेल नै खेलबाक छल। जे सत्य आऽ भ्रष्टाचार्य कऽ तार -तार करैय लेल अपन भेल नौकरी कऽ इंटरव्यू काल मऽ घेंट दैब देलक से शरदिन्दु जी वकालत कोना करैथ। हिनकर ई सत्यक सिनेह हिनका बेर -बेर पिछा धकलैत रहल, मुदा ओऽ अपन बाट नै बद्ललैथ।न सत्यक लाट छोड़लैथ। हीनकर लेखन हिनकर सत्यताक प्रमाण अछि।

हिनकर प्रसिद्ध व्यंग्य संग्रह अछि *बड़ अजगुत देखल* , *करिया कक्का कोरामिन* , *गोबर गणेश*

संस्मरणात्मक रचना अछि *बात -बातपर बात* ,*हमर अभाग: हुनकर नहि दोष* ,*मर्मान्तक शब्दानुभुति*

आकाशवाणी दूरदर्शनसँ दर्जनों वार्ता। मिथिला मिहिर पत्रिका साप्ताहिक, दैनिक, मासिक कऽ संपादक। आर्यावर्त हिन्दी दैनिक पत्रिका कऽ फीचर संपादक।

तीन दशक सँ साहित्यिक गतिविधि मऽ सक्रिय रहितो हिनका बेसी मंच सँ अलग - थलग देखल गेल। हिनकर विचार समाजक व्यवस्थाक विपरित अछि जे ओहि व्यवस्था कैँ बनेनाहर सभ के विरुद्ध अछि जे हिनकर व्यंग्य संग्रह मऽ सहजे देखल जा सकैत अछि। अपना कऽ पाग आऽ दोपटा सँ स्वतंत्र रखबाक लेल ई आजिवन कोनो संस्था सँ सम्मानित नै हेबाक सपथ नेने छैथ।

स्वतंत्र भऽ बिन किछ लेबाक इच्छा सँ अपने सद्खिन मिथिला आऽ मैथिली लेल अपन लेखन सँ काज करैत रहलैथ। उद्देश्य मात्र अतबे जे अपन धरोहर कऽ मिथिला मैथिल नामक खाल पहिर दिम्मक कऽ नै खा देब। अहि लेल ओऽ अपन लेखनी सँ अहि दिमक सभ कैँ चेतौनी दैत रहैत छैथ।

चौधरी जी अहि समाज सँ नै समाजक व्यवस्था सँ व्यथित छथि। साहित्यिक गतिविधि जे वर्तमान में चैल रहल अछि ओहि गतिविधि पर क्षुब्ध छथि।जिनका भाषा कऽ ज्ञान नै से मठाधिस अछि आऽ जे ओहि भाषा कऽ गरहैत छैथ से अन्चिनहार अछि।

वर्तमान मऽ मैथिली भाषा सँ पढ़ौनी केनिहार विद्यार्थी सब लेल शेखर प्रकाशन कैँ व्यवस्थापक एवं संचालक श्री शरदिन्दु चौधरी कऽ नाम सबसँ ऊपर अछि। ओऽ विद्यार्थी सबहक मन मऽ हिनका प्रति जे सम्मान अछि से बनावटि नै अछि।ई सम्मान हिनकर हक अछि जे हिनकर काज हिनका दियौलैथ। हिनकर स्मारिका, व्यंग्य, संस्मरण जखन पढ़ब तँ किछ काल लऽ ठमैक जरूर जैब

आऽ सोचए परत जे शरदिन्दु जी गलत कतए कहलैथ। हिनकर यैह कला हिनकर रचना कऽ अमर बनाबैत अछि।

- संपर्क- साहिबाबाद (गाजियाबाद)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१०.गौरीनाथ- शरदिन्दु चौधरी हेबाक माने

गौरीनाथ

शरदिन्दु चौधरी हेबाक माने

शरदिन्दु चौधरी। जिनकर बात मे नोनक कमी आ मिरचाइक तासीर खूब कड़गर आ झाँसिगर लागि सकैत अछि, मुदा मिठास तकै लेल बड़ परिश्रम कर' पड़य। कतेको गोटे लेल माहुर चढ़ाओल व्यंग्य-वाण जेना हिनक जिह्वा पर सदति तैयारे रहैत छनि! ई नइँ जे दुर्वासा महाराज जाइत-जाइत अपन तामसक बोरा बुद्धमार्गक कोनो गाछ पर सँ हिनके माथ पर उझलि गेल छलाह! साफ-साफ बात करयवला एहन सहृदय आ सहयोगी मानुस पटनाक मैथिली-परिसर मे कमे भेटताह। विद्यापति भवनक विद्यापति बाबाक बर्खी मे अबैत-जाइत मैथिलीक साहित्यकार लोकनि भने हिनका सँ बिदकैत होथि आकि केओ-केओ आरोप लगबैत होथि जे शरदिन्दु जी "साहित्य अकादेमी, मैथिली अकादमी आ चेतना समिति कैँ भयादोहन क' " कमाइत छथि!... मुदा सत्त तँ ई अछि जे शरदिन्दुजी अपन परिश्रमक कमाइ धरि कतेक मिठबोलिया मैथिली साहित्यकारक उधार खाता मे बोहाबैत रहलाह अछि।

अक्कत तीत आ तीख बजैत-बजैत हुनक स्वास्थ्य ततेे खराब भ' गेलनि जे बेसी काल बीपी बढ़ल रहै छनि, मुदा मैथिलीक तथाकथित साहित्यकार लोकनि लेलधनसन! एहन कय टा स्वनामधन्य कवि-साहित्यकार भेलाह जे एक निश्चित राशि तय क' हिनका सँ किताब छपा लेलनि आ पाइ देब' बेर मे अपन मैथिली सेवी हेबाक बखान करैत हिनका 'चूना'लगा गेलाह। एहन-एहन अनेक लेखक सँ पीड़ित शरदिन्दु जी मैथिलीक खाँटी पाठक आ छात्र-छात्रा लोकनिक प्रिय छथि तँ अपन श्रम, लगन आ ईमानदारी के बल पर।मैथिली पोथीक प्रकाशन आ वितरणक अव्यवस्थित दुनिया मे हिनक योगदान कैं भनहि मैथिलीक साहित्यकार लोकनि नइँस्वीकार करथि, छात्र-छात्रा आ खाँटी पाठकक मन मे हिनका लेल हम बड़ आदर अनुभव कयलहुँ अछि। दूर-दूर सँ केओ कोनो दुर्लभ पोथीक खोज करैत अछि, तँ हुनका बस एक टा व्यक्तिक नंबर दैत छी- शरदिन्दु जीक। किछु दिन बाद पोथी प्राप्त क' चुकल ओ व्यक्ति धन्यवाद-ज्ञापन करैत हिनक तारीफ जाहि भावना सँ करैत अछि, ओकर मर्म सब नइँ बूझि सकैत अछि।

"बालपन मे भरि पेट अन्न लेल तरसब, किशोरावस्था मे प्लूरिसी सन बीमारी सँ ग्रस्त होयब, एम.ए. मे पढ़ैत काले मायक देहान्तक मर्मांतक पीड़ा भोगब, 34-35क बयस मे नोकरीक छूटब, बेकारी-लचारीक समय मे पिताक संसार सँ उठि जायब, चारि गोट संतान आ पत्नीक संग सालो-साल आर्थिक कष्ट सँ जूझब आ आब बुढ़ारी मे जीवन-यापन लेल संघर्ष करैत-करैत परीक्षाक अर्थ की होइत छै से बुझय लगलहुँ अछि। शेष जीवन मे आर कतेक पर-इच्छाक पालन करय पड़त से बूझल नहि अछि मुदा हम सदा तत्पर छी अग्रिम परीक्षा देबाक हेतु आ से पूर्ण मनोबलक संग।" 14 अप्रैल, 2020 कैं 11.20 बजे राति मे कोरोना लॉकडाउनक पीड़ा बीच लिखल

हुनक ई डायरी-अंश हुनक मनोदशा साफ-साफ बतबैत अछि। ई एक टा संघर्षशील मनुक्खक मनोव्यथाक अभिव्यक्ति थिक।

शरदिन्दु जी कैँ विगत पैंतीस वर्ष सँ हम बहुत निकट सँ देखैत आबि रहल छी।खासक' किछु पुस्तक मेला सभक क्रम मे दस-बारह दिनक निरंतर भेंटघाट सेहो रहल, भोर सँ साँझ धरि। हम हुनक दैनिक जीवनक उतार-चढ़ाव आ मनःस्थिति कैँ ओहि क्रम मे बेसी निकट सँ अनुभव क' सकलहुँ। घनघोर अर्थ-संकट आ कैक तरहक शारीरिक परेशानीक बादो ओ अपन नैतिक-आत्मबल पर सदा अडिग देखाइत रहलाह अछि। सेवा-भाव सँ भरल। विचलन कतहु ने। संघर्ष-पथतेना प्रिय जे कखनो कोनो हालति मे हुनका असत्यक संग दैत नइँ देखलहुँ। 'अंतिका' मे प्रकाशित हुनक रिपोर्ट सब सेहो तकर गवाह अछि जे ओ जाहि व्यक्ति आ संस्थाक काज अपन आर्थिक लाभ लेल करैत छलाह, तकरो विरुद्ध कलम चलबैत ओ कोनो संकोच कहियो नइँ कयलनि।

एखन हमरा सामने मे शरदिन्दु चौधरीक संस्मरणात्मक निबंध 'बात-बातपर बात' आ एकर दोसर खंड 'मर्मान्तक-शब्दानुभूति' अछि। बहुत झुझुआन सन कायाक पोथी। मैथिली प्रकाशन जगत, मैथिल संस्था सभक किरदानी आ एकर साहित्यकार लोकनिक गोलैसी मादे शरदिन्दु जीक जे विस्तृत जानकारी आ अनुभव-संसार रहलनि अछि, तकरा देखैत तँ एहि पोथीक काया आरो निराश करैत अछि। एहि परिक्षेत्रक जे जानकारी हिनका लग छनि, से अन्यत्र कतहुँ नइँ। जँ ई विस्तार सँ लिखितथि तँ कतेको मुँहपुरुख कैँ मुँह नुकब' पड़तनि, कतेको तथाकथित सम्मानित साहित्यकार अपन सम्मानक पोटरी बान्हि पेटी मे नुकब' लगितथि। मारते रास एहन सत्यसभ सभक सोझाँ अबैत जाहि सँ मैथिलीक अधिकांश गोटे अनभिज्ञ छी। मुदा से

नइँ भेल अछि!... हम जनै छी, हिनका लग से सब इत्मीनान सँ लिखबाक ततेक पलखति नइँ छनि। शरदिन्दु जी कैँ अनेक ओहन साहित्यकारक अशुद्ध पांडुलिपि कैँ शुद्ध क' छपबाक छनि जिनका जल्दी सँ पुरस्कारक लाइन मे लगबाक हड़बड़ी रहैत छनि, बीपीएससी-यूपीएससीक छात्र-छात्रा लेल किताबक पैकेट बान्हि क' पोस्ट करबाक रहै छनि। ककरो स्मारिका, ककरो किताबक तैयारी मे लगबाक रहै छनि। अपन शरीर कैँ मैथिली पोथी आ प्रकाशन पाछू तिल-तिल गलबैत रहल एहि व्यक्तिक मन दूर बैसल कोनो छात्र-छात्राक सफलता सँ पुलकित होइत अछि। प्रकाशन-व्यवसाय आ पोथी दोकान सँघर-गृहस्थी चलेबा लेल हिनक नोन-तेलक जोगाड़ तँ जरूर होइ छनि, मुदा एतबा बचत नइँ भेलनि जे बेटी ब्याहक अवसर पर पिताक अरजल जमीन बेचबाक तकलीफ सँ बाँचल रहितथि। हिनक एहन-एहन मारते रास दुख बुझबाक लेल एहि पोथी कैँ बहुत बारीकी सँ पढ़ब जरूरी अछि। अपन व्यथा-कथा कहैत कैक ठाम हिनक तामस तेना लहरि जाइ छनि जे ई विस्तार सँ कोनो बात राखि नइँ पबैत छथि। बिना विस्तार मे गेने, बहुत मेंही-मेंही छोट-पातर सूत्र कैँ पकड़ि क' हिनक बात कैँ बुझब तखने हिनका ढंग सँ जानि सकै छियनि। जँ से धैर्य नइँ तँ ई पोथी अहाँ लेल कोनो काजक नइँ हैत।

केओ कहि सकै छथि जे शरदिन्दु चौधरी सन एक टा मामूली प्रकाशक आकिताबक छोटछिन दोकान चलब'वला कैँ जानि क' की लाभ? तेहन कठपिंगल लेल ई किताब दुइयो कोड़ीक नइँ अछि आ हुनका बुझायब सेहो कठिन! मुदा जिनका एहि दुर्लभ कोटिक मनुक्खक प्रति कनेको जिज्ञासा होनि, ओहि व्यक्ति लेल एहि दुनू किताबक बड़ महत्त्व अछि। संक्षेप मे बहुत काजक बात कहल गेल अछि। आबयवला समय मे एहन पुस्तकप्रेमीक घनघोर अभाव हैत। मिथिला-मैथिली के नाम पर जय-जय करयवला बहुत

भेटत, मुदा एतेक कम लाभ पर जीवन-यापन करयवला शरदिन्दु चौधरी सन दोसर केओ नइँ भेटत।

शरदिन्दु चौधरी मैथिलीक ख्यात साहित्यकार आ 'मिथिला मिहिर'क संपादक सुधांशु शेखर चौधरीक पुत्र छथि जिनक जन्म 07 अक्टूबर 1956 कैँ दरभंगाक मिश्रटोला मे भेलनि। ओ पटना विश्वविद्यालय सँ राजनीति शास्त्र मे एमए आ मगध विश्वविद्यालय सँ एलएलबी कयने छथि। कतेको साल विभिन्न पत्र-पत्रिका आ अखबार मे पत्रकारिता कयने छथि। ई सब हुनक ओ परिचय छी जे प्रायः सब जनै छथि। एकरा बाद लोक बसएतबे जनै छथि ओ शेखर प्रकाशन नाम सँ एक टा प्रकाशन आ किताबक दोकान चलबै छथि। बड़ तीत आ कड़ू लगैवला भाषा मे बजै छथि आ संस्था सभक असलियत जनै के कारणें ओकर भयादोहन करै छथि! एकरा बाद आरोप-दर-आरोप कि जकरे किताब छपै छथि तकरे नाँगट करै छथि! कथी लेल तँ कखनो बकियौता पाइ लेल तगेदा क' दै छथि, कखनो अशुद्ध लिखै लेल बोकियबै छथि!... एहन लोक कैँ ई पता नइँ हेतनि आ नइँ से पता करबाक उहि हेतनि जे ई व्यक्ति ऑटो-रिक्शा चलब'वला एक टा मजदूर कोटिक लोक लेल तेहन खतरा मोल ल' सकैत अछि जेहन स्थिति मे सहोदरोक प्रति कतेक के डेग पाछु भ' जायत। जखन अहाँ हिनक जीवन मे नीक जकाँ उतरब आ हिनक संघर्ष कैँ देखब-गमब तखने बूझि सकब जे शरदिन्दु चौधरी हेबाक माने की होइत छै!...

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.११.जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'- कथ्य, तथ्य आ सत्यक चिन्तन

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'

कथ्य, तथ्य आ सत्यक चिन्तन

बात-बातपर बात सीरीजक अंतर्गत 63 ,48,40 आ 32 पृष्ठक चारिटा पोथीक कुल 183 पृष्ठमे लेखकक जीवनक व्यथा-कथा अथवा संस्मरणात्मक निबंध अछि.

शास्त्र कहैत अछि, ग्यानी लोकनि कहैत छथि जे जीवनमे जतेक दुख हम सभ भोगैत छी से अपन अग्यानताक कारणे आ जतेक सुख पबैत छी से परमात्मा अथवा अस्तित्वक प्रसाद अछि.

पोथी पढैत काल कतेक ठाम किछु प्रश्न मोनमे उठैत अछि.

किछु बात पढ़िक' लगैत अछि जे एना कोना भ' सकैत छैक,अवश्य कतहु सम्वादहीनताक स्थिति आएल हेतैक, कतहु-कतहु लगैत अछि जे अतिशयोक्ति अलंकारक प्रयोग भेल अछि. एहने-सन किछु प्रसंगक उल्लेख एकटा पाठकक रूपमे हम करय चाहैत छी.

1, **अपन वाल्यावस्थाक चर्च करैत कहैत छथि जे पिताजीकें मिथिला मिहिरक व्यस्तता तते रहैत छलनि जे हमरा सभकें प्रातःकाल जगबासँ पहिने निकलि जाथि आ रातिमे जखन सूति रही तखन ओ घर आबथि, हम सभ हुनका रविदिन किछु काल देखियनि.** (पृष्ठ : IV / 26)

पटनामे आवास आ कार्यालय दुनू रहनि तखन कहियो-कहियो एहेन स्थिति आएब स्वाभाविक भ' सकैत छैक मुदा तीन बरख धरि एहेन स्थिति रहब अस्वाभाविक लगैत अछि.

2. एकठाम कहल गेल अछि जे पेट नहि होइतैक त मनुष्य व कोनो जीव-जंतु संघर्ष नहि करैत,कोनो काज नहि करैत. (पृष्ठ : II / 42)

देखल गेल अछि जे जकरा भोजनक समस्या नहि छैक,सेहो विना कोनो काज केने नहि रहि सकैत अछि.भोजन मात्र जीवनक खगता नहि छैक.

3.एक ठाम कहल गेल अछि जे हमरासँ जुड़ल 95 प्रतिशत लोक हमरासँ घृणा करैत अछि. (पृष्ठ : II / 41)

ओही ठाम ईहो कहल गेल अछि 'हम अपना जनैत ककरो विषयमे ने खराब सोचैत छी आ ने अपन क्रियासँ ककरो अहित करैत छी '. (पृष्ठ : II / 41)

ई दूनू बात परस्पर विरोधी अछि.

शास्त्र कहैत अछि, चिन्तक लोकनि कहैत छथि जे जँ अहाँ ककरो विषयमे ने खराब सोचैत छी, ने करैत छी त अहूँक लेल ककरो मोनमे खराब भावना नहि

आबि सकैत छैक. तें हमरा जनैत ई 95 प्रतिशतक गनना अशुद्ध अथवा अतिशयोक्ति अछि.

4.एक ठाम कहल गेल अछि 'हमर प्रयास रहैत अछि जे शान्ति भावमे रही, मनोवल उच्च बनल रहय, सकारात्मक सोच बनल रहय, सुखक अभिलाषा नहि,सुविधाक पाछाँ भागब स्वभाव नहि तैयो शान्ति दूर अछि, ई किए अछि? ई ककरासँ पूछू ? (पृष्ठ : II /40)

एहने प्रश्न कुरुक्षेत्रक मैदानमे अर्जुनक मोनमे उठल रहनि आ आइयो सभ मनुक्खक अथवा अधिकतर लोकक मोनमे ई प्रश्न उठैत छैक, तकर समाधान गीतामे भगवान द्वारा देल जा चुकल अछि.

5.कहल गेल अछि जे अनुचितक प्रति क्रोध उत्पन्न होइछ. (पृष्ठ : II / 30)

प्रश्न उठैत अछि जे अनुचित की अछि ?

की हम जकरा अनुचित बुझैत छी सैह अनुचित अछि ?

भ' सकैत छैक, हम जकरा अनुचित बुझैत छी से बहुतोक लेल उचित होइ.

शास्त्रमे त क्रोधक कारण कामनाक पूर्तिमे उत्पन्न बाधाकें कहल गेल अछि.

6. कहल गेल अछि जे हम अपन अधिकारसँ बेसी कर्तव्यकें श्रेष्ठ मानलहुँ अछि तें प्रायः आजुक समाजमे अपनाकें अनफिट पबैत छी आ बरमहल असहज स्थितिमे आबि जाइत छी. (पृष्ठ : II / 26)

कर्त्तव्यकें श्रेष्ठ मानब आ अपनाकें अनफिट अथवा असहज स्थितिमे पायब दुनू एक दोसरक विरोधी लगैत अछि.

असहज स्थितिमे अयबाक दोसर कोनो कारण भ' सकैत अछि.

7. कहल गेल अछि जे एकटा पड़ोसी रिक्शाबला टेम्पू लेब' चाहैत छल, ओकरा बैंकसँ लोन नै भेटलै त अपना नामपर लोन ल'क' ऑटो रिक्शा ओकरा दिया देलिऐ ओकर उपयोग करबाक लेल आ तीन सालमे लोन चुका देबाक लेल, मुदा दू सालक बाद ओ लोन चुकयबामे आनाकानी करय लागल, ओहि लेल डटलिऐ त तमसाक' ऑटो हमरा दलानपर लगाक' चल गेल आ अंततः हमरा एक लाखसँ बेसी लोन चुकाब' पड़ल. (पृष्ठ : II / 22-23)

कोन योजनामे ई लोन नेने रहथिन से लीखल नहि छैक, जँ शासकीय योजनाक अंतर्गत नेने हेथिन त बैंकक नियमानुसार ई अनुचित अछि, तें परिणाम मनोनुकूल नहिए हेबाक छलनि.

जँ गैर-शासकीय योजनामे लोन नेने हेथिन, त एहिमे व्यवसायक रूपमे अतिरिक्त सावधानी, देख-रेख आ नियंत्रणक आवश्यकता छलै जे नहि भ सकल हेतनि !

जकरा प्रति सहानुभूति रखैत मदति केलखिन आ ओ विश्वासक रक्षा नहि केलकनि, ओकरो अपन कृत्यक फल भेटिए गेलै जे ओ फेर रिक्शा चलब' लागल.

8. कहल गेल अछि जे विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा पत्रकारिताक क्षेत्रमे सेवाक लेल हमरो नामक घोषणा केलक,प्रेस विज्ञप्ति जारी भेलै, सभ अखबारमे सम्मानक लेल चयनित लोक सबहक नाम छपलै, तकर बाद अध्यक्ष महोदय कहलखिन जे सम्मानक सूचीसँ जँ शरदिंदु चौधरीक

नाम नहि हटाओल जाएत त हम जहर खा लेब आ हारिक' सचिव महोदय द्वारा नाम वापस ल' लेल गेल. (पृष्ठ : I / 31-32)

एहि कथ्यपर जखन विचार करैछी त प्रश्न उठैए जे विना अध्यक्षक सहमतिसँ सम्मानक सूची कोना अखबारमे प्रकाशित भ' गेलै.

ईहो प्रश्न उठैए जे अध्यक्ष महोदय जे मैथिलीक एकटा प्रतिष्ठित व्यक्ति छलाह से एहन बात किए कहलखिन जे हम जहर खा लेब !

लगैत अछि जे तथ्य आ सत्य किछु दोसर छल हेतै जे प्रकाशमे नहि एलै.

9.कहल गेल अछि जे पुरस्कार आ सम्मानक लोभमे एहनो लोक शामिल भ' गेलाह जिनका योग्यताक आगाँ साहित्य अकादमी पुरस्कार तुच्छ अछि.(पृष्ठ:I /56-57)

सुनैछी देवतो सभ भावक अर्थात सम्मानक भूखल होइत छथि, तें योग्य व्यक्तिकें एकर लोभ होयब अनुचित नहि कहल जा सकैछ, परन्तु ई त अतिशयोक्ति लगैछ जे पुरस्कार व सम्मान नहि भेटबाक कारणें ओ मैथिली बजनाइ छोड़ि देलनि आ कहने भेल घुरथि 'मैथिली बईमानो की भाषा है !'

10. धार्मिक पत्रिका 'कामाख्या सन्देश'क तीनटा अंकक छपाइ आदिक खर्च तीस हजार नहि भेटलनि. (पृष्ठ : I /59)

पहिल अंकक बकायाक बाद सावधान होयब आवश्यक छलनि. तीन अंक तक बकाया रहबामे व्यवस्थापकीय असावधानीकें स्वीकार करबाक चाही.

बकायाक वसूली हेतु दोसर व्यक्तिक माध्यमसँ नहि, सम्बंधित व्यक्तिसँ प्रत्यक्ष पत्राचार करबाक प्रक्रियाक अनदेखी भेल.

11. एकटा साहित्यकारसँ (जे साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त छथि) एकटा पोथीक प्रकाशनमे 1675 टाका प्राप्त नहि भेलनि. (पृष्ठ : I /61)

दोसर व्यक्ति द्वारा कहबयबाक स्थानपर जँ स्वयं हुनकासँ पत्राचार कएल गेल रहितनि त हमरा नै लगैए जे समाधान नै भेल रहितनि,

बकाया रहबाक आनो किछु उदाहरण सभमे इएह लगैत अछि जे व्यवसायक किछु नियमक पालन नहि भेलासँ परिणाम अप्रिय भेल.

12. मैथिली अकादमीमे एकटा विशेषांकक प्रकाशनक समय दू टा प्रिय लोकक कह्नापर सम्पादनक काज देखलनि लेकिन ने नाम भेलनि ने उचित पारिश्रमिक भेटलनि. (पृष्ठ : III /12)

संस्थाक काजमे मौखिक नहि, लिखित सभ किछु होइ छै, अकादमी पत्रिकाक सम्पादनक काज बिना कोनो अधिकारीक आदेशपर करबाक परिणाम जे भ' सकैत छैक सैह भेलनि.कोनो कर्मचारीक व्यक्तिगत अनुरोधक सरकारी काजमे की महत्व भ' सकैत छनि ! 280 रु.के चेक भ' सकैए मार्ग व्ययक नामपर द' देल गेल हेतनि.

13.एकटा प्राध्यापक मैथिली विभाग हेतु 5000 रु. के पोथी ल'क' बिल पर राशि पावतीक रूपमे हिनक हस्ताक्षर ल'क' गेलखिन ई कहिक' जे तुरत राशि पठा देब, मुदा बिसरि गेलखिन. (पृष्ठ : III /39)

एतेक उच्च पदपर आसीन व्यक्तिस वसूली नहि भेलनि से आश्चर्यजनक बात लगैत अछि. पन्द्रह साल बाद भेंट भेलापर स्मरण करौलाक बादो राशि नहि

प्राप्त भेलननि . होइत अछि जे हुनकासँ लगातार पत्राचार कयल गेल रहितनि त ओ अबस्से पठा देने रहितथिन. भ' सकै छै दू बेर अथवा तीन बेर पत्राचार करय पड़ितनि.

एके तरहक गलती बेर-बेर कयल गेल आ तें आनो कय ठाम बकाया राशि बढैत चल गेलनि. (III /25)

पहिल बेर बकायाक अनुभवसँ आगाँ बढल रहितथि त बकाया एतेक नहि बढल रहितनि.

14. कहैत छथि : लेखन कालमे जिनकापर हमर कलम चलैत अछि हुनक श्याम पक्षपर केन्द्रित अवश्य रहैत अछि मुदा हुनका अपमानित करबाक चेष्टा कथमपि नहि.हम मुद्दा आधारित विरोध करैत छियनि चाहे कियो होथि. जीवित छथि तिनकर सोच,व्यवहार-व्यसनपर अवश्य लीखल जयबाक चाही जाहिसँ ओ अपन श्वेत आ श्याम दुनू पक्ष अपन आँखिए देखि सकथि आ अन्तिमो समयमे सन्मार्गक अनुशरण क' सकथि. (पृष्ठ : III / 8)

श्याम पक्ष भेल राति, अन्हार, निन्नमे चल जायब, सूति रहब. जँ समयपर पत्राचार द्वारा अथवा व्यक्तिगत संपर्क द्वारा अपन प्रिय ग्राहक साहित्यकार लोकनिकें जगौने रहितथि त कोनो साहित्यकार-ग्राहकसँ शिकायत नहि रहितनि.

लेखक अपनाकें पत्रकार मानैत छथि, पत्रकारक काज होइछ लोककें समयपर जगयबाक. यदि स्वयं समयपर अपन चूककर्ता साहित्यकार-ग्राहक

लोकनिकें अपन प्रभावी पत्राचार द्वारा जगौने रहितथि त अपनो हानिसँ बचि जैतथि आ हुनको लोकनिकें एकटा कलंकसँ बचा लीतथि.

कय बरखक बाद एहि बातकें प्रकाशमे अनबाक मतलब भेल संख फूकिक' लोककें जगायब. जँ एखनो किनको निन्न नहि टुटलनि त मान' पड़तनि जे पछिला कोनो जन्ममे हिनका लोकनिसँ किछु कर्ज नेने छल हेथिन जे चुका देलनि !

-संपर्क-8789616115

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१२.अजित कुमार झा- 'समय-साल' कैँ अकानैत: शरदिन्दुजीक संपादन ओ संपादकीय

अजित कुमार झा

'समय-साल' कैँ अकानैत: शरदिन्दुजीक संपादन ओ संपादकीय

मैथिलीक द्वैमासिक पत्रिका 'समय-साल' केर जून- जुलाई 2004 अंक मे प्रतिक्रिया स्तंभ मे ' एकटा उपराग: संपादकक नाम' छपल छल। उपराग एतबहि छल जे ओहि लेखक केर कोनो एकटा कथा कैँ अहि पत्रिका मे स्थान नहि भेटल छलै। लेखक कैँ ओहि कथाक भविष्यक चिन्ता छलनि। खैर किछु हद तक स्वाभाविको छैक ई चिन्ता किएक त' जाहि लेख कैँ स्थान नहि भेटैत छैक ओकरा लौटाबय केर प्रथा नहि अछि। खैर पुनः ओहि उपराग दिस आबी जे कि पूरा एक पृष्ठक छल आ अगिला पन्ना मे संपादक जी अर्थात् श्री शरदिन्दु चौधरी जी केर जवाब छलनि। ओहि मे सँ किछु पाँती उद्धृत करय चाहब:

'अपनेक उपराग हमरा प्रेरित एवं उत्साहित कयलक अछि मुदा हमर किछु विवशता सेहो अछि।.....

दोसर बात ई जे 'समय-साल' साहित्यिक पत्रिका नहि थिक से एकर मुखपृष्ठे कहैत अछि। तथापि अपने लोकनिक एकरा प्रति अगाध प्रेमे अछि जे प्रेमवस उपराग दैत छी। उपराग हमरा नीक लगैत अछि तैँ एकरा हम सार्वजनिक क' रहल छी।

मैथिलीक लेखक-प्राध्यापक सर्वज्ञ, सर्वगुण सम्पन्न एवं सर्वकालिक होइत छथि आ प्राय: तैँ सभठामक आसन सुलभ प्राप्त करय चाहैत छथि। मुदा पत्रकारिता एकटा एहन विधा छैक जाहि मे बड़ त्याग तपस्या आ उपेक्षा भेटैत छैक। एही कारणे प्राध्यापक प्रवर लोकनि साहित्यकार, लेखक तँ होयबाक सख पोसैत छथि मुदा अपने बलें पत्रिका चलयबाक साहस नहि क' पबैत छथि। अतिथि संपादक बनि सत्कार पाबि गद्गद् रहैत छथि। एहू सब पर सोची से आग्रह। अपनेक कथाक मादे कि कही - अपने लोकनिक कथा सँ मैथिली कतेक सशक्त भेल अछि से कि कथाक इतिहास नहि कहैत अछि?'

वास्तव मे कोनो पत्रिकाक संपादन बड्ड दुरुह कार्य थिक ओहू मे मैथिलीक। हमरा पास कोनो आँकड़ा त' नहि अछि मुदा जतेक बुझबा मे अबैत अछि ताहि कैँ आधार पर कहि सकैत छी जे मैथिली मे कथा, कविता, गीत, गजल, नाटक एवं आलेख केर पोथी त' धुरझार छपि रहल अछि मुदा पत्रिका आँगुरे पर गनय लायक। मैथिली पत्रिका सब विशेष रूप सँ अल्प जीवी होइत अछि। पाठक केर संख्या लगभग नगण्य कहल जाय। ओहि सँ बेसी संख्या लेखक केर रहैत अछि। पत्रिका छपैत त' अछि मुदा बिकाइत नहि अछि। एहन मे आखिर कोना कोनो पत्रिका दीर्घ जीवी होयत? अपन संतुष्टि हेतु अपन पोथी त' लोग बिलहैते छथि मुदा पत्रिका कोना बिलहल जाओ। मंगनी मे देबैक आ लोग पढ़ि लेताह सेहो नहि होइत छैक। जौँ संभव होइतैक त' एकटा सर्वे करबा क' देखबाक चाही जे भारतवर्ष

मे मैथिलीक कतेक प्राध्यापक छथि आ छोट छिन सँ ल' क' नामी गिरामी कतेक लेखक मैथिली कैँ क्षेत्र मे कार्य क' रहल छथि? अहि सँ इएह जानकारी प्राप्त करबाक अछि जे कि अपन सबहक कोनो भी मैथिली पत्रिका केर ओतेक प्रति बिकाइतो छैक कि? नगण्य ही सही किछु त' विशुद्ध रूप सँ पाठको केर संख्या हेतैक? हमर कहबाक तात्पर्य इएह अछि जे पत्रिकाक संपादन निश्चित रूप सँ बड्ड कठिन कार्य अछि आ अहि कठिन कार्य कैँ तन्मयता सँ करैत रहलनि हँ श्री शरदिन्दु चौधरी जी। एहन नहि जे ओ अपन पोथी नहि लिखलनि।

हिनकर प्रकाशित पोथी केर नाम छन्हि ' जँ हम जनितहुँ' , बड़ अजगुत देखल, गोबरगणेश आ करिया कक्काक कोरामिन' । बस व्यंग्य संग्रह " करिया कक्काक कोरामिन' हमरा पढ़बाक अवसर भेटल। श्री शरदिन्दु चौधरी जी सन् 1981 सँ निरन्तर पत्रकारिता क्षेत्र सँ जुड़ल छथि। 'मिथिला मिहिर' लेल कार्य कयलनि एवं ओहि कैँ पश्चात हिन्दी दैनिक ' आर्यावर्त ' मे फीचर संपादक कैँ रुप मे कार्य कयलनि। एखनधरि लगभग बीसटा सँ बेसी स्मारिकाक संपादन कयलनि अछि। गुवाहाटीक मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समितिक पत्रिका ' पूर्वोत्तर मैथिल ' केर संपादन सँ जुड़ल रहलाह। आजुक चर्चाक हमर मुख्य विषय अछि मैथिली द्वैमासिक पत्रिका ' समय-साल ' जकर संपादक छलथि श्री शरदिन्दु चौधरी जी। एक तरहें कहल जाय त' संपादन कला हिनका विरासत मे भेटल छन्हि। 10 फरवरी 2000 कैँ मैथिली द्वैमासिक पत्रिका "समय-साल' केर पहिल अंक केर प्रकाशन केर साथ मैथिली पत्रकारिता मे एकटा न'ब अध्याय जुड़ि गेल छल। सन् 2003 सँ ल' क' 2008 धरि अहि पत्रिकाक हम नियमित पाठक छलहुँ। प्रतिक्रिया, संपादकीय, यत्र-तत्र-सर्वत्र, समसामयिक, खेल, सिनेमा, पोथी परिचय एवं स्तरीय आलेख सब अहि पत्रिकाक मुख्य आकर्षण छल। मैथिली मे सामाजिक एवं राजनैतिक

चेतनाक संवाहक छल ई पत्रिका। एहन नहि छैक जे अहि पत्रिका मे हमरा सब किछु नींकें बुझायल मुदा तखन इहो सही छैक जे नींकें बेजाय किनको व्यक्तिगत सोच होइत छैक। जे हमरा नींक लगैत अछि से सबकेँ नींक लगतन आ जे हमरा बेजाय लगैत अछि से सबकेँ बेजाय लगतन से त' संभव नहि छैक। मुदा एत्तह हम अपना नजरि मे जे नींक बुझायल तकरा नींक कहब आ जे बेजाय बुझायल तकरा बेजाय कहब। विभिन्न तरहक कथा-कहानी, गीत-गजल, समसामयिक विषय पर आलेख आ संपादकीय अद्भुत लागल। तखन राजनीतिक रुप सँ एकटा पार्टी केर प्रति झुकाव सेहो बुझायल। प्रतिक्रिया मे किछु अहि विषय पर पत्र सेहो समय-समय पर अभरल। हम 'समय-साल' केँ मात्र सामाजिक एवं राजनैतिक चेतनाक संवाहकेटा नहि मुदा एकटा पारिवारिक पत्रिका सेहो बुझैत छी आ हमरा ख्याल सँ एहन पत्रिका मे निधोख भ' क' अश्लील छवि त' रहिते छल मुदा अंतिम पृष्ठक आलेख सेहो अश्लीलता सँ भरल रहैत छल। 'लतिका' संभवतः छद्म नाम रहल होयत जाहि नाम सँ ई आलेख अबैत छल। ई आम पाठक केर पसन्द छल आ कि एहि तरहक नियमित स्तंभ कोनो मजबूरीवश छल से नहि जानि। हमरा ख्याल सँ एहन सामग्री एवं छवि अहि पत्रिकाक मान-सम्मान केर अनुरूप नहि छल। ओना नींक अथवा बेजाय ई किनको भी व्यक्तिगत सोच होइत छैक।

संपादकीय निस्संदेह समसामयिक विषय पर निधोख लिखलनि अछि। संबंधित व्यक्ति केँ ठेस त' पहुँचल हेतनि मुदा एकटा संपादक जौँ उचित बात केँ निधोख भ' क' नहि लिखता त' फेर केहन पत्रकारिता? जहाँ मैथिली पत्रिका केँ अल्प जीवी होयबाक श्राप छैक ओत्तह लगातार चौदह वर्ष धरि 'समय-साल' केर प्रकाशन बिनु लगन आ मेहनत केर कोना संभव होइत? अहि दुरुह काज लेल हिनक जतेक प्रशंसा कयल जाय से थोड़बे होयत। विभिन्न अवसर पर विभिन्न विषय सँ संबंधित हिनकर संपादकीय

केर किछु अंश बानगी के रुप मे अपने सबहक समक्ष प्रस्तुत क' रहल छी आ आशा करैत छी जे विविध विषय पर हिनक बेबाक टिप्पणी हृदय कैँ झंकृत अवश्य क' देत।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार सभ बेर किछु तीत, किछु मीठ बात ल' क' अबैए मुदा अहि बेरक पुरस्कारक क्रम मे जे बात सभ सोझां आयल अछि से स्पष्ट क' देलक अछि जे पुरस्कारक प्रतिस्पर्धी सँ ल' क' निर्णायक मंडलक सदस्य लोकनि तक एके रंग मे रंगल सियार छथि जे सोझे डेगे चलिये ने सकैत छथि।

फरवरी-मार्च 2003

प्रायः क्रिकेट छोड़ि आन कोनो क्षेत्र नहि अछि जाहि मे कर्म सँ पहिने देबाक एहन अन्धाधुन घोषणा होइत हो। लसख टाका कैँ के पूछय करोड़क करोड़ भारतक विभिन्न कम्पनी आ सरकार देबाक घोषणा पहिने क' देने छल। परिणाम ई भेल जे निर्णायक मैच मे बेसी खेलाड़ी गेन्द नहि देखि करोड़ोक राशि देखय लागल छलाह मुदा जखन सपना टुटलनि तँ गेन्द विकेट उखाड़ि लेने छलनि आ ओ लोकनि अपन भाभट समेटि भारतीय दर्शकक अनुगूंज 'कम आन इंडिया' सुनि बिना कप नेने वापस आबि गेलाह।

अप्रैल-मइ 2003

जहिया-जहिया जनता जागल अछि तहिया-तहिया सरकार उलटल-पलटल अछि, प्रशासन नतमस्तक भेल अछि। सामाजिक परिवेश मे राजनीतिक गुंडागर्दीक विरोध मे जावत स्वयं जनता ठाढ़ नहि होयत तावत अहिना लाठी पर तेल पियबैत सरकार पर बैसल एहन-एहन नेता जनता कैँ अपन सुख-सुविधा जुटयबा लेल डेंगबैत रहत आ शासन पर बैसि कुहैत रहत।

जून-जुलाई 2003

बिहार मे नेताक कमी नहि, अभिनेताक कमी नहि, चिकित्सक आ अभियंताक कमी नहि, बुद्धिजीवी महंथक कमी नहि अछि। मुदा करोड़ो लोकक बीच मे मनुक्खक कमी भ' गेल अछि जे अपन मातृभूमि, जन्मभूमिक विषय मे सोचि सकय, किछु क' सकय, ओकर रक्षा क' सकय।

अक्टूबर-नवम्बर 2003

ई कोनो न'ब घटना नहि अछि जाहि मे बिहारीक सभ तरहें मान-मर्दन भेल अछि, क्षति भेल अछि, बिहारी लोकक बलिदान भेल अछि। जँ बिहार सरकार अपन नागरिकक सुरक्षा अपन देश मे करयबाक लेल सक्षम नहि भ' सकत, बिहारी अस्मिताक रक्षा नहि क' सकत, अपन युवा सदक्तिक मान-अपमानक अनुभव नहि क' सकत तँ अहि सँ दुखद विषय की भ' सकैछ?

दिसम्बर-जनवरी 2003-04

ध्यान देबाक बात ई थिक जे जे नेता लोकनि पाँच वर्ष धरि जातिवाद, सम्प्रदाय, हिंसा, भ्रष्टाचार, वंशवाद आदिक विरुद्ध विषवमन करैत नीति, सिद्धांत, लोकाचार, विचारक बात एवं समाज सेवा अपना कैँ सर्वश्रेष्ठ घोषित करैत छलाह से चुनावक देहरि र अबितहि देश, समाज, क्षेत्रक मान-सम्मानक परवाहि कयने बिना दल बदल सँ ल' क' सभ तरहक छल-छद्म अपना नीति-सिद्धांत कैँ त्यागि विजय श्री पयबा लेल उताहुल छथि।

अप्रैल-मइ 2004

अपन भाषिक परिचिति बनल रहय ताहि हेतु हमरा लोकनि कनिकों चिन्तित नहि रहलहुँ, आबो नहि छी। परिणाम सभकेँ बूझल अछि। मिथिलाक्षर लुप्त भ' गेल आ सभ निश्चिंत छी। मैथिलीक साहित्यकारगण, प्रध्यापक लोकनि, शिक्षक लोकनि अथवा ई कही जे मैथिली लेखन सँ जुड़ल समाज मात्र साहित्य अकादेमी, मैथिली अकादेमी, भारतीय भाषा संस्थान आ अन्य मैथिली संस्था दिस चकभाउर दैत निश्चिंत भ' जाइत अछि। .....

मैथिली बेर-बेर जे संकट मे पड़ैत अछि, सीता जँका कहियो अपहृत होइत अछि तँ कहियो बनवास भोगैत अछि तकर मूल कारण ई अछि जे मैथिली भाषी अपन मैथिली केँ हृदय सँ लगा क' रखबा मे अक्षम रहल अछि, लाभ लेबा लेल एकर उपयोग कयलक अछि, एकर परिचिति सँ अपन परिचिति बनयबाक प्रयास नहि कयलक अछि।

अप्रैल-मइ 2006

सवाल उठैत अछि जे सरकार बेर-बेर एहि आरक्षणेक मामिला ल' क' देशोद्धारक प्रयत्न किएक करय चाहैत अछि? जातिहीन, वर्गहीन आ धर्मनिरपेक्षताक असूल पर चलनिहारि नेता लोकनि किएक सार्वजनिक संस्थान मे जातिक आधार पर नामांकन अथवा नोकरीक पर्चा बटबाक लेल उताहुल रहैत छथि। आजुक स्पर्धात्मक युग मे विकासक एक्केटा मार्ग सुरक्षित छैक - मेधा शक्तिक सम्मान। आ जँ से नहि कयल जायत तँ ई शक्ति नकारात्मक पथक अनुसरण करत आ परिणाम होयत हिंसा, अशांति आ कानूनक उल्लंघन ।

जून-जुलाई 2006

विकासक आड़ मे प्रकृति सँ छेड़छाड़ करबाक कारणे आइ वर्षा ऋतु अपन चक्र बदलि रहल अछि, पानि पातालोन्मुखी भ' गेल अछि, जंगल आ पहाड़ अपन प्रवृति, प्रकृति आ स्वरूप त्यागि रहल अछि, सूर्य अपन ताप मे वृद्धि कयलक अछि तथा भूमि अपन उर्वरता कैँ गमौने जा रहल अछि।

अप्रैल-मइ 2007

आब प्रश्न उठैत अछि जे जाहि देशक राष्ट्रपति महिला होअय, प्रधानमंत्री-मुख्यमंत्री सहित अनेक पद कैँ महिला सुशोभित करय ताहि देशक युवती सामाजिक-पारिवारिक जीवन प्रारंभ करबाक पहिने अपना कैँ मात्र एकटा वस्तुक रुप मे ठाढ़ पाबय ताहिठाम ई दंभ भरब जे नारीक उत्कर्ष चरमोत्कर्ष पर अछि, नारी शक्ति अलौकिक रूप मे प्रतिबिम्बित भ' रहल अछि - कतेक हास्यास्पद लगैत अछि।

अगस्त-सितम्बर 2007

- संपर्क-9472834926

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१३.अशोक- शरदिन्दु जी

अशोक

शरदिन्दु जी

वर्ष १९८७ ई. के गप छी। शरदिन्दु जी ओहि समय मिथिला मिहिर मे उपसम्पादक रहथि। हम एकटा कथा मि. मि. मे प्रकाशन लेल पठौने रही। शरदिन्दु जी कहने रहथि जे ओ कथा छपि रहल अछि। मुदा ओ कथा हमरा भीतर एखन चलिए रहल छल। लगैत रहय जे कथाक अन्त ठीक नहि भेल अछि। ओहि मे हम चारि-पाँच पाँती आर जोड़बाक निर्णय लेलहुँ। एक दिन हम ओ पाँती सभ लीखि कऽ मिथिला मिहिर कार्यालय पहुँचलहुँ। शरदिन्दु जी बैसल रहथि। हुनका कहलियनि तऽ ओ कनेकाल लेल गुम भऽ गेला। कहलनि जे, 'आब तऽ पूरा अंकक प्रूफ फाइनल भऽ गेल अछि। छपै लेल चल गेल अछि।' हम फेर हुनकासँ कोनो उपाय निकालबाक अनुरोध केलहुँ। जँ कोनो गुंजाइश होइ तऽ देखिअउ। ओ कनेकाल सोचलनि आ कहलनि, 'ठीक छै। चलू प्रेसमे नींचा। जँ छपबाक प्रक्रिया शुरू नहि भेल हेतै तऽ ओहीठाम करेक्शन कऽ देबै।' हम सभ नीचामे प्रेसमे गेलहुँ। बड़का-बड़का मशीन सभ रहै। घर्र-घर्र आबाज भऽ रहल छल। ककरो आबाज सुनबामे दिक्कत होइत रहै। ओही बीचमे ओ कोनो कर्मचारी सँ बात कऽ देखलाहा प्रूफ के कागज हमरा आनि कऽ देलनि। देखलहुँ प्रूफ मे संशोधनक हिसाबसँ कम्पोजर द्वारा करेक्शन सेहो भऽ चुकल छैक। छपबाक प्रक्रियामे आब अगिला काज बाँकी रहै। हम ओहीठाम ठाढ़े-ठाढ़ कथाक अन्तमे पाँच-छहटा

पाँती जोड़लहुँ। कम्पोजर लगले कम्पोज केलनि। शरदिन्दुजी प्रूफ देखि कऽ ओ.के. केलनि। ओ कथा रहय 'नचनियाँ', जे मिथिला मिहिरमे एहि प्रकारेँ प्रकाशित भेल।

शरदिन्दु जी सँ एहि घटनाक पुर्वेसँ परिचय-पात रहय। हमरा हुनकर सानिध्य आ बात-विचार नीक लगैत रहय। ओ एक पत्रकार के रूपमे साँच-साँच बात कहबाक आ लिखबाक पक्षपाती रहथि। ककरो ठकुरसुहाती करब, जेना ओ सिखनहि नहि छथि। सोझ-सोझ, साँच-साँच गप बाजब हुनका पसिन्न छनि। एहि कारण ओ बहुधा विभिन्न लोकक द्वारा निन्दा-आलोचना सुनैत रहला आ सहैत रहला अछि। कतेक लोक हुनकासँ दूरी बना लैत रहल। मुदा शरदिन्दु जी छथि जे बात हुनका अनसोंहात लगैत छनि, तेकरा ओ व्यक्त करैत रहैत छथि।

बाद के समयमे ओ इण्डियन नेशन संग निकलैत आर्यावर्त दैनिक अखबार आ मिथिला मिहिर मे सेहो काज केलनि। मिथिला मिहिर मे ओ अन्त धरि रहथि। ओकर बन्द हेबाक कारण सभसँ क्षुब्ध छला। अन्ततः हुनकर नोकरी सेहो एहि क्रममे छुटि गेलनि। वस्तुतः हुनका संग मैथिली साहित्य, ओकर विकासमे योगदानक जीवित इतिहास आ व्यक्तिक रूपमे स्पष्टवादिताक विरासत छलनि। एहि बात के ओ कहियो ने बिसरला। मैथिली साहित्यमे साहित्यकारक बहुत कम परिवारमे दोसर पीढ़ीक लोक सहज रूपमे ओहि विरासत पर गौरव-बोध करैत, ओकरा सम्हारि कऽ रखबाक लेल आ आगू बढ़ेबाक लेल प्रतिबद्ध रहला। शरदिन्दु जी एहन व्यक्ति छथि जे नहि केवल ओकरा सम्हारि कऽ रखलनि अपितु मनोयोगसँ ओकरा व्यापक बनेबाक लेल सचेष्ट रहला अछि। शेखर प्रकाशन ओकर प्रतिफल छी। मैथिली मे ई एक विरल उदाहरण थिक जे अपन पिता सुधांशु 'शेखर' चौधरीक बाद एक सुयोग्य पुत्र रूपमे शरदिन्दु जी समय के चिन्हैत, मैथिलीक प्रयोजन के गमैत तदनुसार काज करबाक लेल अपना के झोंकि देलनि। हुनकर आर्थिक स्थिति

सुदृढ़ नहि रहनि। बहुतो अभाव सभ रहनि मुदा बिना कोनो समझौता के ओ परिवारक भरण-पोषण संग मैथिलीक काजमे लगातार लागल छथि। से सभ अपन शर्त पर।

शेखर प्रकाशन नामसँ ओ पटनामे मैथिली पोथीक दोकान सेहो खोललनि स्टेशन लग। एहि व्यवसायमे ओ सम्पूर्ण निष्ठाक संग लागल छथि। पोथी सभक प्रकाशन केलनि। विभिन्न प्रकाशक सभक पोथी के विक्री केलनि। जखन यू.पी.एस.सी. आ बी.पी.एस.सी. मे मैथिली साहित्य सम्मिलित भेल तऽ ओकर सिलेबस के अनुसार पोथी सभ प्रतियोगी छात्र सभ के उपलब्ध करौलनि। सिलेबसक हिसाबसँ पोथी सभ लिखबा कऽ वा सम्पादित करा कऽ ओकर प्रकाशन केलनि। जे पोथी 'आउट आफ प्रिंट' भऽ गेल छल, ओकर फोटो कॉपी बना के छात्र सभ के उपलब्ध करौलनि। कतेको छात्र सभ के उपयोगी सुझाओ सभ दऽ अथवा मार्गदर्शन कऽ परीक्षामे सफल हेबामे मदति केलनि। एहन किछु छात्र सभ कैँ हम हुनका एहि लेल अपूर्व सम्मान दैत देखने छी।

शरदिन्दु जी मैथिली सँ जुड़ल सरकारी आ गैरसरकारी संस्था सभक अनटोटल बात सभ पर व्यवस्था सम्बन्धी कुप्रबन्ध सभ पर सदैव लिखैत रहला अछि। से चाहे साहित्य अकादेमी हो वा मैथिली अकादमी अथवा चेतना समिति, लेखक संघ हो। हुनकर तर्क सभ अचूक होइत छनि। ओ कोनो व्यक्तिक पाखण्ड वा अनटोटल काज पर विस्तार सँ लिखैत रहल छथि। से चाहे पत्रकारक रूपमे अथवा व्यंग्यकारक रूपमे। एहि सँ कखनहुँ के हमहूँ नहि बँचल छी। हमर एक लेखमे तैंतालीसटा सन्दर्भ-संकेत रहय। ओहि पर ओ चारि पाँतीक आलोचनात्मक कविता लीखि ओही पत्रिकामे पाठकीय पन्नामे छपौलनि। चेतना समितिक कोनो काजक क्रममे जँ हमर कोनो क्रियासँ हुनकर असहमति रहलनि तऽ अपन लेखमे ओकर चर्च केलनि। ई कहब जे एहिसँ हमरा कोनो दुख नहि होइत छल तऽ से बात नहि, दुख कनेकाल लेल

अवश्य होइत छल। मुदा शरदिन्दु जी के हम चिन्हैत रहियनि, एहिमे हुनकर कोनो अन्यथा भाव नहि रहल करनि, तेँ हुनका संग बात-व्यवहारमे कोनो अन्तर कहियो नहि आयल। ओ हमरा कतेको अवसर पर सहायता सेहो खूब केने छथि। सुझाओ देने छथि। से बिना कोनो लाग-लपेट के। हमरा लगैत छल जे ओ उचित कहि रहल छथि। हमर मान-सम्मान लेल सेहो ओ गुप्त रूपसँ सक्रिय रहला अछि। अपना प्रसंगक ई सभ बात एहि कारणे कहि रहल छी जे एहि सँ शरदिन्दु जी कैँ बूझल जा सकैत अछि।

ओ समाचार-विचारक पत्रिका 'समय-साल'क कतेको वर्ष धरि सम्पादन केलनि। मैथिली पत्रकारिता केहेन भऽ सकैत अछि, से उदाहरण एहि सँ ओ कायम केलनि। ओ पोथी सभक सम्पादन केलनि। व्यंग्य सभ लिखलनि। अपन जीवनानुभव के छोट-छोट टिप्पणीक रूपमे दर्ज कऽ किताब छपौलनि। बहुत दिन धरि हुन्दुस्तान अखबारमे 'ठाँहि-पठाँहि' कालममे मैथिलीमे व्यंग्य लिखैत रहला। एही संग ओ मैथिलीमे पत्रकारिता लेल नीक योगदान करबाक हेतु पत्रकार के सम्मानित करबाक उद्देश्यसँ 'शेखर पत्रकारिता सम्मान' सेहो दैत रहला अछि।

एम्हर ओ किछु दिन खूब अस्वस्थ रहला। कठिन परिश्रम नहि कयल होइत रहनि, तथापि जतबा सम्भव भेलनि मैथिलीक काजमे संलग्न रहबे केलाह। प्रयत्नशील रहला। हुनकर शेखर प्रकाशन सभ दिन साहित्यकार सभक लेल, पाठक ओ छात्र सभ लेल उपयोगी रहल अछि। पटनाक एकमात्र मैथिली लेल महत्वपूर्ण स्थान अछि शेखर प्रकाशनक ओ स्थान जतऽ शरदिन्दुजी बैसल रहैत छथि। बहुधा समय भेटला पर अथवा कोनो प्रयोजन भेला पर हम ओहिठाम जाइत रहल छी। गति-विधि सभ बुझैत रहल छी। शरदिन्दु जी के मनोयोगसँ सुनैत रहल छी। शेखर प्रकाशनक एहेन महत्ताक श्रेय शरदिन्दुजीक एहन व्यक्तित्व के जाइत छनि। हुनका संग चलैत विरासत के जाइत छैक। पटनाक जीवनमे, मैथिलीक कार्यकलापमे बहुतो व्यक्ति

सभक सहभागिता-सहयोग हमरा भेटैत रहल अछि, से एक उचितवक्ता मित्र रूपमे शरदिन्दुजी सँ सेहो लगातार भेटैत रहल अछि। से हमरो लेल एक महत्वपूर्ण बात छी।

संपर्क-8986269001

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१४.शिवशंकर श्रीनिवास- जेहने मधुर तेहने दृढ़

शिवशंकर श्रीनिवास

जेहने मधुर तेहने दृढ़

ओहि दिनमे शरदिन्दु चौधरी मिथिला-मिहिरक संपादक मंडलीमे रहथि।

१९८२-८३ केर गप्प छियै। तहिया मिथिला-मिहिर साप्ताहिक प्रकाशित होइत रहै। ओहि समयमे मिहिर कथा विशेषांक प्रकाशित करैत रहए। दू-तीन मास पहिनेसँ ओहि विशेषांक लेल प्रचार-प्रसार होइत रहै। कथाकार लोकनि कथा पठबै जाथिन। ओहि विशेषांकमे कथा प्रकाशित हएत ई बात ओहि काल हमरा सन कथाकारक लेल बहुत प्रसन्नताक विषय रहै। एकटा उत्कंठा पहिने होइ जे हमर कथा आबि रहलैए कि नहि।

हम पटना गेल रही। मिथिला-मिहिरक कार्यालय गेल रही। देखलहुँ गोर-नार छड़हरे सुंदर युवक बैसल किछु लिखैत हमरा दिस तकैत कहलनि- "आउ श्रीनिवासजी"। ओ युवक आर केओ नहि शरदिन्दु चौधरी रहथि।

ओना हमरा शरदिन्दुजीसँ भेंट-घाँट छल। हमरा चिन्हैत छलाह। किछु-किछु कएलाक बाद पुछलियनि-कथाक अंक आबि रहलैए? ओ उत्तर देलाह- हँ

अगिला सप्ताह बहरा जाएत। मुदा, एखन ई नहि कहब जे कोन-कोन आ किनकर-किनकर कथा आबि रहलैए।

"नहि कहू", हम पुनः पुछलियनि- हमर कथा भेटल की? ओ बिहुँसि उठलाह। शरदिन्दुजीक बिहुँसब ई सहजहि प्रतीत करा देत जे ओ अपन भंगिमासँ स्नेह प्रकट भऽ रहलाह। आ वएह भंगिमासँ कहलनि-नीक कथा अछि। कथाक कथ्य सेहो मार्मिक अछि "आ...."। हमरा हुनक एहि "आ.."पर अटकब हमर उत्कंठा बढ़ा देलक। हम पुछलियनि-की? ओ कहलनि-"जाहि कथाक प्रत्येक पंक्ति कथाकेँ आगू बढ़ाएब ओ कथा पढ़बामे ओतेक रुचि दैत अछि। एहन कथाक पाठकीयता बढ़ि जाइत अछि। से अहाँक कथामे अछि। हमरा नीक लागल"।

शरदिन्दुजीक उक्त उक्ति हमरा बहुत मार्मिक लागल। ओ बात-बातमे कथाक विशेषताक बहुत बात कहि गेलाह। हम आगू कथाक उक्त बात धेआन रखैत रहलहुँ। कथा लिखैत काल अनायासे हमरा हुनक ओ "बात" आ "ओ" मोन पड़ि जाइत रहलाह।

हमरा लगैए ई आलोचना विधामे जँ लिखतथि तँ मैथिली आलोचना साहित्यकेँ बहुत लाभ होइत। एक बेर नहि आनेको बेर ओ एहन गप कहने हेता जाहि आधारपर हम ई कहै छी।

एक बेर ओ कहलनि जे कोनो लेखककेँ एक बेर सुच्चा पाठक रूपमे अपन रचनाकेँ पढ़क चाही, ओ पढ़लाक बाद अपने अपन रचनाक प्रति निर्णय करथि।

शरदिन्दु सदा हमरा गंभीर आ सचेतन लगलाह।

एक बेर हमरा ओ कहलनि जे अहाँ गोविन्द दासक जतेक पद छनि ओकर व्याख्या कऽ कऽ दिअ। पोथी रूपमे आबि जेतै तँ छात्र सभकेँ बड़ उपकार हेतै।

ओकर किछु दिनक बाद हम से करऽ लगलहुँ। किन्तु किछु दिनपर किशोर केशव कहलनि जे "गोविन्द दासपर लीखि कऽ दिअ"। शरदिन्दुजीसँ हमरा गप भेल अछि अहाँ लिखै छी"। हम कहलियनि- हँ, किन्तु हम तँ हुनक प्रत्येक पदक व्याख्या करैत रहल छी। किशोर कहलनि- नहि एखन आलेख दिअ। आ से हम हुनका लीखि पठा देलियनि आ ओ अक्षर-पुरषमे छपल, किन्तु ओ व्याख्या अनठा गेल।शरदिन्दुजीसँ अहाँक कतबो मधुर संबंध अछि, यदि अहावक रचना नीक नहि अछि तँ ओ नहि छपताह। जखन ओ "समय साल" केर संपादक रहथि तँ कतेको रचनाकार अपन रचना नहि छपबाक कारणे हुनका पत्र लिखथिन। ओहि पत्रकेँ ओ पाठकीय कॅालममे प्रकाशित करथि आ ओकर उत्तर सेहो देथि। अपन निर्णयपर ई सदा दृढ़ रहऽ बला लोक रहलाह। कोनो स्वार्थसँ उपर ई साहित्य ओ साहित्य जगत कार्यकेँ रखलनि। हिनक सभसँ खूबी अछि जे हिनकासँ जँ कोनो चूक भेलनि तँ ओ ओहि चूककेँ सार्वजनिक करैत क्षमा मँगैमे सेहो ई नहि हिचकता। एहन कतेको उदाहरण देखल-सुनल अछि। हिनक पोथी " हमर अभागः हुनक नहि दोष" पढ़ि सेहो ई बात बुझि सकै छी।

एक बेरक गप्प कहै छी, हिनक संपादित पोथी "मैथिली गद्य गौरव" हम एकटा विद्यार्थीक हाथमे देखलियै। ओ लऽ हम पढऽ लगलहुँ तँ देखलहुँ कथापर एकटा आलेख अछि। लेखक एकटा प्रसिद्ध लेखक छथि। ओ लेख पढ़ैत लागल जे ई तँ हमर लेख छी। हम तात्काल शरदिन्दुजीकेँ कहलियनि जे एना किएक?

ओ कहलनि अहाँक लेख छी तकर प्रमाण?

"हमर ई लेख नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडियासँ प्रकाशित पोथीक संपादकीय अंश थिक" ओ कहलनि- हम थोड़े कालमे फोन करै छी, एखन राखू।

किछु कालक बाद हुनक फोन आएल जे "ठीके अँहीक रचना छी। हमरासँ गलती भेल. जे कही।

हम कहलियनि- गलती एहिना भऽ जाइ छै। कोनो बात नहि। एकरा ठीक कऽ दियौ।

"ओ ठीक भऽ जेतै। किन्तु जाहि व्यक्तिक नाम एहिपर छनि हुनका पोथी देलियनि तँ धन्यवाद दैत रचना देखलीह आ पोथी राखि लेलनि। किछु कहलनि नहि। अद्भुत अछि"।

हमरा हँसी लागल।

ओ कहलनि- अहाँ हँसै छी श्रीमान। हम तँ लज्जित छी।

नहि ई कहि हम गपइ बदलि देल किन्तु ओ बेर-बेर एही गपपर अबैत रहलाह।

एक सप्ताहक बाद हम हुनक प्रकाशन गेलहुँ तँ देखल जे हमर नाम छापि पोथीक ओहि आलेखक लेखक क्रममे साटि देने छलाह। बादक संग्रहमे तँ सहजहिं हमर नाम आबि गेल। कहबाक जे एतेक तत्पर आ उचित निर्णयकेँ कार्यान्वित करबाक क्षमता जे हुनकामे छनि से कदाचिते लोकमे भेटत।

शेखर प्रकाशन कहू वा हुनक पोथी विक्रय केंद्र, ओतऽ जहिया गेलहुँ तहिया ओ ततेक हिलसि कऽ स्वागत केलनि जे बुझाएल हमहूँ लेखक छी। अद्भुत

स्नेह आ से तेहन जे सतत स्वजनक बोध होइत रहल। ई असलमे हुनक भाषा-साहित्यक प्रति प्रबल प्रेम अछि।

हुनका जीवनमे नीक नौकरी भेल रहनि किन्तु ओ नहि गेलाह, ओ अपना लेल उक्त बात (आर्थिक दृष्टिएँ) नीक नहि केलनि किन्तु मैथिली साहित्यिक विकास लेल हुनक ओहि नौकरीमे नहि जाएब बहुत फलदायी भेल। खास कऽ कऽ छात्र सभहक लेल हुनक प्रकाशन जतेक कार्य केलक अछि ओ प्रसंशनीय अछि।

शरदिन्दु चौधरी माने स्नेहसँ भरल लोक। एकटा एहन लोकजेँ अपन भाषा-साहित्य संवर्धन लेल अपब भविष्यकेँ बुझितो अपन पूरा जीवन लगा देलनि।

एहन सत-पुरुषकेँ अभिननंदन करैत हुनक स्वस्थ जीवनक शुभकामना करैत छी।

- संपर्क-9470883301

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१५.केदार कानन- हमर शरदू भैया

केदार कानन
हमर शरदू भैया

के लिखताह अहाँ पर शरदू भैया? सबहक तँ थौआ उठौने छियै अहाँ। बिढ़नीक खोता आ सांपक बिल मे जानि-बूझि कैँ के हाथ देतै। सभक भीतर डर... साहित्य मे जे सभ अपन कल्ला अलगौने छथि, बड़का-बड़का मठ पर सँ जे डाकनि दऽ रहल छथि आइ, अहाँ ओकर आदि अन्त कैँ जनैत छी। सबहक बारे मे खुल्लम-खुल्ला लिखने छी, जतऽ बजबाक अवसरि भेटल, ततय ठांहि-पठांहि कहने छी।

तैँ के लिखताह अहाँ पर। अपने पयर पर कुड़हरि चलौने छी। हम की कहब आ की लिखब?

ओ कहैत छथि, राम-राम! की शरदू-फरदू पर लिखब अहाँ? कोनो दोसर काज नहि अछि अहाँ कैँ?

नहि भाइ, एखन कोनो दोसर काज नहि अछि हमरा। शरदू भैया पर जँ नहि लिखब, तँ आत्मा धिक्कारैत रहत हमरा। तैँ हुनका पर लिखब हमरा लेल आवश्यक अछि।

आइये भोरमे अपन मित्र आ व्यंग्यकार वैद्यनाथ विमल जी सँ गप होइत छल। हम कहलियनि जे शरदू भाइ पर लिखलह? ओ कहलनि जे ओ हमर ततेक आत्मीय स्वजन छथि जे हमरा सँ लिखले नहि हैत। कतऽ सँ शुरू करब, कतय खतम करब। एक तरहेँ बात ओ ठीके कहैत छथि।

मोन पड़ैत अछि जे १९८०-८१ क आसपास हुनका सँ परिचय भेल छल। जखन पटना मे पढ़ैत रही। कहियो काल ओ अभरथि। ओना सघन-सामीप्य तँ बहुत बाद मे भेल। आ जखन भेल तँ हुनक सूचीभेद्य अन्हार मे डूबल सीढ़ी पर सँ होइत जखन ऊपर जाइ तँ शेखर प्रकाशन सँ पहिने सिलाइ मशीनक घर्र-घर्र मे गोंतल दू-तीन टा मानुष केँ देखी। ओ सभ अपन मूड़ी निहुरौने सिलाइ-फराइक काज मे लागल रहै छल। ठीक तकर बाद बला कोठली मे शेखर प्रकाशनक बोर्ड।

अन्हार मे डूबल ओहि सतरह टा सीढ़ीकेँ पार करैत ऊपर मे इजोते-इजोत सँ अहाँक भेँट होइत। ज्ञान आ विद्या-वैभवक इजोत। चारूकात किताबक रैक आ बीच मे कुरसी पर उज्जर दाढ़ी-मोंछ मे बैसल शरदू भाइ। आउ, आउ-कहि स्वागत करैत। आत्मीयता मे बोरल शब्द, मिठास भरल। बिस्कुट-चाह मंगबैत छी। चटकी सँ उठि ओहि कोठली सँ लागल दोसर कोठलीक रेलिंग पर सँ बिस्कुट-चाहक आर्डर।

एकटा दुब्बर-पातर सनक छौंड़ा चाह आ बिस्कुट लेने हाजिर। पहिने, बहुत पहिने शीशाक गिलास मे चाह अनैत छल बाद मे कागत बला कप मे आबऽ लागल।

जहिना-जहिना साँझ गहराइ, लेखक लोकनिक (जिनक संख्या कमे होइ) अबरजात शुरू होइ। ओतहि हमरा अनेक खेप भाइ वैद्यनाथ विमल, डॉ. योगानन्द झा, बच्चा ठाकुर जी, जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल जी सँ भेंट होइ।

बच्चा ठाकुर जी बरमहल भेटैत छलाह। ओ लगभग प्रतिदिन अबैत छलाह। हुनक ओजस्वी भाषण हिन्दी, मैथिली, अंगरेजीमे धाराप्रवाह। बीच-बीच मे संस्कृतक पुट। हम चकित रही, हुनका एहि चारू भाषाक कतेक रास कविता यादि रहनि। ओ कतहु अटकैत-रुकैत नहि छलाह। अलबत्त।

ई सब किछु शरदू भाइक सान्निध्य-लाभक सौजन्यसँ हमरा सहजहि प्राप्त भऽ जाइत छल।

प्राथमिक शिक्षा प्रशिक्षण महाविद्यालय, बाढ़ मे कार्यरत रही। प्रतिदिन बाढ़-पटना आ पटना सँ बाढ़। दू-अढ़ाइ बर्खक अबरजात। पटना रेलवे स्टेशन पर उतरि सोझे शेखर प्रकाशन पहुँचैत रही। लगभग प्रतिदिन। शनि-रवि तँ गाम चलि जाइत रही।

ओत्तहि एकदिन साँझ मे पहुँचलहुँ तँ शरदू भाइ सूचना देलनि जे महाप्रकाश जी अस्वस्थ भऽ कऽ एकटा प्राइवेट अस्पताल मे भरती छथि। फेर ओत्तहिसँ, हुनके संग महाप्रकाश जी कैं देखय गेल छलहुँ।

मोन पड़ैत अछि माया बाबूक अस्वस्थताक खबरि वैह देने रहथि। हुनक हृदयक तार सब लेखक सँ जुड़ल रहनि। हुनक संवेदनशीलताक अनेक खिस्सा मोन पड़ैत अछि। ओ सबहक लेल फिफिरिया कटैत रहथि।

सुनल अछि जे मार्कण्डेय प्रवासीजीक स्थायी अड्डा शेखरे प्रकाशन छलनि अन्तिम समयमे। हुनका लेल शेखर प्रकाशनक दोसर कोठलीमे बजाप्ता एकटा खटिया आ ओछाइनक प्रबन्ध शरदू भाइ कऽ देने छलाह, जतय दूपहरक बाद हारल-थाकल प्रवासी जी आबि कऽ आराम करैत छलाह।

शरदू भाइ सबहक सोह रखैत छथि। वैचारिक भिन्नताक बात अलग थिक, ओतय ओ कोनो प्रकारक समझौता नहि करताह। हुनका दिमागमे जे

बात सही लगतनि, ओ सैह करताह। एकदम अडिग-अविचल। हुनक रीढ़क हड्डी तनल रहतनि, झुकबा लेल तैयार नहि।

कतेक रास मैथिलीक लेखक हुनक पाइ मारि लेलकनि, पोथी छपबाय पाइ नहि देलकनि। चालीस-पैंतालीस फर्मा टाइप करबा लेलकनि, भुगतान नहि केलकनि। किछु गोटेकेँ जीवनक तन्नुक क्षणमे बढ़ि-चढ़िकेँ सहयोग केलनि, मुदा सहयोग लऽ कऽ ओ सब विमुख भऽ गेलाह। आब शरदू भाइकेँ के पूछैत अछि? ओ अपन घर, ई अपन घर।

मुदा, सहयोग करबाक जकरा लुतुक लागल छैक, ओ मानय बला नहि। एखनो सहयोगक मुद्रा मे ओ बैसल रहैत छथि।

ओ एकान्त सेवक जकाँ मैथिलीक सेवा मे अहर्निश लागल छथि। शरीर आ स्वास्थ्य संग नहि दैत छनि मुदा तखनो ओ मैथिलीएक चिन्ता मे अपस्यांत रहताह।

मैथिली पढ़य बला लेल, बी.पी.एस.सी.; यू.पी.एस.सी.क तैयारी करय बला छात्र सबहक लेल तँ ओ ठीके सब सँ बेसी सोचैत आ करैत छथि।

हुनक रपट सब सँ आहत भेल, सत्यक उद्घाटन करैत रपट सँ पीड़ित अनेक संस्था आ लेखक-मित्र लोकनि केँ ओ फुटलीयो आँखि नहि सोहाइत छथिन। मुदा, ताहि सँ की? ओ अपन अनुभव मे कोनो हिस्सेदारी नहि चाहैत छथि।

कर्जा सँ लदल रहितो ओ अपन पिताक लगभग सबटा कृति केँ नव साज-सज्जा मे प्रकाशित करौलनि। अनेक अप्रकाशित कृति केँ मैथिली पाठक लेल प्रकाश मे अनलनि। ई हुनक महत्त्वपूर्ण योगदान थिक।

अपनहुँ अनेक व्यंग्य रचना लिखलनि। प्रकाशन जगतक भयावह आ अन्हार दुनिया केँ प्रकाश मे अनलनि। अपन जीवनक कटु-मधु अनुभवकेँ बेबाकीसँ

लिखलनि। ई सब हुनक साहसक परिचायक थिक। जे काज आन नहि कऽ सकैत अछि, तकरा ओ सहजतापूर्वक कयलनि।

हुनक व्यक्तिगत दुनिया आ जीवन अन्हार मे डूबल छनि मुदा ओ सबहक लेल प्रकाशक संधान मे लागल छथि।

कतेक रास बात मोन मे औनाइत अछि। कतेक रास बात ठोर पर आबि-आबि हुलकी मारैत अछि। मुदा, तकरा फेर लिखब भैया।

एखन एतबे कहब जे दुनिया भरिक झंझट सँ अनथक संघर्ष करैत अहाँ जे प्राप्त कयलहुँ अछि, से दोसराक लेल चुनौती जकाँ ठाढ़ रहतै। अहाँक संघर्ष आ अहाँक समर्पणक प्रति नत भेल छी।

-संपर्क-7004917511

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१६.आशीष अनचिन्हार- मैथिली साहित्यमे शरदिन्दु चौधरी केर योगदान

आशीष अनचिन्हार

मैथिली साहित्यमे शरदिन्दु चौधरी केर योगदान

जखन कोनो नौकरी करए बला, वा कि बिजनेस करए बला वा कि घूस लेबए बला सरकारी अफसर सभ रचना लीखि कऽ लेखक कहा लैत अछि ठीक तखने पोथी केर मुद्रण, प्रकाशन आ वितरण करए बला शरदिन्दु चौधरीक रचनाकेँ कात कऽ ई कहि देल जाए जे साहित्यमे हिनकर योगदान किछु नै छनि मुदा पोथी जल्दी उपल्बध करबा दै छथि। तखन हम ई सोचबा लेल बाध्य भऽ जाइत छी जे आखिर लेखक हेबाक परिभाषा की छै?

आ शरदिन्दु चौधरीक साहित्यिक योगदान किछु नै छनि से हमरा स्थापित लेखक सभ कहलाह जखन हम एहि विशेषांक लेल हुनकासँ शरदिन्दुजीपर लेख मँगलियनि। ई आर बेसी खतरनाक प्रवृति छै। तँइ हम आन विषयपर लीखब छोड़ि मात्र इएह लीखब जे मैथिली साहित्यमे शरदिन्दु चौधरी केर योगदान की छै आ से हम दुइए-चारि प्वांइटमे देब।

१) मैथिली साहित्यमे नव प्रवृतिकेँ जन्म देनाइ- प्रायः साहित्यिक रचनामे पात्र केर असल नाम दऽ ओकर खंडन नै कएल जाइत छै। संस्मरणमे असल नाम

देल जाइत छै मुदा ओहिमे जिनकापर संस्मरण छै तिनकर नकारात्मक पक्ष नै लीखल जाइत छै। शरदिन्दु चौधरी अपन पात्र केर असले नाम रखलाह अपन संस्मरणमे आ जिनकापर संस्मरण छनि तिनकर श्यामपक्षकेँ खूब लिखने छथि। एकटा बैमानी हम उजागर कऽ रहल छी एहि संदर्भमे। २००४ मे हिंदी भाषामे काशीनाथ सिंह केर पोथी छपलनि "काशी का अस्सी", एहि पोथीक सभ पात्र असल नामक संग छल आ सेहो वास्तविक भाषा ओ वास्तविक करनी संग। आ ई छपिते हिंदीमे अनघोल मचि गेलै। एकरा नव प्रवृति मानल गेलै आ मानए बलामे मैथिलीक लेखक आ हिंदी-मैथिलीक उभय लेखक सभ छलाह वा छथि मुदा काशी का अस्सीसँ ठीक दू वर्ष पहिने २००२ मे शरदिन्दु चौधरी केर पोथी आएल "जँ हम जनितहुँ" मुदा वएह मैथिल लेखक सभ चुप भेल छथि। काशीनाथ सिंह जे प्रयोग हिंदीमे केलाह से प्रयोग मैथिलीमे शरदिन्दु चौधरी पहिनहि केलथि। श्रेय देबाक बदला मैथिली आ मैथिली-हिंदीक उभय लेखक सभ शरदिन्दु चौधरीक योगदाने मानबासँ अस्वीकार कऽ रहल अछि। जेना बहुत मामिलामे मैथिली हिंदीसँ आगू अछि ठीक अहू तरहक साहित्यमे मैथिली आगू अछि आ एकर एकमात्र श्रेय शरदिन्दु चौधरीकेँ जाइत छनि।

२) सच ओ साहस केर दुर्लभ संयोग-साहित्यमे सच ओ साहस तँ हेबाके चाही। मुदा दिक्कत ई जे एहि सच ओ साहसकेँ नपबाक एखन धरि कोनो मापदंड नै अछि। शरदिन्दुजीक सच ओ साहस जनबाक लेल हम एकटा नव फर्मूला (सूत्र) दऽ रहल छी। ई सूत्र मात्र शरदिन्दुएजी नै सभ लेखक केर रचना लेल समान रूपसँ काज करत। हमर एहि सूत्र लेल तीन टा तत्व रहत, पहिल) जँ रचना व्यक्ति केंद्रित अछि, दोसर) जँ रचना कोनो विषय केंद्रित अछि, तेसर) जँ रचना तथ्य केंद्रित अछि। आब एहि तीनू तत्वकेँ फरिछाबैत छी-

अ) व्यक्ति केंद्रित रचना केर दू भाग भेल पहिल समकालीन व्यक्ति आ दोसर पूर्वज। समकालीन मने जे लेखन कालमे आ ओकर बादो जिंदा छथि। जँ रचना समकालीन व्यक्ति केंद्रित छै तखन ई देखल जेबाक चाही जे लीखए बला लेखक आ जकरापर लीखल गेल छै तकर दूरी कतेक छै, दूरी मतलब प्रभाव पड़बाक संदर्भमे। कम दूरी बला लेखक बेसी दुर्दशा भोगत आ बेसी दूरी बला दुर्दशा नै भोगत। उदाहरण दैत छी मानि लिअ लेखक लिखलाह जे यूक्रेनपर हमला अमानवीय छै आ पुतिन खलनायक अछि। आब सोचियौ जे एहि प्रकारक रचनासँ पुतिनकेँ की फर्क पड़तै? किछु नै। लेखक तँ ई लीखि अपनाकेँ साहसी साबित करबा लेला। मुदा जखन पुतिनपर लीखए बला वएह लेखक लिखता जे वीणा ठाकुर वा कि अशोक अविचल केर समयमे खराप पोथी चूनल गेलै तँ लेखक अकादेमीसँ बहिष्कृत कऽ देल जेता कारण एहिमे कम दूरी छै। एकर दोसर उदाहरण अछि हरेक ठाम पत्रकारक हत्या। एहन हत्या बिहारोमे भेल छै। किएक? एकर एक मात्र कारण छै जे पत्रकारक जे सच छलै आ जकरापर लीखल गेल रहै तकर दूरी कम रहै। ओही ठाम दक्षिण आ महाराष्ट्रमे किछु लेखक केर सेहो हत्या भेलै। बिहारमे एकौटा लेखक केर हत्या नै भेलै आ ओहिमे मैथिली केर लेखक सेहो अछि। तँ जाहि रचनामे लेखक ओ जकरापर लीखल गेल छै ओहिमे जँ दूरी कम छै तँ लेखककेँ साहसी ओ सच लीखए बला मानल जेबाक चाही, आ जँ दूरी बहुत छै तँ ओकरा मात्र भाँज पुरा लेब मानल जेबाक चाही। जँ कोनो लेखक अपन पूर्वजपर लीखि रहल छथि तँ जँ ओ प्रमाण दऽ कऽ लीखै छथि तँ हुनका साहसी ओ सच लीखए बला मानल जेतनि।

आ) जँ रचना विषय केंद्रित छै-- जँ कोनो लेखक अपन भाषामे अप्रचलित विषय वा विधाकेँ प्रमाणिक ओ लोकप्रिय बना देलकै तँ ओकरा साहसी मानल

जेबाक चाही। जँ ओ ओहिमे तथ्य राखि देकलै तँ ओकरा सच लीखए बला सेहो मानल जेबाक चाही।

इ) जँ रचना तथ्य केंद्रित अछि-- एहि कोटिमे प्रमाण ओ असल नाम दूनू महत्वपूर्ण छै। जँ एकौटा गाएब तँ साहस ओ सच केर अभाव मानल जाएत।

ई तत्व सभ लेखन केर हरेम माध्यम जेना प्रिंट, इंटरनेट आदि लेल समान रूपसँ लागू अछि। संगे-संग रचनामे कथित मानवतावाद नपबाक लेल इएह सूत्र काज करत।

आब हम शरदिन्दुजीक रचना सभकेँ उपरमे देल गेल तत्वसँ जाँच कऽ रहल छी। "जँ हम जनितहुँ" नामक पोथीमे शरदिन्दुजी प्रायः अपन समकालीन लेखक सभहक नाम लैत लिखने छथि आ ओहिमेसँ अधिकांश एखनो जिबैत छथि। मतलब एहि तत्वमे "साहस ओ सच केर एहि मापदंड" शरदिन्दुजीक रचना पास भेल अछि। संस्मरण विधाकेँ प्रमाणिक बनेबाक श्रेय हिनके छनि आ ई एकटा कठिन काज छलै। मैथिलीमे तँ संस्मरणक रूप एहन बना देल गेल छलै जेना कोनो काल्पनिक कथा लिखा रहल हो। संस्मरणक बहन्ने अपनाकेँ महान कहबाक प्रचलन बहुत भेल। मुदा शदिन्दुजी संस्मरण विधाकेँ मर्यादामे अनलाह। एहू अधारपर शरदिन्दुजीक रचना "साहस ओ सच केर एहि मापदंड"पर पास भेल अछि। संस्मरण शरदिन्दुजीक मूल विधा बनि कऽ आएल अछि ओ जकरा व्यंग्य कहैत छथिन सेहो सभ अपने-आप संस्मरण बनि गेल छै आ एहि संस्मरण सभमे शरदिन्दुजी असल नामक संग पूरा तथ्य अपन समकालीन सभहक नाम लैत लिखने छथि। के पोथी छपा कऽ पाइ नै देलकनि आ के कोन घात केलकनि से सभ किछु। "साहस ओ सच केर एहि मापदंड" शरदिन्दुजीक रचना सभ पास भेल अछि। अधिकांश लेखक केर रचनामे सच ओ साहस केर अभाव रहैत छै। मैथिलीक ई सौभाग्य जे एकरा शरदिन्दु चौधरी सन लेखक भेटल छै जिनकामे सच ओ साहस दूनू छनि आ

से पहिल दिनसँ लऽ कऽ एखन धरि। पत्रिकारितामे तँ शरीरक हत्या भऽ जाइत छै। साहित्यमे शरीरक नहि योग्यता, बाजिब चर्चा केर हत्या होइत छै आ शरदिन्दुजीक योग्यता, बाजिब चर्चा केर हत्या भेल अछि।

उपरमे जे हम सूत्र देलहुँ तकरासँ पाठक आनो लेखक केर रचनामे सच-साहस तकता से हमरा विश्वास अछि। ओना फेसबुकपर मजाके-मजाकमे हम एहि सूत्रकेँ अपने नामपर "अनचिन्हार फर्मूला" देलहुँ मुदा पाठक एकर जे नाम देबए चाहथि से दऽ सकै छथि।

३) समानान्तर धाराक संवाहक- हरेक समाज, हरेक भाषा, हरेक साहित्यमे सत्ता पक्ष केर सामने एकटा समानान्तर धारा रहैत छै आ से मैथिलियोमे रहलैक अछि। ओना तँ समानान्तर धारा शब्द विदेह पत्रिका (२००८) संगे समानान्तर धाराकेँ पुष्ट करबाक काजो विदेहे द्वारा भेल अछि। मुदा जहाँ धरि प्रवृतिमे समानान्तर धारा तकबै से मैथिलीमे विदेहसँ पहिनेसँ छै। बल्कि मैथिली भाषाक जन्मेसँ। आ ताही समानान्तर प्रवृतिक संवाहक छथि शरदिन्दु चौधरी। समानान्तर धाराकेँ अहाँ विपक्षी बूझि सकैत छी कारण साहित्यमे राजनीतियोसँ बेसी राजनीति होइत अछि। आ विपक्षी भेनाइए अपना-आपमे एकटा साहित्यिक योगदान छै। कारण विपक्षी हेबाक लेल साहस चाही आ जाहि लेखकमे साहस हेतै सएह नव-नव आयाम जोड़ि सकतै साहित्यमे।

४) सनातन धर्ममे नारीकेँ पापक खान कहल गेल छै। नारीक प्रति ई द्वेष मात्र सनातने नै कबीर सन दलित ओ समानान्तर धाराक कवि सेहो केने छथि। कबीरक रचनामे नारीक प्रति भक्ति आ द्वेष दूनू छै। सनातनमे सेहो नारी लेल आदर ओ घृणा छै। की तुलसी, की कबीर सभ अपना-अपना ढंगे नारीकेँ केखनो नीक आ केखनो खराप कहने छथि।

पुरुष स्त्रीसँ जन्मैत अछि मुदा नारीकेँ अपवित्र मानैत अछि तेनाहिते लेखक पोथीक प्रकाशन लेल मुद्रक, प्रकाशक लग जाइए, पाठक धरि पहुँचेबाक लेल वितरक लग जाइए आ अंतमे कहैए जे मुद्रक-प्रकाशक-वितरक केर साहित्यमे की योगदान छै। शरदिन्दु चौधरी जँ लेखन नहियो केने रहितथि तँ हुनकर वितरण प्रणालीसँ मैथिलीक कतेक पाठक बढ़लै सएह साहित्यिक योगदान मानल जइतै। आ से शरदिन्दुए चौधरी किएक मैथिलीक पोथीक मुद्रण, प्रकाशन ओ वितरणमे जे-जे लागल छथि तिनको साहित्यिक योगदान रहबे करतनि।

कुल मिला कऽ मैथिली साहित्यमे शरदिन्दुजीक ओतबे योगदान छनि जतेक योगदान कोनो मौलिक आ बिना सोंगर बला लेखक केर होइत छै। कोनो सोंगर बला लेखक कि गुट आ कि कोनो मठ-मठाधीश हुनका इग्नोर कऽ सकैए मुदा शरदिन्दुजी लेखन हुनका सभ लेल सूर्यक समान रहत जकरा ओ सभ झाँपि ने सकताह।

-संपर्क-8876162759

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१७.गजेन्द्र ठाकुर- शरदिन्दु चौधरीक संस्मरण साहित्य [बात-बातपर बात (I-IV)]

गजेन्द्र ठाकुर

शरदिन्दु चौधरीक संस्मरण साहित्य [बात-बातपर बात (I-IV)]

"बात-बातपर बात खण्ड-१"; "मर्मान्तक-शब्दानुभूति (बात-बातपर बात खण्ड-२)"; "हमर अभाग: हुनक नहि दोष (बात-बातपर बात-३)" आ "साक्षात् (बात-बातपर बात-४) ई चारिटा पुस्तिका शरदिन्दु चौधरीक संस्मरणात्मक निबन्धक संग्रह छन्हि, पहिल २०१९मे दोसर २०२०मे आ तेसर आ चारिम २०२१मे प्रकाशित भेल।

संगहि २००२ मे प्रकाशित "जँ हम जनितहुँ" हुनकर हास्य-व्यंग्य युक्त संस्मरणात्मक निबन्धक संग्रह छन्हि जे पुरस्कार-लोलुप मूल-धाराक साहित्यकारक नामसँ युक्त अछि आ हुनकर सभक किरदानी तँ तेहेन छन्हिये जे ओ संस्मरण हास्य-व्यंग्यक संग्रह अनायासे बनि जायत, मुदा ई पोथी शुद्ध संस्मरणक पोथी नै थिक, ऐमे नोन-मिर्च सेहो अछि मुदा कम मात्रामे। एतऽ

ई संतोषक विषय अछि जे शरदिन्दु जी कैं समानान्तर धारामे एक्कोटा लोलुप व्यक्ति नै भेटलन्हि।

एकर अतिरिक्त २००५ मे प्रकाशित "बड़ अजगुत देखल", २०११ मे प्रकाशित "गोबरगणेश" आ २०१६ मे प्रकाशित "करिया कक्काक कोरामिन"कैं करिया कक्का व्यंग्य शृंखला कहि सकैत छी, कारण ऐ तीनू पोथीमे खट्टर कक्का सन करिया कक्का विराजमान भेटता, मुदा एतौ किछु आलेखमे करिया कक्का नै छथि, जेना गोबरगणेश संग्रहक 'तावत काल','गोलैसी- अर्थात्' आ 'सीडी समीक्षा '। मुदा ई तीनू संग्रह सेहो मोटा-मोटी संस्मरण आधारित अछि मुदा नोन-मिर्चक सङ आ सेहो पुष्टसँ। एतऽ 'करिया कक्काक कोरामिन' क लेखकीय मे ओ लिखै छथि जे (करिया कक्का)कैं 'जे फुरेलनि सैह कयलनि मुदा ई ध्यान अवश्य रखलनि जे... अश्लीलताक आरोप नहि लागय..." मुदा ऐ पोथीसँ ५ साल पूर्व प्रकाशित 'गोबरगणेश' क 'सीडी समीक्षा ' मे साहित्य अकादेमी द्वारा कथित लिटेरेरी एसोशियेशन सभ द्वारा चयनित मैथिली परामर्शदात्री समितिक अध्यक्ष विद्यानाथ झा 'विदित'क सम्बन्धमे लिखल गेल अछि, '.. ओ तँ स्वयं रसिया छथि। प्रवासीजी संग संध्यावंदन करताह, ठकुराइन संग युगलबंदी करताह...'। ओही पोथीक 'तावत काल' आलेखमे लिखल गेल अछि- 'एहने सन प्रयोग साहित्य अकादेमी सेहो कयलक जे जकरा होटल रहतैक सेहो परामर्शदातृ समितिक सदस्य बनि सकैत छथि।" तावत काल केर वर्णन अश्लील नै अछि मुदा सीडी समीक्षाक विवरण स्पष्टतया अश्लील अछि। ई स्पष्ट अछि जे साहित्य अकादेमी द्वारा कथित लिटेरेरी एसोशियेशन सभ द्वारा चयनित मैथिली परामर्शदात्री समितिक सभ अध्यक्ष मैथिलीकैं रसातल पहुँचेबाक काज केलन्हि अछि मुदा एकटा महिलो ओइमे छथि तँ ओ सत्य हरिश्चन्द्र किए बनथु? आ ओइपर सेक्सिस्ट कमेण्ट ईएह देखबैत अछि जे लेखक बा सम्पादक साहित्यमे आ सार्वजनिक स्थलपर महिला बा पुरुषेत्तर

लिंगक प्रति सम्वेदनशील नै छथि। 'करिया कक्काक कोरामिन'मे 'सरकारक लिंग परीक्षा ' मे सेहो ई असम्वेदनशीलता देखल जा सकैए जतऽ 'स्त्री-गुणसँ परिपुरित सरकार' विनोद कुमार झा *[देखू 'ईर्ष्या द्वेष नहि- समन्वय चाही'- 'हमर अभाग: हुनक नहि दोष (बात-बातपर बात-३)' पोथीमे- सरकार (विनोद कुमार झा, आब कवि सम्राट)]* लेल प्रयुक्त कएल गेल अछि।

१

<u>बात-बातपर बात खण्ड-१</u>

"बात-बातपर बात खण्ड-१" क "श्रेय आ प्रेय" मे मैथिलीक पुनः बिहार लोक सेवा आयोगमे प्रवेश आ ओकर पाठ्यक्रमक सम्बन्धमे श्यामानन्द चौधरीक योगदानक ओ चर्चा केलन्हि। शरदिन्दु जी ओ पाठ्यक्रम जे आयोग कार्यालयमे हरा गेल रहै, आयोगक गेटपर स्थित "झा जी बुकसेलर की दुकान" क नामसँ दोकान चलबैला स्व. चौधरी जी सँ लऽ कऽ श्यामानन्द चौधरीजी (तत्कालीन विशेष अधिकारी, बिहार लोक सेवा आयोग)केँ देलन्हि। श्यामानन्द चौधरी जी २० दिसम्बर २०१८ केँ कहलनि जे कोनो संस्था (मैथिलीक) ऐ सम्बन्धमे सरकारकेँ कोनो लिखित प्रस्ताव नै देलकै। मुदा चेतना समिति विधिवत एकर श्रेय लैत प्रसन्न्ता व्यक्त केलक! "हम आभारी छी"मे वैद्यनाथ चौधरी 'बैजू' द्वारा प्रेस रिलीज/ घोषणाक बादो २०१० क 'मिथिला रत्न' सम्मान सूचीसँ शरदिन्दु चौधरीक नाम बादमे हटा देबाक चर्च अछि। ई संस्था छल साहित्य अकादेमी द्वारा कथित लिटरेरी एसोशियेशन रूपमे मान्यता प्राप्त विद्यापति सेवा संस्थान, सम्मान निर्णायक

मण्डलमे रहथि डॉ. भीमनाथ झा, डॉ. फूलचन्द्र मिश्र 'रमण' आ कमलाकान्त झा, जँ शरदिन्दु चौधरीकेँ सम्मान देल जायत तँ ओ जहर खा लेता, ई धमकी देलन्हि साहित्य अकादेमी द्वारा कथित लिटरेरी एसोशियेशन रूपमे मान्यता प्राप्त विद्यापति सेवा संस्थानक अध्यक्ष पं चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'। "हम नहि कहि सकैत छी..." मे साहित्य अकादेमी द्वारा कथित लिटरेरी एसोशियेशन रूपमे मान्यता प्राप्त करबा लेल असफल भेल संस्था 'मैथिली लेखक संघ ' आ विनोद कुमार झा केर राजनीति केर चर्चा अछि। पंजीयनमे ओना विनोदजीक अलाबे सभक बबुआने बनल रहबाक चर्चा अछि। मंत्रेश्वर झा पर मीटिंगमे अनेक आरोप लगाओल जयबाक, प्रेमलता मिश्र 'प्रेम', इन्दिरा झा आ पन्ना झा केर मूर्तिये सन व्यवहार (बुद्धिजीवी बनबाक लौलमे) केर चर्चा अछि। मैथिली लेखक संघमे आब स्थायी अध्यक्ष आ स्थायी सचिव छथि मुदा संघ स्वयं बिलायल अछि। से अकादेमीक कथित लिटेरेरी असोसियेशन सभक सेहो यएह खेरहा छै। विद्यानाथ झा 'विदित' तत्कालीन साहित्य अकादेमीक ५ साल धरि रहल मैथिली पदाधिकारी सेहो शरदिन्दुक 'सक्रिय सहयोग'(!)क अभिलाषी रहथि। "हमर दुर्गुण आ क्रोधक दुष्प्रभाव"मे लहेरियासरायक एकटा युवा लेखक/ पत्रकारक छद्म नामे अखबारमे लिखबाक चर्चा अछि जे शरदिन्दु साहित्य अकादेमी, मैथिली अकादमी आ चेतना समितिकेँ भयादोहन कऽ कमाइत छथि। चेतना समितिक सम्बन्धमे ओ लिखै छथि- "... हम पत्रकार नहि रहितहुँ तँ हमरा संग किछु गोटे मारपीट सेहो करितथि। समितिक एकटा पूर्व सचिवक विरोध कयलापर हुनक कोना अभद्र रूपे गंजन भेल छल से लोककेँ बूझल छैक तथापि से स्थिति हमर नहि भेल।"

"समय-सालक जन्म आ साहित्यिक-राजनीतिक कुचक्र"मे विनोद बिहारी लालक पत्रक चर्चा अछि, ओ लिखलखिन्ह जे चलू 'सम्पादक रूपमे इतिहासमे अहाँक नाम अयबाक सख पूरा भऽ जायत।' २००१ ई.मे

स्व. बबुआजी झा अज्ञातकेँ 'प्रतिज्ञा पाण्डव' महाकाव्यपर साहित्य अकादेमी पुरस्कारक विरोधमे राजमोहन झा द्वारा अभियान आ झूठ प्रचार जे ओ पोथी छपबे नै कएल अछि, ओइ हस्ताक्षर अभियानमे शरदिन्दु हस्ताक्षर नै केलन्हि आ तइपर राजमोहन झा 'अंतिका'मे अनाप-शनाप लिखलन्हि तकर चर्च अछि। एतऽ ई बता दी जे शरदिन्दु ओ छपलाहा पोथी ऊपर केलन्हि आ पटनाक अपन दोकानमे ओकरा प्रदर्शितो केलन्हि। मुदा फेर राजमोहन झाक चूक मानबाक आ शरदिन्दुक हुनका प्रति मोन फेरसँ निर्मल हेबाक चर्चा अछि। "नोकरी नहि करबाक निर्णय"मे अग्निपुष्पक चर्चा अछि, "एहन काज तँ अग्निपुष्प सन-सन पत्रकार कऽ सकैत छलाह जे आर्यावर्तमे हाथि कटबाक धमकी भरल स्वर निकालथि आ जागरणमे नांगरि सुटकाकऽ सेवानिवृति धरि काज कयलनि।" अहीमे प्रेसक मैनेजर सह कम्पोजीटर शिव कुमार ठाकुरक चर्चा अछि- "जे-से, ओ कम्पोजिटरसँ मालिक भेलाह- हमरा यैह प्रसन्नता अछि।" हमरा विचारे ओ शिवकुमार ठाकुरक प्रति कने बेशी 'हार्श' भऽ गेल छथि, चेतना समितिक विद्यापति भवन, बहुत गोटे मात्र हुनके (शिवकुमार ठाकुरक), पोथीक दोकान दुआरे जाइ छल, चेतना समितिकेँ सेहो नै अरघलै, अपने तँ ओ मैरेज हॉल बुक करैमे लागल रहैए, से पोथी किए बेचत, मुदा शिवकुमार ठाकुरक दोकान बन्न जरूर करबा देलकै। जे.. से..। "जीवन युद्धक भूमिका"मे मित्र दिलीप, अजित आजाद, अभय झा, पं. ताराकान्त झा, मंत्रेश्वर झा, बासुकी बाबू क सहयोगी, मदति केनिहार आ परामर्श देनिहारक रूपमे चर्चा अछि। "सम्मानक भूख"मे मूलधाराक पुरस्कार लोलुप साहित्यकारक वर्णन भेल अछि- "आदरणीय गोविन्द बाबूक खिस्सा प्रायः लोककेँ बुझले छैक जे पुरस्कार नहि भेटलापर मैथिली बाजब छोड़ि हिन्दीमे बाजल करथि जे 'मैथिली बईमानो की भाषा है'। "मैथिलक अविश्वसनीयता" मे मैथिल तांत्रिक बटेश महराज जीक 'कामाख्या संदेश'(मासिक) छपबाइयो कऽ ३० हजारसँ बेशी टाका नै देबाक चर्चा भेल

अछि। "तीत लागय वा कड़ू"मे उदयचन्द्र झा 'विनोद' १५७५ टाका नै देलखिन्ह मात्र ११०० टाकामे २०० पोथी लऽ गेलखिन्ह शेष ने पाइये देलखिन्ह ने पोथीये लऽ गेलखिन्ह, तकर चर्चा अछि।

२

मर्मान्तक-शब्दानुभूति (बात-बातपर बात खण्ड-२)

"मर्मान्तक-शब्दानुभूति (बात-बातपर बात खण्ड-२)"क "महाकालक वज्राघात' कोरोना लाकडाउनमे २६.०३.२०२०कैं लिखल गेल ४१ बर्ख पुरान घटनाक वर्णन अछि, मिश्रजीक बैंकक पाईक उनटफेरमे फँसब, नोकरी जायब, मायक मानसिक स्थितिक खराप हएब आ फेर हुनकर मृत्यु। "शेखर"क अवसानमे पिताक चर्च अछि, प्रभासजी, मुखियाजी, बटुक भाइ केर बरमहल सुधांशु शेखर चौधरीजी सँ भेँट करबा लेल अयबाक चर्चा अछि मुदा "हँ, ओ अंतिम साल भरि प्रवासी जीसँ गप्प करय चाहथि मुदा से सम्भव नहि भेलनि। हमरा कहलोपर प्रवासीजी भेँट नहि कयलथिन अन्त धरि।" माताक मृत्युक वर्णनक अगिला संस्मरण पिताक मृत्युक ई विवरण कोरोना लाकडाउनमे २७.०३.२०२०कैं लिखल गेल। "अग्रलेखसँ भेंट"मे मिथिला मिहिरमे शरदिन्दुजीक आगमन (ओना नियुक्ति आर्यावर्तमे) आ तकरा भीमनाथ झा द्वारा अपन पदोन्नत्तिक मार्गमे बाधक बुझल जयबाक चर्चा अछि आ भीमनाथ झा ऐपर 'लंगूर' कविता लिखलन्हि जे सुधांशु शेखर चौधरी आ शरदिन्दु चौधरीकैं बेधलकन्हि । भीमनाथ झाकैं लगलन्हि जे हुनकासँ जूनियर गोकुल बाबूकैं भीमनाथ झासँ टपा कऽ सहायक सम्पादक बना देल गेल आ सुधांशु शेखर चौधरी अपन पुत्र शरदिन्दु चौधरीकैं नोकरी दिआबय खातिर से बर्दाश्त केलन्हि, जखनकि गोकुल बाबूक पैरवीकार रहथि कुमार साहेब (अखबार-प्रेसक मालिक)क नाना आ गोकुल बाबू रहथि कुमार साहेबक मौसा। एम्हर

गोकुल बाबू धोती-कुर्ता छोड़ि सफारी सूटमे आबय लगलाह, से भीमनाथ झाकेँ आर असह्य भऽ गेलनि, मुदा फेर हुनकर नोकरी मिथिला विश्वविद्यालयमे लागि गेलनि। सुधांशु शेखर चौधरी (शरदिन्दुक पिता जिनका ओ लालकक्का कहैत छला) २ अक्टूबर १९८२केँ सेवानिवृत्त भऽ गेलाह आ शरदिन्दु आ दिलीप (दिलीप सिंह झा) गोकुल बाबूक टेम्पो बनि रहि गेलाह। *(आर्यावर्त, इण्डियन नेशन आ मिथिला मिहिरक राजनीति आ कोना ई राष्ट्रीय अखबार सभक पटना आगमनक बाद धराशायी भऽ गेल! सुनै छिऐ भाङ घोटल जाइ छलै ओतऽ बेरू पहर, किछु आर संस्मरण ऐपर एबाक चाही!)* "सफलता ओ विफलताक कारण" मे पं हीरानन्द झा शास्त्री आ स्वं गजेन्द्र नारायण चौधरीसँ भेटल सम्पादकीय दायित्व आ अधिकारक ज्ञान भेटबाक चर्च अछि। मैथिलीक लेखक आ हिन्दीक पत्रकारक बेइमानीक चर्च अछि जे साहित्य अकादेमीक गोष्ठीमे मैथिली पत्रकारिताक श्रेय देसकोस आ विनोद कुमार झा केँ देलनि आ मिथिला दैनिकक बेरमे 'जँ ओकरा दैनिक मानि लेल जाय' कहि ओकर उपलब्धिकेँ न्यून कऽ देलथिन। पाखण्डी युगक प्रतिनिधि रचनाकारक रूपमे बैद्यनाथ विमल केर चर्चा अछि आ कोनो ने कोनो सोंगरपर चतरयवला आलोचक/ सम्पादकक रूपमे रमानन्द झा 'रमण'क।

३

हमर अभाग: हुनक नहि दोष (बात-बातपर बात-३)

'भूमिका- श्यामपक्ष ओ हमर लेखन' मे ओ लिखैत छथि "हम जे लिखैत छी से प्रायः क्यो नहि लिखैत छथि। हँ कहियो काल लक्ष्मण झा 'सागर' क किछु-किछु एही तरहक आलेख पढ़बाक सौभाग्य भेटैत अछि।" "हमर

अभाग: हुनक नहि दोष" मे 'मैथिलीपुत्र प्रदीप प्रभुनारायण झा ' पर निकलल मैथिली अकादमी पत्रिका विशेषांकक चर्चा अछि, काज सभटा शरदिन्दु जी केलन्हि सम्पादकमे नाम दिनेशचन्द्र झा केर छपलनि आ मेहनति केर मोल २८० टाका शरदिन्दुजीकेँ भेटलन्हि। "सम्पादकीय आ पाठकीय पत्र"मे बिनु नाम लेने रमेशक चर्चा अछि जे अबोध आ दुर्बोध मिश्रक नामसँ पाठकीय पत्र पठाबथिन आ शरदिन्दु आ हुनकर पिताक विषयमे अनाप-शनाप लिखैत छलाह कारण शशि बोध मिश्र 'शशि'क रचना समय-सालमे छपलासँ ओ आहत छलाह। बादमे कोना ओ केदार काननक पैरवीसँ पूर्वोत्तर मैथिलमे (जखन शरदिन्दु ओतऽ सम्पादक बनलाह) छापल गेलाह, ".. आब.. ओ जमीनपर छथि। नीक लिखैत छथि।" मधुकान्त झासँ प्राप्त पैरवीक आधारपर कोनो प्रोफेसर साहेबक कविता समय-सालमे छापलखिन्ह मुदा ई रमेश सन नीक नै लिखैत छथि, बड्डु दब कविता लिखैत छथि मुदा साहित्य अकादेमीक पुरस्कारक अन्तिम राउण्ड धरि तीन बेर पहुँचलाह- शरदिन्दु स्मरण करैत छथि। "मैथिलीक बदलैत स्वरूप"मे श्याम दरिहरेक पहिने अपने, फेर पोथी आ अन्तमे मैथिलीकेँ स्थान देबाक चर्चा अछि। "पैघत्वक अकारण प्रदर्शन किएक"मे कीर्तिनारायण मिश्र द्वारा 'अर्थान्तर' पोथी छपयबाक आ मोहन भारद्वाजक सोझाँमे मात्र ९००० टाका देबाक आ शेष ३५०० टाका नै देबाक चर्चा अछि जखनि कि सभटा पोथी हुनका घरपर पहुँचबा देल गेलन्हि। अहीमे साहित्य अकादेमीक 'मीट द ऑथर्स' केर चर्चा अछि जे ओकरा द्वारा मान्यता प्राप्त कथित लिटेरेरी एसोशियेसन चेतना समितिक प्रेक्षागृहमे आयोजित भेल। "कीर्ति बाबू सेहो हिन्दी-मैथिलीमे बजलाह। दावी जे हिन्दी-मैथिली दुनूक हम लेखक छी मुदा राजकमल-यात्री छोड़ि ककर हिन्दीमे कोन स्थान रहलैक से देखल-बूझल अछि। ... हमर बेधक आ सटीक प्रश्न छल- अपने एतेक श्रेष्ठ साहित्यकार छी जे आइ अपनेपर साहित्य अकादेमी सन शीर्ष संस्था ई कार्यक्रम आयोजित

कयलक अछि तखन अहाँ अपन नामपर जीविते किए 'कीर्तिनारायण मिश्र सम्मान' प्रारम्भ करौलहुँ, की अपनेकेँ भय अछि जे मरणोपरान्त क्यो स्मरण नहि करत तेँ जीविते अपन प्रचार-प्रसार देखबाक सेहन्ता छल? हमर एहि प्रश्नपर ओ विचलित भऽ उठलाह आ बजलाह- हमर पारिवारिक सदस्यक इच्छा रहनि। .. चेतना समितिक सम्पूर्ण पदाधिकारी एकर विरोध करय लगलाह आ ओतऽ स्वर गूँजय लागल- ई सम्मान कोनो हालतिमे निरन्तर चलैत रहत। एकर कारण रहैक ओ चेतना समितिकेँ पुनः डेढ़ लाख टाका पुरस्कार राशि बढ़यबा लेल टाका लऽ कऽ आयल रहथिन।" चेतना समिति द्वारा पुरस्कारक नामपर, पुरस्कार जिनका नामपर देल जाइत अछि हुनका आ हुनक परिवारसँ पाइ दोहनक ई एकटा फर्स्ट हैण्ड अकाउण्ट अछि, एहेन आर संस्मरण सोझाँ एबाक चाही।

"बइमान होयबाक घोषणा"मे 'साहित्यिकी ' (सरिसवपाही)पाहीक कोनो जगदीश मिश्रक चर्चा अछि, जे ख्यात साहित्यकार अशोककेँ १० टा पोथी शरदिन्दुजीकेँ देबा लेल कहने रहथिन्ह मुदा ओ विद्यापति भवनमे शिव कुमार ठाकुरकेँ दऽ देलन्हि आ ओ पोथी बेचिकऽ पाइ हुनका दऽ देलथिन्ह। मुदा ई जगदीश मिश्र माइक पर घोषित केलन्हि जे शरदिन्दु पोथी बेचि कऽ पाइ नहि देलनि आ ई सूचना रमानन्द झा 'रमण' शरदिन्दु जीकेँ देलन्हि। एक गोट घटना मोन पड़ैत अछि जे एक गोट रचनाकार अइ संस्थाकेँ 'सोइतिकी' कहैत छलाह आ जखन हुनकर पोथी ई संस्था छापि देलकन्हि तखने ओकरा 'साहित्यिकी ' कहलन्हि। 'हमर अभाग: हुनक सौभाग्य"मे भीमनाथ झा द्वारा फूलचन्द्र मिश्र 'रमण'केँ लेसि देबाक चर्चा अछि, कथित लिटरेरी असोशियेशन चेतना समिति द्वारा कोनो स्मारिकामे (स्मारिकाक राजनीति!) सत्यनारायण मेहता जी हुनकर रचना छाँटि देने रहथिन्ह। "मैथिलीक राजनीतिक कृपा"मे भारतीय भाषा संस्थानक अजित

मिश्र आ अदिति मुखर्जीक वर्णन अछि। भारतीय भाषा संस्थानक 'सेमीनार सह वर्कशाप' मे हिनका आ मधुकान्त झाक नामपर दोसर गोटे द्वारा पाइ उठा लेबाक चर्चा अछि आ हेतुकर झाक पुत्र तेजकर झा केर सूचना जे शेखर प्रकाशनकेँ भारतीय भाषा संस्थानक अनुवाद मिशनक काज नै भेटौक से मैथिलीक २ टा विद्वान संस्थानक मीटिंगमे कहलन्हि। ९ टा पोथीक अनुवाद, प्रूफरीडिंग, प्रकाशन आ वितरणक भार शेखर प्रकाशनकेँ भेटल रहै, मुदा संस्थान एक-दूटा चमचाक कहलापर सम्पादकक चयन बिना शरदिन्दुसँ राय लेने चुनि लेलक, आ ओइ प्रकाशक-सम्पादकक मीटिंगमे हुनका नै बजाओल गेल। बादमे किछु काज नोवेल्टीक नरेन्द्र कुमार झा केँ भेटलन्हि, फेर पं सीताराम झाजीक पौत्र श्री चन्द्रनाथ झा जी हिनका कहलखिन्ह जे हुनकासँ ओ अनुवाद करा लेलखिन्ह आ कनी-मनी दऽ कऽ टारि देलखिन्ह। "ईर्ष्या द्वेष नहि- समन्वय चाही"मे परमेश्वर कापड़ि द्वारा ५ हजार टाकाक किताबक लऽ कऽ राम भरोस कापड़ि भ्रमरक कहलो उत्तर पाइ नै देब केर चर्चा अछि। केदार काननक कएकटा शिष्य सेहो एहिना केलखिन्ह। तारानन्द वियोगीक चर्चा अछि जे फेसबुकपर जाति विशेष (ब्राह्मण) लेल 'सभ बापूत' शब्दक प्रयोग खुलि कऽ करैत छथि। " .. ओ जाहि परिचर्चामे भाग लैत छथि ओहूमे ७० प्रतिशत वैह लोक भाग लैत छथि (ब्राह्मण) जकर पुरुखाकेँ ओ उकटैत छथिन... हम लोहा मानबनि श्री वियोगीजीक तखन जखन अपना सदृश बीसो टा व्यक्तित्वक निर्माण ओ अपना समाजसँ ठाढ़ कऽ देखाबथु। मात्र उकटा पैंची कयलासँ...।" मुदा हुनकर ई लिखब जे ओ परमेश्वर कापड़ि जीकेँ कहलनि- "अहाँकेँ एहिठाम बाँसमे बान्हि कऽ पीटी तँ कोनो हर्ज नहि ने। ओतऽ सरकार (विनोद कुमार झा, आब कवि सम्राट- व्यंग्यात्मक प्रयोग) आ युवा कवि बालमुकुन्दजी सेहो छलाह। "- मुदा बाँसमे बान्हि कऽ पीटी तँ कोनो हर्ज नहि ने- एकर कोनो तरहेँ समर्थन हम नै कऽ सकैत छी।

४

साक्षात् (बात-बातपर बात-४)

ऐमे शरदिन्दुजी स्मरण करैत छथि जे केना ".. एक गोटा हमरा पुरस्कार प्रक्रियाक स्तरहीनताक गप्पक क्रममे एहिमे लागल लोक सभकेँ माय-बहिनकेँ गारि-पढ़ैत कहलनि जे कोनो हालतिमे साहित्य अकादमिये वा कोनो पुरस्कार हम नहि लेब, मुदा लगले छओ मासक अभ्यंतर पुरस्कार ग्रहण कऽ गदगद भऽ गेलाह। हम पूछैत छी एहिसँ हुनकर क्षमता, विद्वतामे कतेक अभिवृद्धि भेलनि। तखन अनेरे अर्र-दर्र बजने की लाभ! सेटिंग करैत रहू आ गारियो पढ़ैत चलू।" मैथिली साहित्यमे हिनका किरण, मधुप, सुमन, मणिपद्म, जयकान्त
मिश्र, प्रभास, गुंजन, मन्त्रेश्वर, अमर, जीवकान्त, गोविन्द बाबू, बासुकी बाबू, प्रवासी, राजमोहन, बच्चा ठाकुर, भीम बाबू, रामदेव बाबू,शेखरजी, हेतुकर बाबू, अशोक, शिवशंकर श्रीनिवास, उषाकिरण खान, शेफालिका वर्मा, श्यामानन्द चौधरी, रंगनाथ दिवाकर, कमलमोहन चुन्नू, अजित आजाद, अशोक मेहता, सुरेन्द्र राउत, रमण कुमार झा, मुकुन्द मयंक आ बालमुकुन्द प्रभावित केलकन्हि। ओ ईहो कहैत छथि जे ".. पत्रकारिता माने आब बलिदान बूझल जाय लगलैक अछि। क्यो कहैत छथि- हमरा पत्रिका निकालबामे आठ-दस लाख खर्च भऽ गेल। युवा ललित नारायण (मिथिला मिरर) एही वयसमे रिपोर्टिंगक क्रममे कहैत छथि- हम

हड्डी गला रहल छी। जखन कि हमरा हिसाबें एखनेसँ प्रोफेशनल पत्रकार भऽ गेलाह अछि ओ।"

ओ कहैत छथि "जे प्रकाशक ओकरा कहैत छैक जे अपन पाइसँ अनकर किताब छापय आ मुद्रक ओकरा कहैत छैक जे पाइ लऽ कऽ काज करय। आ जे ई दुनू काज करय से अपनाकेँ मुद्रक आ प्रकाशक दुनू कहबैत अछि... शेखर प्रकाशन ई दुनू काज दुनू स्तरपर कयलक अछि। हमरा जनैत यैह काज पूर्वमे पुस्तक भण्डार आ ग्रन्थालय सेहो करैत छल।... कुल ५२ पोथी अपन दमपर छपने छी। आधा-आधी खर्चपर सेहो लगभग तीन दर्जनसँ बेसी पोथी छपने छी।..."

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१८.गजेन्द्र ठाकुर- शरदिन्दु चौधरीक संस्मरणात्मक हास्य-व्यंग्य संग्रह- 'जँ हम जनितहुँ'

गजेन्द्र ठाकुर

शरदिन्दु चौधरीक संस्मरणात्मक हास्य-व्यंग्य संग्रह- 'जँ हम जनितहुँ'

हास्य-
व्यंग्य संग्रह तँ फेर ई संस्मरण साहित्य केना भेल? एकर उत्तर शरदिन्दु स्वयं दैत छथि-
"जँ हम जनितहुँ जे साहित्यिक क्षेत्रमे सेहो राजनीतिये जकाँ खेल होइत छैक तँ कथमपि एहि क्षेत्रमे पैर रखबाक दुस्साहस नहि करितहुँ मुदा आब तँ फँसि गेल छी आ दूध-
माछ दुनू बांतरवला परि सन भऽ गेल अछि। ने उगिलते बनैछ आ ने घोँटिते।
" आ आगाँ ओ लिखैत छथि- "... जनिक चरित्र, हमरा हास्य-व्यंग्यमे फर्क छैक से नहि बुझय देलक आ जनिक सम्भाषण हमर लेखनक कथ्य बनल।... हमर पत्रकार प्रवृत्ति जहिया जे देखलक से लिखलक।" से

सिद्ध भेल जे ई संस्मरणक पोथी थिक आ कॉमाक भीतर देल वक्तव्यमे को नो नोन मिर्च नै-छै, हँ संस्मरणक हेडिंगमे आ इनवर्टेड कॉमाक बाहर नोन-मिर्च छै मुदा सेहो कने मने।

ऐ पोथीमे ११ टा संस्मरण अछि जे पुरस्कार लोलुप मैथिलीक मूल धाराक साहित्यकार, जइमे सभ जातिक साहित्यकार छथि, केर किरदानीक कारण हास्य-
व्यंग्य संग्रह बनि गेल अछि। साहित्यकार सभक असली साहित्यिक नाम ऐ संग्रहमे देल गेल अछि जे एकर प्रामाणिकताकेँ बढ़बैत अछि, ई पोथी २००२ मे प्रकाशित भेल मुदा २०२२मे सेहो ओइ वर्णित साहित्यकार सभक ओहने छिच्छा छन्हि।

१

अथ ऑपरेशन साहित्य अकादेमी

ऐ संस्मरणमे मात्र सम्वाद अछि, इनवर्टेड कॉमाक भीतर। से कोनो नोन मि र्च नै, हेडिंग सेहो कम नोन-मिर्चक,
'अथ' संस्कृतक शब्द छिऐ, बिस्मिल्लाहक पर्याय, से 'अथ ऑपरेशन सा हित्य अकादेमी'मे के सभ कलाकार छथि? विवरण नीचाँ अछि-

मुख्य कलाकार- मोहन भारद्वाज (आब स्वर्गीय) आ रमानन्द झा 'रमण'

किरदानी- लोकक (साहित्यकारक साहित्यक कुण्डली बाचब) मुदा बेसी काल आपसेमे टाल-गुल्ली खेलायब।

सहायक कलाकार- एकटा 'साठा तब पाठा' कवि, एकटा ससुर-जमायक जोड़ी।

किरदानी- पहिलुके पोथीसँ पुरान कवि सभकेँ मूर्च्छित करब, साहित्य अकादेमीक अकासमे विचरण।

टेक्निक- एक दोसाराक पोथीक ढिलहो, चेतने समिति जकाँ कतबो कटाउझ होउ, राज कक्केक आकि भातिजेक।

२

अपील

मुख्य कलाकार- मोहन भारद्वाज (आब स्वर्गीय), बासुकीनाथ झा आ रमानन्द झा 'रमण'

किरदानी- मैथिली अकादमी आ चेतना समितिक प्रकाशन गतिविधिपर कब्जा।

सहायक कलाकार- पाठकजी, दिनेशजी, इन्द्रकान्त जी।

किरदानी- क्रमसँ क्रोधी, भोगी आ लोभी।

टेक्निक- विद्वताक ढेकार करैत कठहँसी।

३

ईहो पुरुष अलबत्ते

मुख्य कलाकार- एकटा संस्थाक उच्चाधिकारी

किरदानी- काज बेरमे हाथ थरथरेनाइ।

सहायक कलाकार- रिक्त।

टेक्निक- कनफुसकीसँ प्रेरित भऽ समाज-
सुधार आ भाषाक उद्धारक स्वांग।

४

देखल एकटा शूटिंग

मुख्य कलाकार- उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास', मधुकान्त झा, मोहन भारद्वाज, र मानन्द झा 'रमण', रामदेव झा, पुर्णेन्दु चौधरी, चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'।

किरदानी- मैथिली अकादमी आ चेतना समितिक साहित्यक गतिविधिपर कब्जा। 'अंग्रेजी फूलक चिट्ठी' प्रसंग। सोमदेव, रमानन्द रेणु आ हंसराजकेँ बालिग नै होमऽ देब। चटिसारक चेला भीमनाथ, जयमन्त आ मदनेश्वर।

सहायक कलाकार- जयकान्त मिश्र, देवकान्त झा, कुलानन्द मिश्र, राजमो हन झा, उदय चन्द्र झा 'विनोद', अशोक, अग्निपुष्प, केदार, तारानन्द वियो गी, रमेश, शिवशंकर।

किरदानी- राजमोहन झा द्वारा भीम भाइसँ पहिने पुरस्कार प्राप्ति लेल अप न कोरपच्छु अशोक, अग्निपुष्प, केदारकेँ आगाँ करब। शरदूक एक्के बोलपर विजय कुमार मिश्र आ विवेकानन्द मैदानसँ बाहर, वीरेन्द्र झा द्वारा अमरेश पाठककेँ पानि पिआयब। गोकुलनाथ द्वारा प्रवासीकेँ लुढ़कायब।

मदारी- छत्रानन्द सिंह झा (बटुक भाइ), गोपेशजी।

नेपथ्यमे (संरक्षक)- उषाकिरण खान आ मंत्रेश्वर झा।

अन्तिम प्रस्तोता- गुंजनजी।

टेक्निक- मोहन भारद्वाज द्वारा भीम भाइ आ रामदेव झाकेँ लड़ायब आ स्व यं साहित्य अकादेमी परामर्शदातृ समितिमे घुसब, रमणजी द्वारा गोविन्द झा अभिनन्दन ग्रंथ सहित आन-
आन ठाम ऐ कोठीक धान ओइ कोठीमे करब आ चेतना समितिकेँ सोधब।

पुरस्कार लोलुपक तीर्थ स्थल (सन २००२ धरि)- पटनाक गुरुद्वारा (आर -
ब्लॉक), दरभंगाक श्यामा मन्दिर (राजकुमार गंज) आ प्रयाग (पी.सी. बन र्जी रोड)।

५

स्वास्थ्य-रक्षा पुरस्कार

कार्यक्रमक प्रेरणा- बिनाका गीतमाला।

उद्घोषक- मैथिलीक अमीन सयानी छत्रानन्द मुदा हुनकर बटुक हेबाक कार ण ई भार अशोककेँ देल गेल।

प्रश्न- गोविन्द झाकेँ साहित्य अकादेमी पुरस्कार किए?

प्रश्नमंचमे के सभ शामिल नै?- रमानन्द रेणु, हंसराज, पूर्णेन्दु चौधरी, आ रहिकाक दुलहा उदयचन्द्र झा 'विनोद'।

एक सदस्यीय निर्णायक मण्डल- सुमनजी।

के सभ बहिष्कार केलन्हि?- उपेन्द्रनाथ झा व्यास, डॉ. अमरेश पाठक आ आनन्द मिश्र (एक सदस्यीय निर्णायक मण्डलमे नै रखबाक कारणसँ)।

सुमनजी द्वारा जारी १६ सदस्यीय प्रतियोगीक सूची- सुरेश्वर झा, राजमो हन झा, मार्कण्डेय प्रवासी, मोहन भारद्वाज, भीमनाथ झा, प्रभास कुमार चौ धरी, जीवकान्त, शेफालिका वर्मा, कीर्तिनारायण मिश्र, मन्त्रेश्वर झा, अग्नि पुष्प, सुभाषचन्द्र यादव, मायानन्द मिश्र, डॉ धीरेन्द्र, सोमदेव आ केदार कान न।

स्वागत गीत- बुद्धिनाथ मिश्र आ शान्ति सुमन।

उत्तर- राजमोहन झा- गोविन्द झा द्वारा हिन्दीमे लिखल जयबाक आशंकाक (धमकीक) कारण।

घोषणाक उपरान्त- विनोद कुमार झा, अग्निपुष्प आ वियोगीक राजमोहन झाक कनहापर खुशीसँ झूमब। सुरेश्वर झा- जेँ हम प्रतिनिधि तेँ गोविन्द झा केँ पुरस्कार। रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा महेन्द्रकेँ तलाक दऽ अशोक संग झूमब। प्रभास कुमार चौधरी- जेँ गोविन्द बाबू मनि लेलनि जे हुनकर कथा हमर आ मामा (गुंजन) सँ घटिया छनि, तेँ। अक्कूक ब्लड-
प्रेसरक हाइ होयब, लटुआ कऽ खसब। विभारानीक आँचरसँ हवा करब, कि शोर, रमेश आ कुमार शैलेन्द्रक ईर्ष्या। अशोक लंगूरभक्त भीमनाथकेँ आकृ ष्ट करैत छथि।

सुमनजी द्वारा अशोककेँ कहब- जयकान्त बाबूक जमाना नहि छनि जे सब काज पाइयेपर हेतै, आब किछु पैरबीयोपर हेतै।

अशोक- उमानाथ बाबू, चेतकर बाबू, सुभद्र बाबूकेँ देखिकेँ डरा जायब आ स्वास्थ्य रक्षा पुरस्कारक गप कहब। ई उत्तर ककर से लेखनाथ मिश्र आ डॉ.

बासुकीनाथ झा द्वारा पूछब। मोहन भारद्वाज द्वारा आत्मप्रशंसा आ सुमनजी सँ फगुआ शिरोमणिक पुरस्कार। कुलानन्द मिश्र प्रतिज्ञा पूरा भेलापर अपन दाढ़ी छटयबाक लेल उपेन्द्र ठाकुरक घर दिस बिदा होइत छथि।

६

धन्य लालूजी जे आइ..

पं. ताराकान्त झा द्वारा मैथिलीकेँ बिहार लोक सेवा आयोगमे फेर सँ शामिल करबाबैले पटना उच्च न्यायालयमे जीत मुदा लालूजी द्वारा तकरा सर्वोच्चा न्यायालयमे लसकायब।

७

सम्पादकक नाम...

फचांड़ि मिसरक पत्र

८

एकालाप

मोहन भारद्वाजक साहित्य अकादेमी पुरस्कार नै भेटलापर आर्त्तनाद- रा जमोहन झा अहाँक रक्षा ने गौरीनाथ ने अग्निपुष्प ने सुभाषचन्द्र यादव कऽ सकत।

भांग पिबैत शिष्य सभ: अशोकक नेतृत्वमे रमेश, वियोगी आ श्रीनिवास।

तारानन्द वियोगी (अशोककेँ)- लड़ाइये देलिअइ अशोक भाइ अहाँ दुनू पी ठाचार्यकेँ (मोहन भारद्वाज आ राजमोहन झा)।

पुनश्च: बादमे विद्यानाथ झा 'विदित'क
उपन्यास 'विप्लवी बेसरा'क कलमतोड़ (गदगदी आ पलंगतोड़ समीक्षाक प र्याय) समीक्षाक बादो ओ हुनका पुरस्कार नै दियेलखिन्ह।

९

सफेदपोशक भतार

हवाला, यूरिया, वर्दीकाण्ड, पशुपालन, अलकतरा आदि घोटालाक वर्णन।

१०

जँ हम जनितहुँ

मूलधाराक मैथिलीक साहित्यकारकेँ देखबाक, चिन्हबाक आ भजारबाक अ वसर।

११

प्लेटोक सपना, भारत आ कौमार्य-राजनीति

प्लेटोक रिपब्लिकक फिलास्फर किंग आ आइ-
काल्हिक अविवाहित व्यक्तिक आचरणपर मनन।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१९.गजेन्द्र ठाकुर- शरदिन्दु चौधरीक तीनटा व्यंग्य संग्रह- 'बड़ अजगुत देखल..', 'गोबरगणेश' आ 'करिया कक्काक कोरामिन'

गजेन्द्र ठाकुर

शरदिन्दु चौधरीक तीनटा व्यंग्य संग्रह- 'बड़ अजगुत देखल..', 'गोबरगणेश' आ 'करिया कक्काक कोरामिन'

'बड़ अजगुत देखल..' प्रकाशित भेल २००५ मे,
'गोबरगणेश' प्रकाशित भेल २०११
मे आ 'करिया कक्काक कोरामिन' प्रकाशित भेल २०१६
मे। तीनू पोथी करिया कक्का शृंखलाक व्यंग्य पोथी थिक आ हुनकर संस्मर ण साहित्यसँ ई दू तरहेँ भिन्न अछि। करिया कक्का ओइ लोलुपताक प्रती क छथि जकरा अहाँ चीन्हि सकै छियन्हि मुदा ओ कोनो असली नाम नै छथि , मुदा किछु आलेखमे करिया कक्का निपत्ता छथि आ किछुमे असली नामब ला भूप सभ सायास प्रयन्तोक बादो
जबरदस्ती आबिये जाइ छथि। मुदा लेखक ऐ तीनू पोथीमे सँ 'बड़ अजगुत देखल..'केँ स्पष्टरूपेँ संस्मरणे कहै छथि। 'बड़ अजगुत देखल..'मे 'मुक्ति प

यबाक प्रयत्न' आमुखमे ओ लिखैत छथि-
"हम जे नै कऽ पौलहुँ, जे नहि सोचि पौलहुँ मुदा देखबामे आयल- सैह अछि - बड़ अजगुत देखलमे।"

१

'बड़ अजगुत देखल..'

<u>की मथै छी?</u>

"... हमर मैथिली.. जमाय-
ससुरक बहिकिरनी बनबा लेल विवश अछि... किछु सामाजिक कार्यकर्ताक आमदनीक साधन बनल अछि।"

<u>दर्शन-सुदर्शन</u>

"...चलू महाकवि विद्यापतिक चेतना समिति स्थित वासा...

.. 'अयं यौ के छथि नेपालवला नाटककार?'

'महेन्द्र मलंगिया दिया पूछै छी सर।'

..'दऽ दियौ ओही नाटककारकेँ एहि बेरुक चेतना पुरस्कार।'

..'मुदा हुनकासँ सीनियर...'

'ककरो तँ देबे करबै, छोट होइ की पैघ।..'

'कवि-
सम्मेलने बन्न भऽ जयबाक चाही। लोक रहिते ने छैक ओहिकालमे। ... होय बाक चाही तँ टाका जुटबियौ ने।... मैथिली अकादमी.. कवि-
सम्मेलनक नामपर पाँच हजार गछलक मुदा देलक दुइये हजार। बाँचत कत ऽ सँ डाँरेसँ घाटा लागि गेल छल।.. छपलाहा किताब सभमे दीवार लागल छै ..।"

.. नहि भागू यौ, यात्रीजी एकर स्थापना कऽ भागि गेलाह। आइ हुनकर फो टो टांगल छनि मुदा संस्थापकक दावेदार कैक गोटे भऽ गेलाह...

२

'गोबरगणेश'

<u>बोर्ड लागल टाटपर, सूतल छी खाटपर</u>

मैथिली अकादमीक दलानपर। ओहो वैह फगुआ गाबि रहल छह। दुनूटा भा षणमालामे अपन परामर्शीयेकेँ भाषणबाज बना देलकौह आ कहाँदन तेसर सँ सभटा पोथीक सम्पादन करा रहल अछि (अशोक, तारानन्द वियोगी आ मोहन भारद्वाजकेँ लक्ष्य कऽ)।

<u>तावत काल</u>

'एहने सन प्रयोग साहित्य अकादेमी सेहो कयलक जे जकरा होटल रहतैक सेहो परामर्शदातृ समितिक सदस्य बनि सकैत छथि।.. पटनोमे खूब कचरम कूट होइत। लेखक संघकेँ सम्मानक टाटक न

हि करय पड़ितैक।.. मैथिली लेखक संघ.. खाली अभिनन्दन-
वन्दन, ने कोनो स्पन्दन आ ने कोनो गर्जन। मात्र कलहंत जकाँ अभावक अ
रण्य-रोदन।"

<u>गोलैसी- 'अर्थात्'</u>

जाहि आलोचनाक पोथीकेँ लोकोक्तिक बैसाखी नहि चला सकल, जाहि आ
लोचनाकेँ 'अखियासल ', 'बेसाहल ', 'भजारल '
(रमानन्द झा 'रमण'क अर्द्ध-
समालोचनाक पोथी सभ) नहि भजा सकल तकरा गोलैसीक प्रतिमाने टा
मानल जा सकैछ ने!

सीडी समीक्षा

'रमण'जी ओतऽ जायब जरूरी अछि, ओ असक छथि... भारद्वाजजीक ले
खनीकेँ सक्रिय करबा लेल पंचलीटरा मोबिल लेबऽ लेल घेंटाजोड़ी कयने अ
शोक आ तारानन्द वियोगी नचिकेता मालिकसँ नेहोरा कऽ रहल छलाह मुदा
मुंशी रामलोचन कहि देलथिन जे एक बेर देलियनि *(मोहन भारद्वाजकेँ प्रबो
ध सम्मान चयन समितिमे रहितो प्रबोध सम्मान लेबा/ देबाकेँ लक्ष्य करैत)*
तँ उत्फाल मचि गेल छल आब देबनि तँ मिथिलो दर्शन लोककेँ नहि करा स
कबैक।.. जीवकान्तक जोगीरा आ अमरक विरहाक मिक्सर होयत, भीमना
थक गुलगुल्ला आ रामदेवक वाइप्रोडक्टक लीला होयत आ होयत पन्ना-
इन्दिरा-नीता-
सुशीला आ वीणाक झंकार.. मन्त्रेश्वरजीक बाँहि पकड़ल- फरब-
फुलायब। मुदा सख-
सेहन्ता नहि पूरल। .. नर इन्द्र लग गेलहुँ .. मुदा ओ तँ आर किदन निकलला
ह।... हुनका हीरा-

पन्नासँ फुरसतिए नहि। .. ई अग्निपुष्प थिक, एकरेसँ शृंगार करू.. कुणाल, सुकान्त आ साकेतानन्द.. ओ सभ समलैंगिक छथि.. विदितजी.... ओ तँ स्वयं रसिया छथि। प्रवासीजी संग संध्यावंदन करताह, ठकुराइन संग युगलबंदी करताह...'।

पाहुन इन्द्रकान्त झा.. झाजी वीरेन्द्र.. तार नेपालक उपराष्ट्रपतिसँ सोझे सो झ जुड़ल.. पं. योगानन्द झा.. वैद्यनाथ मिश्र, गणेश झा.. हमर मान-मर्दन करैत छथि..

बच्चा ठाकुरक नेतृत्वमे सुरेन्द्रनाथ, केदार कानन, रमेश चिचिआइत...फेर अ जित (आजाद) बाजय लगलाह-
.. जतऽ होइ ततहिसँ एस.एम.एस. कऽ एहि सरकारक ओहिना मदति करि यनि जेना राजमोहन झा आ प्रेमशंकर सिंहकेँ एस.एम.एस. क बलपर सर कारक दर्जा दैत रहलियनि।

३

'करिया कक्काक कोरामिन'

<u>बुद्धिक बखारीक वर्गीकरण</u>

मात्र दू गोत्र (भारद्वाज-
रमण) पाँजिक लेखक छोड़ि कऽ, कारण ई मैथिलीक पैथिलॉजिस्ट श्रेणीमे अबैत छथि।

<u>'लीव इन रिलेशन'सँ जनमल सुन्नर नेना</u>

पटनाक विख्यात समितिक विषपिपड़ी पी.आर.ओ. साहित्यकार एहू समारो हमे शामिल भऽ नेपाली साहित्यकार-
समाज संग तेहन ने राजनीति कयलनि जे क्षुब्ध भऽ ओ लोकनि बटुआमे आनल 'नेरू'
(नेपाली रुपया) सहयोग राशि ओहिना आपस अपना संगे लऽ गेलाह।

'सरकार'क लिंग परीक्षण

मैथिलक एक पुरुषवेश धारीकेँ अपन 'सरकार'
(विनोद कुमार झा केँ लक्ष्य करैत) बनौलह मुदा एक्कोटा काज ओ पुरुषव ला कऽ सकलथुन। कहियो आचार्य अरिष्टनेमीक बहिकिरनी बनि दिन कटल नि तँ आब एकटा संघमे द्रोपदी बनि सौभाग्यवती बनल छथुन।

व्यंग्य लिखबाक व्योंत

आचार्य अरिष्टनेमीक चर्च एतहु भेल अछि।

लुटन... आचार्य अरिष्टनेमी (चन्द्र नाथ मिश्र 'अमर') क दरबारी बनि मंच सभक तिरपेच्छन कयलह।...

<u>कोरामे नेना, नगरमे सोर</u>

'ई गोलैसिये ने छै हौ जे पुरना सरकार ठकैत-
ठकैत सत्ता रूपी गाछसँ तुबि कऽ नीचाँ खसि पड़ल मुदा भेद नहि खोललक आ आब देखह जे नवको सरकार वैह धुन गाबि रहल अछि।

<u>पुरस्कार विज्ञानक फलाफल</u>

योगानन्द चुटकी लैत बजलाह-
'अहाँ डाक्टर साहेबसँ पोथी विमोचन करेबै आ मिश्रटोलाक श्रीमान् आ हुन कर ओझाजीक वर्चस्व स्वीकार नहि करबैक तँ गाछसँ सेव नीचे मुँहे किए खसैत छैक से कोना बुझबै।'...

वीणा-
वादनक अभ्यासक संगहि 'इदं रसे, इदं गुद्दे'क सम्बोधनसँ मिश्रजी आ ओझाजीकेँ प्रसन्न करबाक प्रयास करथु...

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.२०. लक्ष्मण झा सागर- खाँटी मैथिलीस्ट शरदू जी

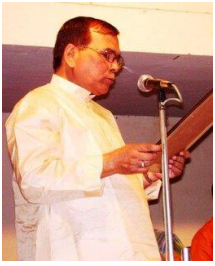

लक्ष्मण झा सागर

खाँटी मैथिलीस्ट शरदू जी

आइ हम एहन ओझरौटमे पड़ल छी जे की कहू। हमरा श्री शरदिंदु चौधरीजीपर लिखबाक अछि। की लिखबाक अछि से मोनमे सरिया नै रहल अछि। एहन सन स्थिति हमरा एहिसँ पहिने किनकोपर लिखबाक बेरमे नै भेल छल। हिनकापर एना कियै भऽ रहल अछि? कारण हमरा जनैत ई भऽ सकैत अछि जे शरदू जीसँ हमर जान पहचान कहिया भेल, कोना भेल आ कियै भेल से हमरा स्मरण शक्तिमे क्रमवार सैंतल नै अछि। तँ की हम हुनकापर लिखब छोड़ि देब? नै, हम लिखब। लिखबाक चेष्टा करब। जहिना हैत तहिना लिखब। जेना-जेना जे-जे फुरत से-से लिखब।

मैथिलीमे बहुत एहन साहित्यकार सभ छथि जे बाबा बले फौदारी करैत छथि। शरदू जी से नै करैत छथि। ई बात सत्य अछि जे हिनका शरीरक रक्त नलिकामे अपन पिता स्व सुधांसु शेखर चौधरी जीक लहू बहैत रहैत अछि। सम्पादक जीक नामसँ विख्यात मिथिलाक महान व्यक्तित्व शेखर जी मिथिला मिहिर , पटनाक सम्पादनसँ आधुनिक मैथिली साहित्यक वर्तनीक एकटा एहन डड़ीर पारि देलनि जे मैथिली साहित्यक मानक वर्तनी बनि गेल।

आ मैथिली साहित्यक रचना ताहि स्वरूपमे आइ धरि भऽ रहल अछि। से नहियो भऽ सकैत छल जँ हुनका एकमात्र पुत्र रत्न शरदू जी सन उत्तराधिकारी नै भेल रहैत। शरदू जीक जीवनक सबसँ पैघ उपलब्धि ई छनि जे अपन पिताक अधिकांश साहित्यिक रचनाक पोथी प्रकाशित केलनि। एखनो ताकि-हेर कइए रहलाह अछि। एहि पोथी सबकेँ एलाक बादे मैथिलीक साहित्यकार सभ कें शेखर जीक बहुआयामी प्रतिभाक मादे विशेष परिचय भेलनि। एहि कृत्य लेल शरदूजीकें जँ आधुनिक मिथिलाक श्रवण कुमार कहल जाय तँ कोनो विस्मय नै हेबाक चाही।

मात्र ततबे नै। पिताक एहन आज्ञाकारी पुत हैब दुर्लभ नै तँ मुश्किल जरूर अछि। राजनीति शास्त्रसँ एम.ए केलनि। सचिवालयमे सरकारी नोकरी भऽ रहल छलनि। पिता कहलखिन जे ई नोकरी नै करू। सत्य नै बाजि सकब। निर्भीक बनल नै रहि हैत। हिन्दी लिखय-बाजय पड़त। नै केलनि से नोकरी। अपन हृदयपर हाथ राखि सब गोटे सोचू जे कै गोटे छी हम सब जे मैथिली लेल अपन जीवन के दाँवपर लगेने छी। शरदू जी से लगेने छथि। मिथिला-मिहिर, पटनाक सम्पादन विभागमे अपन योगदान देलनि। अपन जीवन-यापन लेल अल्प दरमाहाकेँ अपन बोइनि बूझि खूब मोन लगा कऽ सम्पादन विभागमे पहिने प्रशिक्षण आ पछाति नोकरी करय लगलाह से ताधरि केलनि जा धरि इन्डियन नेशन प्रेस चलैत रहल। हमर परिचय शरदू जीसँ तहियेसँ अछि। दुनू गोटेक बीच खूब पत्राचार होइत रहैत छल।

पिता हिनक दरभंगाक जे अपन मरौसी जमीन-जायदाद छलनि तकरा बेच-बिकनि कऽ पटनामे घर बनेलनि। पिताक देहांत के बाद शरदू जी अपन घरक मुखिया भेलाह। हिनको एकमात्र पुत्र आयुष्मान राजाशेखर चौधरी एखन बेंगुलुरूमे कार्यरत छथि। चारि टा पुत्रीमे छोटकी एखन उच्च शिक्षा ग्रहण कऽ

रहल छनि पटनेमे। लगमे वैह बेटी आ पत्नी रहैत छथिन। एकटा बेटीक बियाह मैथिलीक स्वनामधन्य गजलकार श्री जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल जीक पुत्रसँ भेल छनि। दोसर बेटीक वियाह मैथिलीक दिवंगत कवि सुकांत सोमक बालकसँ भेल छनि। सभ गोटे सुखी आ सम्पन्न छथिन। आमदनीक जरिया घरक किराया आ शेखर प्रकाशनसँ प्राप्त आय छनि। ने बड़ सुखी आ ने तेहेन दैन्य स्थिति छनि। अपन सब आवश्यक खर्च जुमि जाइत छनि। शरीर आ स्वास्थ्यसँ सब दिन कमजोर रहैत आयल छथि। तीन बेर हृदयपर आघात भेल छनि। अस्पतालमे भर्ती हुअय पड़ल छनि। मुदा,अपन आत्मबल आ जीजिविषाक जोरपर सब बेर स्वस्थ भऽ कऽ घर आबि जाइत छथि। बहुत साहसी लोक छथि शरदू जी।

नब्बेक दशकमे हम अपन कम्पनीक काजसँ पटना गेल रही। होटलमे रूकल रही। शरदूजीकें फोनपर खबरि केलियनि जे भेंट करय चाहैत छी। हमरा कहलनि जे ४ बजे जमाल रोडमे श्री विनोद कुमार झा जीक (देसकोस वाला) कोरियरक दुकानमे आबि जाउ। हम समयपर चल गेल रही। विनोद जीसँ (कलकत्तेसँ परिचय रहय) गप-सप करिते रही कि देखैत छी दू गोटे आबि गेलाह। दुनू हमरा लेल अनजान। विनोद जी परिचय करेलनि। उज्जर दप-दप केश आ झुनकुट पाकल दाढ़ी वाला लक-लक पातर शरदू जी रहथि। संगमे रहथिन युवा पत्रकार अजित आजाद। गोर-नार,शुभ्र- शाभ आ आकर्षक व्यक्तित्व बला छवि। परिचय पातक बाद शरदू जी हमरा (आग्रह आ अधिकारक मुद्रामे) कहलनि जे अजितकेँ कतहु नीक नोकरी लगा दियनु। हम अनुभव कैल जे शरदू जी मैथिलीक नव लोक लेल कतेक उपकारी छथि। आ हुनक ई स्वभाव एखनो बदस्तूर कायम अछि।

श्री उदय चन्द्र झा विनोदजीकेँ अपन पोथी प्रकाशित करेबाक रहनि। पाइक अभाव रहनि। शरदू जी लग गेलाह। शरदू जी उधारी पोथी छापि देलखिन।

एखनो धरि हिसाब नै फरियेलनि अछि। श्री केदार कानन कोनो मुसीबतमे फँसि गेल छलाह। शरदूजीकें पता लगलनि। तुरत श्री मंत्रेश्वर झाजीकेँ लऽ जा कऽ न्यायाधीश श्री मति मृदुला मिश्राजीसँ पैरवी करबेलनि। मामिला रफा-दफा भेल। केदारजीकें फारकती भेटलनि। एवं प्रकारें शरदूजी मैथिलीक बहुतो साहित्यकारककेँ उपकार करैत रहलाह अछि। मुदा, हुनक हस्त रेखामे यश नै लिखल छनि। हुनका लग एहन करीब १५० टा साहित्यकारक लिस्ट छनि जिनका लग हिनक पाइ बाँकी छनि। एक दिन कहैत छलाह जे हम एकटा पत्रिका निकालब। नाम रखबै पोल-खोल। सबहक नाम छापि देबैक। आइ जे सब गोटे अपनाकेँ मैथिलीक महन्थ कहैत छथि से सब कतय भऽ के रहताह? मुदा, से शरदू जी करताह नै। कियैक तँ हुनकर हृदय जहिना उदार छनि तहिना साफ सेहो छनि।

शरदूजीकें हम मूलत: पत्रकार मानैत छियनि। से कोनो इड्डी-गुड्डी वाला पत्रकार नै। एकदमसँ निष्पक्ष,निर्भीक,सचेतन आ प्रखर छवि वाला पत्रकार। जे कियो हिनक संपादनमे प्रकाशित समय-साल, पुर्वोत्तर मैथिल (गुवाहाटी), चेतना समिति, पटनाक स्मारिका देखने आ पढ़ने हैब से जनैत हैब हिनक सम्पादनक वैशिष्ट्य। हिनक सम्पादकीय केर धार। हिनक मानक मैथिलीक छटा। रचनाक संरचना। सामयिक टिप्पणी जे राजशेखरक नामसँ टिपैत रहथि। मुद्दा राजनैतिक हो, मैथिलीक विकासक हो, गाम-घरक खेतीक समस्या हो, शहरक विद्रूपता हो शरदू जीक बेबाक लेखनीसँ सब गोटे परिचित छीहे। हिनक मारुख कटाक्ष सत्ताक गलियारीमे गुँजैत रहल अछि। शरदू जी कोनो राजनैतिक दलक लोक नै छथि। एकटा तटस्थ विचारधाराक हस्ती छथि। हुनका कियो अपन सिद्धांतसँ झुका नै सकैत छथि। आ ने ओ किनको लादल विचारसँ प्रभावित होइ वाला जीव छथि। यदि शरदू जीक स्वभावमे कनियों लचीलापन रहितनि त आइ ओ पटनामे मैथिलीक धारे झा रहितथि।

मैथिलीक साहित्यकार सभक दरबार होइत हिनका लग। मैथिली सेवी संस्थाक अधिकारी सभ हिनक चारण रहितनि। चेतना समिति, पटनामे जे चाहितथि से करबा सकैत रहथि। घर-बाहर पत्रिकाक सम्पादक बनि गेल रहितथि। कैक टा सम्मान आ प्रशस्ति पत्र घरमे जमा भेल रहितनि। मुदा, से सब किछु नै भेलनि। पटनाक हनुमान जी मंदिर लग एकटा साधारण पोथिक दोकान छनि। ताहि ठाम बैसल रहैत छथि। मैथिलीक गतिविधिकेँ अकानैत रहैत छथि। पटनाक साहित्यकारक नजरिमे उफाँटि बनल एकोर भेल रहि रहल छथि शरदू जी।

शरदू जी बनब सभक वशक बात नै अछि। समकालीन साहित्यमे अपन व्यंग्य विधाक मौलिक पोथी सभ लिखि एकटा स्तरीय साहित्यकारक श्रेणीमे हिनक नाम उल्लेखनीय रहल अछि। करिया काकाक कोरामिन, जँ हम जनितहुँ, साक्षात्कारक दर्पणमे आदि-आदि हिनक पोथी प्रकाशित छनि। सभटा पढ़बाक प्रयोजन अछि, हिनक लेखनक विशेषता के जनबाक लेल। हिनक शैली, शिल्प आ बिम्ब-विधान हिनक अप्पन छनि। रजनी-सजनी आ हल्लुक-उत्थर बात नै लिखलनि कहियो। जे लिखलनि जतबा लिखलनि से समय साक्षेप लिखलनि। समाजोपयोगी लिखलनि। अपन सम्पादनमे दू टा पोथी प्रकाशित केलनि जे बहुत महत्वपूर्ण काज भेल अछि। एक तँ पत्रकारिताक दशा आ दिशा जे लोक सेवा आयोगक परीक्षा लेल सहयोगी पोथी अछि। दोसर मिथिलाक ज्वलन्त समस्या मिथिला राज्य लेल पक्ष आ विपक्षपर भेल परिचर्चाक संकलन। मिथिला राज्य अभियानी लोकनि लेल मीलक पाथर अछि।

हम अधिकारपूर्वक ई बात कहबा ले बाध्य भेल छी जे शरदू जी कोनो पुरस्कार आ सम्मान लेल कहियो रेसमे नै रहलाह। सब दिन मैथिलीक सेवामे अपस्यांत रहैत छथि। संघीय लोक सेवा आयोग आ बिहार लोक सेवा आयोगक

परीक्षार्थी सभ लेल चयनित पोथी सभक जोगार करेबामे दिन भरि लागल रहैत छथि। एक दिन रातुक १२ बजे हमरा फोन केलनि जे मणिपद्म जीक लोरिक विजय बजारमे उपलब्ध नै अछि। विद्यार्थी सभ परेशान आ चिंतित छथि। कोर्समे लागल छैक। एहि पोथिक प्रकाशक कलकत्तेक मिथिला सांस्कृतिक परिषद अछि। अहाँक मदति चाही। तावत हम अपना लग जे एक प्रति बाँचल अछि तकरे जेरॉक्स करा कऽ हम बिद्यार्थी सभकें वितरित कय रहल छी। से सहीमे अपन खर्च कऽ कऽ नि:शुल्क विद्यार्थी सभकें बँटैत छलथि। एना हम स्व किशोरीकांत मिश्रजीकें आग्रह कय पोथिक दोसर संस्करण प्रकाशित करबाय दोसर सालक लेल उपलब्ध करबा देने रहियनि। माटिपरक काज करैत छथि शरदू जी। एक दिन कहलनि जे हमरा एहिसँ पैघ उपलब्धि आर की हैत जे हमरा सहयोगसँ देश विदेशमे रहनिहार आइ.ए.एस, आइ.एफ.एस आ आइ.आर.एस करीब १५०सँ ऊपरे। ओ सभ फोनपर हमरा सर कहैत छथि आ हमर हाल समाचार पुछैत छथि। बी.डी.ओ, सी.ओ ,कलक्टर आ एस.पी तँ बूझू जे हमर दासो-दास बनल रहैत छथि। के छथि मैथिलीमे एहन कलामी से हमरा देखाउ तँ।

एकटा आर बात कहि कऽ हम विराम लेब। शरदू जी पराकाष्ठाक इमानदार लोक छथि। एक बेर पूर्वोत्तर मैथिल पत्रिकाक बिक्री मूल्य सब मिला कऽ हम हुनका ५०० रुपैयाक चेक कोरीयरसँ पठेलियनि। हुनका भेट गेलनि से निस्तुकी रूपेँ हम निचैन भऽ गेल रही कियैक तँ पावतीमे हुनक पुत्र राजा शेखर दस्तखत केने छल। हम समय-समयपर अपन बैंक बैलेंस मिलबैत रहैत छलहुँ। हमर बैलेंस घटि नै रहल छल। जहन छह मास बीत गेलै तखन हम फोन कऽ हुनका पुछलियनि जे चेक हमर वाला बैंकमे जमा नै केलियै तँ फटसँ हमरा कहैत छथि जे प्रेमकांत चौधरी जी हमरासँ मँगबे नै केलनि तँ हम कोना आ कियै जमा करितहुँ। भेटत एहन लोक मिथिलामे?

अंतमे हम अपन अनुज तुल्य शरदू जीक उत्तम स्वास्थ्य लेल माँ मैथिलीसँ मंगल कामना करैत छियनि आ विदेहक समस्त टीमकें हार्दिक आभार व्यक्त करैत छी जे मैथिलीक एकांत साधक श्री शरदिंदु चौधरी जीपर विशेशांक बहार कऽ अहाँ लोकनि मैथिलीक बड़ पैघ उपकार कैल अछि।

-संपर्क-लक्ष्मण झा सागर, कोलकाता/ १३.११.२०२२ 9903879117

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.२१.जगदानन्द झा 'मनु'- सत्य देखल

जगदानन्द झा 'मनु'

सत्य देखल

श्री शरदिन्दु चौधरी जीक जीवन एकटा पत्रकारिता व साहित्य केर विद्यार्थिक लेल मीलक पाठर साबित भय सकैत अछि। श्री शरदिन्दु चौधरी एक गोट श्रेष्ठ पत्रकार, समृद्ध लेखक आ साहित्यकार तँ छथिए संगे संग ओ छथि एकटा कोमल करेजाक स्वामी। जखन ओ देखत छथि समाजमे धर्म आ राजनीतिकेँ ओटमे लोक फरेब आ कारी व्यापार कय रहल अछि तँ ओ दुख फेंटल आश्चर्य संगे तमसा सेहो जाएत छथि आ ई सब हुनक मोनक भाव हुनक लेखनीसँ साक्षात्कार होइत अछि।

हुनक भाषा आ भाषाशैली चाहे ओ पत्रकारक रूपे हुएथि व्यंग्यकार बा साहित्यकार रूपे सहज आ मधुर अछि। हमरा एहेन जीवन भरि मिथिला मैथिलीसँ दूरो रहै बला विद्यार्थिकेँ करेजामे हुनक एक एकटा आखर मउध जकाँ मीठ घोलैत पसरि जाइत अछि। ओ जतए जे कहै चाहैत छथि ओ कियो सहजतासँ बुझि सकैत अछि। एहि गुणक कारण भय सकैत अछि हुनक विताएल तीन दशकसँ बेसी समय जे पत्रकारिताक मात्र सेवेटा नहि रहल वरन ओ मैथिली पत्रकारिताक लेल एकटा साक्षात्कार रहला।

रहल जस अपजसक गप्प तँ ई अप्पन हाथमे नहि छैक। हम सभ ओनाहितो बुझै छीयैक जे मैथिली साहित्यमे गुणसँ बेसी गालबजाउन, गुटबंदी आ तूँ हमरा दें हम तोरा देबौकेँ चलन बेसी छैक। मिथिला मैथिलीक समाजक एहनेसन रंग देख कय शरदिन्दु चौधरीक मुँहसँ निकलल होएत "बड़ अजगुत देखल"। शरदिन्दु चौधरीक पोथी "बड़ अजगुत देखल" कहै लेल ई व्यंग्य संग्रह अछि मुदा वास्तवमे ई कामदेवक वाण सनक अछि। जाही वाणक घावसँ सोनीत बहैत कियौ नहि देखै छैक मुदा मनकेँ तार तार कय दै छैक। आओर इहे हाल होएत अछि एकटा सुधि आ निष्पक्ष पाठकक जखन ओ शरदिन्दु चौधरी जीक व्यंग्य संग्रह "बड़ अजगुत देखल" पढ़ैत छथि। असलमे कही तँ "बड़ अजगुत देखल" पढ़ला बाद बुझना जाइत अछि जेना सत्य देखने होई वा सत्यसँ साक्षात्कार भेल हुए। लेखक स्वयं पोथीक भूमिका "मुक्ति पायबाक प्रयत्न"मे कहैत छथि, "ई ने हास्य अछि, नें व्यंग्य अछि, हमर कहबाक एकटा ढंग अछि।"

आ जँ हम कही तँ, "ई ने हास्य अछि, नें व्यंग्य अछि, शरदिन्दु चौधरीक कहबाक एकटा ढंग अछि। जाहिमे देखाइत छैक सभकेँ अपन कर्तव्य आ काज मुदा परचट्ट जकाँ सभकियो आँखि कान केने अपन बंद अछि।

एही व्यंग्य संग्रहकेँ तरकशमे कुल बीस गोट व्यंग्य रूपी वाण राखल अछि, जे समाजक अगुआ, नेता, मठाधीश, संगठाधीश, सभक कृतकेँ देखार कय रहल अछि आ एहिमेँ शरदिन्दु चौधरी जीक कहैक ठंग आ लेखनीक जतेक प्रसंशा कएल जेए से कम।

पहील व्यंग्य, "जनहित"मे कोना करिया कक्का बाढ़ि सहाय काजमे आयल करोड़ो रूपया संतोष झाक द्वारा गवन कय लेलाक कारणे तमसाएल लोकसभकेँ कोना शांतेटा नहि कएला, संतोष झाक कुकर्मकेँ झंपैत अपन

अपन धरकेँ भरैकेँ पुरा इंतज़ाम कय सेला। आजुक समयमे सगरो एहिना भय रहल छैक। तूहुँ खो हमहुँ खाइ छी, जनता जेए चुल्ही तअर।

दोसर व्यंग्य "धन्यवाद ज्ञापन" कोना दुर्गा पूजाक उत्सब धूम धामसँ मनाएल गेल। भांगड़ा, डांडिया, गरबा, बिहू, पहाड़ी नाच सहित देश विदेशक सांस्कृतिक कार्यक्रम बहुत नीकसँ प्रस्तुत केएल गेल। नहि प्रस्तुत रहेए तँ मिथिला मैथिलीक गीत संगीत कला लोककथा आ सांस्कृतिक कोनो कार्यक्रम। सब कार्यकर्ता संयोजक आ कलाकार सभकेँ धन्यवाद ज्ञापन दै काल एकरा स्वीकार करैत कोना करिया कक्काक गला अवरुद्ध भ गेलनि ।

"मोआबजाक खोजमे" वस्तुतः मिथिलाक बाढ़ि आ माओवादीक संकट आ सरकार द्वारा कोनो निवारण नें कय कोना छूच्छे मोआबजा द क अपन इतीश्री बुझैत अछि। मोआबजा सेहो की तँ पाँच शेर अनाज वा किछु सय टाका। एहि बहाने एहीठाम मिथिलाक धरती परक लोकक मूल्य लगाएल गेल अछि। वस्तुतः रोचक सत्य, अकल्पनीय आ चिन्ताजनक। वास्तवमे शरदिन्दु चौधरी जीक कहबाक ढंग ज़बरदस्त अछि।

'की मथै छी।'

'मिथिला।'

'की तकै छी।'

'मैथिली।'

'भेटल ?'

'नइं।'

ई उत्कृष्ट संवाद थिक "की मथै छी ?"सँ ज़बरदस्त। प्रतेक बर्ख विद्यापति पर्वमे मिथिला मैथिली विकासक निमित्त काज आ ओकर विभिन्न पक्षकेँ देखाबैत "की मथै छी?" व्यंग्य व्यंग्य नहि भय कऽ वास्तविक चित्रण अछि जेकरा लेखक अपन शव्दमे कहि हमरा सबहक गालपर एकटा जोड़गर थापर मारैत सुतल मिथिलाबासीक आँखि खोलैक पूरा प्रयास केने छथि।

"दिव्य ज्ञानक प्राप्ति"मे स्तनपान सप्ताहकेँ केन्द्रित करैत कतेक आसान शव्दमे लेखक सबहक सामने गप्प राखैमे सफल छथि। संगे चिन्तित सेहो। समाजमे स्त्रीकेँ कोना एकटा वस्तु बुझल जा रहल अछि। स्त्री सेहो ओहिमे खुस भ अपनाकेँ वस्तु मानि, हुनक वस्तु नहि खराप भ जाइन तेँ डरे कोना बच्चाकेँ ईश्वर प्रदत अमृतसँ दूर राखि अपन एकटा नव प्रवृत्तिक निर्माण कय रहल छथि।

"दर्शन सुदर्शन"मे दुकान जकाँ मिथिला मैथिलीक संस्थान/ विद्यापति पर्वक संस्था, पुरस्कार वितरण, कवि सम्मेलनक वास्तविकताकेँ उजागर केएल गेल अछि। ख़ास कय पटनाक चेतना समितिक कार्य प्रणाली आ अवरुद्ध मिथिला मैथिलीक विकास कार्यकेँ कटाक्ष करैत सम्पूर्ण व्यवस्थाकेँ नांगट कय देने अछि। शरदिन्दु चौधरी जीक शव्देमे एकटा निष्पक्ष आ निरगूट साहित्यकारक लेल" जाइत छी तँ जाउ, मुदा ई जानि लिअ जे कतबो लिखब, कतबो पढ़ब अहूँक वैह गति होएत जे विद्यापतिकेँ भेलनिहेँ। अहूँ ओहिना कोनो कोनटामे मुँह नुकोने नुकायल रहब। नाम सभ अवश्य लेत, सप्पत भने अहाँक खायत, संकल्पो अहीँक नामपर लेत, मुदा करत वैह जे ओकरा मोन होयतैक। पड़ाइत रहब तँ एहिना पड़ाइते रहि जायब।"

"हम मैथिल छी" मे उजागर केने छथि देश सहित मिथिला आ खासकय मिथिलाक गामक बेरोज़गारीक मार्मिक दृश्य। संगे जाहि काजमे मैथिल सबसँ आँगा अछि ओकर ज्ञान करबैत छथि, आ ओ काज अछि राय देनाई।

चुनावी तुक्कामें आजुक समयकेँ राजनीति, चुनाव आ चुनाव व्यवस्था, नेता आ जनताक बीचक सम्बंध एक एक टाक खोंइचा छोरा कय ओकर वास्तविकताकेँ देखार केएल गेल अछि। कोना नेता लोकनि भोटरकेँ भेंड़ा बुझि ओकरा अपना पक्षमे करबा लेल जाति पातिक फूटवार कय अप्पन लक्ष साधैमे निपुण छथि। ओतय जनता सेहो आब बूझनुक होयबाक चेष्टामे लागल अछि। जाति पातिसँ उपर भ जीवन रक्षाक बातपर, बात करैक लेल तैयार भ रहल अछि।

कोना नेतासभ काजक बलपर नहि टाकाक बलपर जनताकेँ किनैक चेष्टा करैत अछि। कोना पार्टी सभक प्रदेश कार्यालयमे टिकटक बिक्री आ ओकर बादो असफल भेलापर कोना पार्टीक अदला-बदली होइत छैक।

रौदी दाहीक कारणक संगे कोनो उद्योग धंधाक नहि रहने कोना मिथिला समाजक युवाशक्ति रोज़गारक खोजमे पंजाब हरियाणा ओगरने छथि, आ गाममे बचल लोग आवयबला मनीआर्डर पर वकोध्यान लगोने रहैत छथि। कोन मुँहे नेतासभ एहि मूलभूत आवश्यकताकेँ नहि देख पबैत छथि। नेता की नेता जनतो सब अपन अपन वास्तविकता व मूलभूत समस्याकेँ नहि देखि जातिपातिकेँ राजनीतिमे ओझरा अपन विकाससँ दूर पड़ेल जाएत छथि। राजनीति पार्टीमे चोर बनोलक अधिकता आ झगड़ाक एतेक नीकसँ लेखक उजागर केने छथि से वास्तविकतासँ साक्षात्कार करबैत, हमरा सभकेँ अपन राजनीति आ समाजीक व्यवस्थापर एकबेर फेरसँ सोचै लेल विवश कय दैइए।

"हम की करबै सरकार" मे जनताक संगे संग व्यापारी वर्गक व्यथाकेँ बहुत नीकसँ उजागर कएल गेल अछि। कोना व्यापारी सभ महंगाई संगे हाटक चुंगीं, बाजारक रंगदारी संगे संग चुनाव टेक्स सेहो सहैत अछि। चुनाव टेक्स

नहि देलापर जानमालकेँ से हानि, आ ई ककरोसँ छूपल नहि छैक। उपरसँ ग्राहकक चिखनापर चिखनाक मांग।

समाजक सब पक्षक अव्यवस्थापर एतेक सटीक आ सूक्ष्म ध्यान देनाई ई शरदिन्दु चौधरी जीक कलमकेँ अलावे आन ठाम नहि देखा सकैत अछि ओहो एतेक सहज आ व्यंग्यक रूपमे।

मिथिलाक घूरतर बैसल लोकसभ सेहो आइ काल्हि आर्थिक आ राजनीतिक व्यवस्थासँ व्यथित भय एहने गप्पसप्प करैत छथि। मिथिलाक आमलोकेँ एखन धरि चुनावक गरमी ओतेक नहि गरमा सकलै जे ओ घूर छोड़ि चुनावक मैदानमे उतरि, समाजक विकास लेल काज क सकै। ओ तँ पचास वर्षसँ चुनाव आ ओकर कार्यक्रमक आदि भ चुकल अछि। कोनो नेता आबैत हुनका लेल सब एकसमान जेहने नागनाथ, तेहने साँपनाथ। आ एहि नागनाथ साँपनाथकेँ झगड़ा आ तुलनात्मक अध्ययन करैत हम सब शरदिन्दु जीक एहेन हीराक चमककेँ नहि देखैत हुनका ओ मान सम्मान नहि द पेएलिअनि जिनकर ओ हक़दार छथि। ईहे विडम्बना अछि मिथिला मैथिलीक साहित्य, समाज आ राजनीतिक, नागराज सांपराजमे ओझराएल, ओहिसँ बाहर निकैल आगू देखैक आवश्यकता हमरा सबकेँ अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.२२.श्रीधरम- शरदिन्दु कुमार चौधरीक साहित्य : 'स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती'

श्रीधरम

शरदिन्दु कुमार चौधरीक साहित्य : 'स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती'

आदिकाल सँ मुख्य रूपें दू प्रकारक साहित्यकार होइत रहलाह अछि। पहिल राजा-महाराजा आकि सत्ताक लेल चारण कोटिक साहित्य लिखनिहार आ दोसर समाजक लेल जनसाहित्य लिखनिहार। ओना कलावादी ललित-साहित्यकारक सेहो अपन ख्यात परंपरा रहल अछि। राजा-महाराजा सँ भेटय बला अशर्फी-तमगाक स्थान आब लोकतंत्री सरकारी पुरस्कार ल' लेलक अछि। वर्तमान मे एहन 'अधसर' लेखक-कवि सभक पैघ संख्या अछि जे सामाजिक यथार्थ आ जन-साहित्य लिखबाक स्वांग मात्र करैत छथि, मुदा भीतर-भीतर पुरस्कार-तमगा पयबाक लेल कुचक्रक नाली मे डुबकी लगबैत रहैत छथि। ओना सभ काल मे एहन लेखक-बुद्धिजीवी होइत रहलाह अछि जे 'संतन को कहाँ सीकरी सों काम ?...' कहि सत्ताक अभिमान कें मर्दित करैत रहलाह। साहित्यक इतिहास मे दुनू प्रकारक उदहारण उपलब्ध अछि। मैथिली साहित्य सेहो एहि प्रवृत्ति सँ विलग नइँ अछि। मैथिलीक-साहित्यक दुर्भाग्य ई छै जे जेना-जेना ई भावुकताक शिकार भ' 'मां-मैथिली' बनि किछु खास वर्ग आ जातिक चाँगुर मे फँसैत गेल, तेना-तेना एकरा सँ पाठक छिटकैत चलि गेल। आलोचना पर पुरस्कारक गोलैसी हावी होइत चलि गेल आ साहित्य-

लेखनक उद्देश्य अकादेमी आ अन्य पुरस्कार पयबा लेल तोड़-जोड़ धरि सिमटि क' रहि गेल। एहना मे इमानदार साहित्यकार लेल कुंठित होयब सेहो स्वाभाविक अछि।

साहित्यकारक लेल कथनी आ करनी मे एकरूपता होयब परम आवश्यक। ओना एहन साहित्यकार कें आंगुर पर गानल जा सकैत अछि। पोथीक संख्या किंवा ओकर ओजन सँ कोनो साहित्यकारक लेखनक गुणवत्ताक नइँ मूल्याङ्कन कयल जा सकैत अछि। शरदिन्दु कुमार चौधरी एहने लेखक-पत्रकार छथि जिनकर लेखनक पन्ना चाहे कम छनि, पोथीक ओजन चाहे बहुत कम छनि मुदा हुनकर शब्दक ओजन एतेक भारी छनि जे कहियो ओकरा मैथिली साहित्य सँ मिटायल नइँ जा सकैत अछि। शरदिन्दु जीक लेखनक आत्मा व्यंग्य छनि जाहि मे हास्य ठोर पर अबै सँ पहिने बिला जाइत अछि। ताहू मे ओ व्यंग्य कें संस्मरण आ रिपोर्ताज संगे गुँथि दैत छथि। व्यंग्य लीखब अपना आप मे तलवार केर धार पर चलब होइत छै। जकरा व्यक्तित्व मे ईमानदारी नइँ छै, कथनी आ करनी मे फाँक छै, तकरा लेल व्यंग्य लिखब असंभव अछि। व्यंग्यकार कें सब सँ पहिने अपन लेखन के कीमत गमाब' पड़ैत छै। से कीमत निःसंदेह ई लेखक सेहो गमेने हेताह, ताहि मे कोनो शंका नइँ। व्यंग्य मूलतः प्रवृतिगत होइत अछि, व्यक्तिगत नइँ। व्यंग्य मे व्यक्ति-चरित्र अंततः प्रवृत्ति बनि जाइत अछि। ई अलग बात जे शरदिन्दु जीक व्यंग्य मे कएक ठाम व्यक्ति, चरित्र आ प्रवृत्ति पर भारी पड़ि जाइत अछि।

शरदिन्दु कुमार चौधरीक चारि टा व्यंग्य-संग्रह प्रकाशित छनि- 'जँ हम जनितहुँ', 'बड़ अजगुत देखल', 'गोबर गणेश' आ 'करिया कक्काक कोरामिन'। एहि व्यंग्य सभ मे साहित्य सँ समाज धरिक विद्रूपता पसरल

अछि। लेखक 'जँ हम जनितहुँ' के भूमिका मे लिखैत छथि जे ओ मैथिलीक जाहि व्यक्ति सभक संपर्क मे अयलाह सैह हुनकर व्यंग्यक आलंबन बनैत गेलाह। हुनके शब्दें- "हुनका लोकनिक (व्यक्तित्वक) आकलन करब जतेक कठिन बुझायल अछि ताहि सँ सरल फूसि बाजब बुझाइत अछि। दोहरी चरित्रक निर्वाह करब जतेक सरल बुझायल ताहिसँ बेसी कठिन हास्य आ व्यंग्य कें फरिछायब बुझायल।" यैह कारण थिक जे हिनकर व्यंग्य मे एक सँ एक व्यक्तिचित्र भेटैत अछि से प्रतीक अथवा छद्म रूपें नइँ अपितु अपन मूल नामक संग मुदा असली चरित्र मे बेनकाब होइत। जहिया सँ साहित्य अकादेमीक तोड़ा मैथिली कें भेट' लागल तहिया सँ प्रायः अधिकांश पाठक उर्फ लेखक केर क्रांति एही 'तोड़ा' धरि पहुँचबा लेल सीमित होइत गेल। एहि क्रम मे एक सँ एक प्रतिभा कें कतियाबैत एहि पुरस्कारक बन्दरबाँट होइत रहल। शरदिंदु जीक एहि पोथीक पाहिले शीर्षक थिक 'अथ ऑपरेशन साहित्य अकादमी'। ई व्यंग्य दू शताब्दीक मुहाँन पर लिखल गेल अछि जे 'साहित्य अकादमी' पुरस्कारक तोड़-जोड़ आ गोलैसी कें रेखांकित करैत अछि। मैथिली मे जे व्यक्ति साहित्य अकदेमीक प्रतिनिधि होइत अछि से कोना ओकरा अपन बपौती मानि अपन संतति अथवा कुल-खानदान कें अकादमिया-लेखक बना दैत अछि तकर प्रमाण अछि ई व्यंग्य। एहि मे दू व्यक्ति लेखक बनबाक आ अकादेमी हथियेबाक प्लान बना रहल अछि- "हम आ तों, भोला आ बमभोला मिलि क' तेहन-तेहन ने गोला छोड़ब जे बड़का-बड़का पागधारीक मुँह तौला जकाँ खुजले रहि जयतनि आ हम आ तों सर्र द' आकाश चढ़ि जायब जेना एखन एकटा ससुर-जमायक जोड़ी साहित्य अकादमीक अकाशमे विचरण क' रहल छथि।"

मैथिलीक नाम पर जतेक सरकारी अथवा गैर सरकारी संस्था सभ अस्तित्व मे आयल तकर कर्ता-धर्ता दिनानुदिन वर्ण-व्यवस्था जकाँ जन्मना आ मजगूत होइत गेल। वर्णव्यवस्था भले कनेमने ढील भेल हो मुदा एहि

संस्था सभक व्यवस्था पर एखनो खानदानी राज कायम छै- "जेना चेतना-समितिमे कतबो कटाउझ होइ छै, तैयो ओकर बागडोर एक्के (काका-भातिज) घरमे रहैत छै तहिना हमारा भेटय की तोरा, रहत तँ अपने घरमे ने।" अकादेमी पुरस्कारक अंतर्व्यूह रचना पर जँ शोध कैल जाए त' एकर माठाधीसी परंपराक कतेको गूढ़ रहस्य पर सँ पर्दा उठि सकत। ई अलग बात जे कतेको उल्लेखनीय पोथी कें ई पुरस्कार भेटल अछि मुदा प्रश्न ई अछि जे की ओ पुरस्कार उचित आ ईमानदार प्रक्रिया सँ भेटल आकि माठाधीसक सामने दंडप्रणामी सँ, से उल्लेखनीय अछि। पहिने एहि पुरस्कारक आकर्षण नकदी छल मुदा आब मैथिलीक लेखक-कवि सभ त' अयाची, यात्री, चंद्रभानु टाइप त' रहलाह नइँ, तें कैक बेर सुनबा मे ईहो अबैत अछि जे अभ्यर्थी पुरस्कारक मूल राशिक त्याग करैत सूद मे होटल-बोतल आदिक बलें अकादमीक मोमेंटो आ प्रशस्तिपत्र पयबा मे सफल होइत अछि। एमहर त' ईहो सुनल गेल जे पुरस्कार पयबा लेल मृतक सेहो उठि बैसल आ पोथी लिखि क' अपन झंडा बुलंद केलक। आब एहि सँ अधिक माँ मैथिलीक सेवा की भ' सकैत अछि? असल मे शरदिन्दु कुमार चौधरीक लेखन भने ऊपर सँ प्रतिगामी बुझाइत अछि मुदा कने विलमि क' सोचू त' हुनका भीतरक मातृभाषा प्रेमक सोता देखा पड़त जे एकटा नैतिक आ ईमानदार कलमे टा सँ संभव अछि।

शरदिन्दु जीक चिंताक केंद्र मे अछि मैथिल समाज, मैथिल पाठक, तें ओ मैथिली उद्धारक नाम पर मैथिली कें अहित कर' बला व्यक्ति आ प्रवृत्ति पर बेर-बेर चोट मारैत छथि आ एहि क्रम मे ओ कोनो छद्म आवरण आकि प्रतीक के सहारा नइँ लैत छथि। मैथिलीक संस्था हो आकि मैथिलीक पत्रकारिता, अध्यापन हो आकि लेखन-सब ठाम लालची आ भ्रष्ट लोकनिक जुटान अछि। एक-दोसराक रचना कें अपन मरौसी बनेबाक लेल उताहुल। आ सभ सँ बत्तर स्थिति तँ मैथिलीक अध्यापक-अकादमिक दुनिया के अछि

जत' किछु अपवाद कें छोड़ि क' एक सँ एक पोंगापंथी सभ भरल अछि। 'अपील' शीर्षक व्यंग्यक ई पंक्ति एहि क्षेत्रक बखिया छोड़ेबाक लेल काफी अछि- "जहिया मैथिली पढ़बा लेल पटना विश्वविद्यालयमे नाम लिखौलहुँ तहिये श्रीमान् पाठकजी सन क्रोधी, श्रीमान् दिनेशजी सन भोगी आ श्रीमान् इन्द्रकांत जी सन लोभी गुरुजीसँ भेंट भेल छल। परिणाम ई भेल जे मैथिलीक पढ़ौनीसँ मन उचटि गेल आ मैथिली सँ प्रेम भ' गेल।" शरदिन्दु जी मैथिलीक स्वनामधन्य रचनाकार आ सम्पादक सुधांशु शेखर चौधरीक पुत्र छथि। साहित्य आ मैथिली प्रेम हुनका विरासत मे भेटलनि। आ यैह हुनकर कमजोरी सेहो बनि गेलनि। ओ राजनीतिशास्त्र मे स्नातकोत्तरक संग एलएलबीक डिग्री सेहो लेने छथि। ओ जँ चाहितथि त' कोनो विश्वविद्यालय मे प्रोफेसरी क' सकैत छलाह, कोनो कोर्ट मे वकील बनि तीन-पाँच क' सकैत छलाह। से सब किछु छोड़ि क' मैथिली प्रकाशनक मरुस्थल मे आबि, जीवन यापन करबाक हुनक जिद निःसंदेह मैथिली भाषाक प्रति अटूट प्रेमक परिणाम रहल होयत। मुदा एत' आबि जखन एहि दुनियाक खुरपैंची सँ ओ अवगत भेल होयताह त' मोहभंगक स्थिति स्वाभाविक अछि। यैह कारण अछि जे हुनक व्यंग्य अथवा संस्मरण यथार्थक धार सँ माँजल एतेक नग्न अछि जे कैक बेर पाठको कें अनसोहाँत सन बुझा सकैत छै।

असल मे पाठक जाहि रचनाकारक रचना पढ़ि हुनका अपन प्रिय बना लैत अछि, भावनात्मक रूपें हुनका सँ जुड़ि जाइत अछि, हुनकर व्यक्तित्व पर कोनो दाग लगिते ओ ढाल बनि ठाढ़ भ' जाइत अछि। आ एत' त' एक्को घर नइँ बारल गेल अछि। हमरा जनैत यैह कारण रहल होयत जे शरदिन्दु जीक रचनाक जे मूल्याङ्कन हेबाक चाही छल से नइँ भ' सकल। सभ क्यो चर्चा कर' सँ कतराइत रहल होयताह। कोनो समाज अथवा राष्ट्रक जनता भ्रष्ट भ' जाय त' ओकरा लेखक आ बुद्धिजीवी वर्ग रस्ता पर अनैत अछि, मुदा जँ लेखके बुद्धिजीवी भ्रष्ट भ' जाय त' ओहि समाजक केहन

अराजक स्थिति भ' सकैत छै, तकर कल्पना कैल जा सकैत अछि। यैह कारण अछि जे शरदिन्दु जीक कलम केर नोक पर सब सँ पहिने लेखक-बिद्धिजीवी वर्ग अबैत अछि- "गुंडा-बदमाश कें हल्ला-गुल्ला, मारि-पीटि करैत देखैत छिऐक तँ ई होइत अछि जे जँ बुद्धि रहितैक तँ ऐना नइँ करितय। मुदा पढ़ल-लीखल साहित्यकार, ओकील, नेता-अभिनेता, डॉक्टर, इंजीनियर, अधिकारी-पदाधिकारी आदि बुद्धिजीवी कें जखन आपसमे कटाउझ करैत, तू-तू, मे-मे करैत देखैत छिऐक तँ हठात कुकुरक हेंज मोन पड़ि जाइत अछि।" आ फेर एहि पंक्ति पर ध्यान दी- "एहन-एहन नेताजीकें होइत छनि जे जँ हम छी तँ मैथिली टिकल अछि आ संस्था चलि रहल अछि मुदा हुनका ई नइँ सूझैत छनि जे जाहि पदपर ओ छथि तत' सँ एकोरत्ती जँ जोर लगा देथिन तँ एकटा संस्था कें के पूछय कैकटा संस्था कें उसाहि देथिन। साहित्यकारक बीच उतराचौरी आ पछाड़-सम्हार आदि प्रवृत्तिक सम्यक विवेचन फगुआक बहन्ने 'देखल एक शूटिंग' आ 'स्वास्थ्य रक्षा पुरस्कार' मे भेल अछि। 'एकालाप' शीर्षक व्यंग्य सेहो अही कड़ीक विस्तार थिक। असल मे ई लेखक, बुद्धिजीवी चारित्रिक आ नैतिक पतन सब सँ अधिक खिन्न छथि से वर्त्तमान मे बहुत प्रासंगिक अछि। आइ जाहि तरहें बुद्धिजीवी-लेखक-पत्रकार सभ सत्ताक पाछाँ पीकदान ल' चारण परंपरा कें चरम धरि पहुंचा क' लोकतंत्रक चटनी बना रहल छथि, एहना मे शरदिन्दु जीक चिंता प्रासंगिक भ' उठैत अछि- "आ आब तँ ई बुद्धिजीवी वर्ग चारिम खंभा बनिक' सभ हलकान मे 'रंभा हो, रंभा हो' क ताल पर नृत्य करैत 'तहलका' मचा रहल अछि।"

शरदिन्दु कुमार चौधरीक राजनीतिक चेतना स्पष्ट छनि। ई अलग बात जे अस्मितावादी विमर्शक एहि समय मे हुनक किछु वक्तव्य आकि 'टोन' एहन अछि जकर पक्ष मे नइँ गेल जा सकै अछि। हुनकर एक टा व्यंग्य छनि 'प्लेटोक सपना, भारत आ कौमार्य-राजनीति'। ई निबंध भले लगभग बीस

साल पुरान हो मुदा एकर अनुगूँज एखनो सूनल जा सकैत अछि। एहि आलेख सँ साम्प्रदायिकताक प्रति लेखकक आलोचनात्मक दृष्टिकोण स्पष्ट रूपें सामने आबि जाइत अछि। एहिना लेखकक स्त्रीक प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण 'अहाँ की करबै?' शीर्षक व्यंग्य मे देखल जा सकैत अछि जत' आधुनिक सामाजिक परिवर्तनक नजरिए दाम्पत्य जीवनक हास-परिहासक बीच एक टा गीतक मादे स्त्री-चेतना कें रेखांकित कैल गेल अछि। करिया कक्का कें काकीक ई जवाब ध्यातव्य अछि- "कहलहुँ ई जे स्त्रीगन मे जे धैर्य, काजक प्रति निष्ठा आ लगाव होइत छैक से पुरुष मे कत' सँ हेतैक ओ तँ एके छड़पान मे झंडा गाड़य जनैत छैक आ से जँ नहि भेलैक तँ एहिना कोनो गप्प उछाह' लगैत छैक।" मैथिली मे 'गोलैसी' शब्द आलोचनाक पारिभाषिक शब्दावली बनि गेल अछि। बिना गोलैसी के मैथिलीक पुरस्कार अथवा समीक्षा आकि पत्रकारिताक कल्पने नइँ कैल जा सकैत अछि। अपन एही शीर्षक निबंध में शरदिंदु जी एहि शब्द कें एहि रूपें परिभाषित करैत छथि- "ओना शाब्दिक अर्थ कें छोड़ि जँ ठेंठ अर्थ भजिआओल जाय तँ 'गोलैसी ओहि निति कें कहल जाइछ जाहिमे एकटा व्यक्ति वा गुट दोसर व्यक्ति, गुट, समूह वा व्यक्तिक निंदा करैत अपन गुट अथवा अपन स्वार्थ पूर्ति लेल निर्लज्ज भ' ओहि व्यक्ति अथवा समाजक अहित कारबामे आनंद अनुभव करय।" गोलैसीक एहि परिभाषा मे जे व्यंग्य निहित अछि तकर गूंज मैथिली साहित्य मे 'अनुरणन ध्वनि' जकां सुनल जा सकैत अछि।

'बात बात पर बात' चारि सीरिज मे छपल शरदिंदुजीक संस्मरण छनि। मुदा ई संस्मरण सभ पारंपरिक विधा सँ अलग टिप्पणी छनि। एहि टिप्पणी सभ लेल ओ कहैत छथि जे 'जत' प्रवृत्ति दुष्प्रवृत्ति बनि प्रगट भेल हो ओत' हमर बात कने कटु अवश्य भ' गेल अछि। ओ भूमिका मे अहू बात कें रेखांकित करैत छथि जे "हमर बात सभ मुख्यतया अथवा पूर्णतया सत्य

पर आधारित अछि तें किछु गोटे कें अप्रिय अवश्य लगतनि मुदा ई सत्य किछु गोटेकें प्रिय सेहो लगतनि। हँ जिनका अप्रिय लागनि से अवश्ये अपन छाती पर हाथ राखि सोचथि जे हम कतहु सत्य सँ दूर त' नहि भेल छी।" शरदिंदुजीक एहि संस्मरण सभ कें ध्यान सँ पढ़ला सँ स्पष्ट होइत अछि जे मैथिली आन्दोलन, प्रकाशन, शिक्षण, साहित्य आ समाज कें ल' क' हुनक चिंता आ सरोकार जमीनी आ तटस्थ छनि। ओ पत्रकार छथि तें एहि समस्या सभक प्रति भावुकताक शिकार नइँ होइत छथि आ मैथिलीक नाम पर पसरल गोलैसी, भाई-भतीजावाद आ व्यक्तिक गिरगिटिया-चरित्र कें स्पष्ट रूपें रेखांकित करैत छथि। हुनकर चिंताक केंद्र मे मैथिलीक पाठक आ विद्यार्थी सभ अछि जाहि पर बहुत कम ध्यान देल जाइत अछि। पाठक निर्माणक लेल प्राथमिक स्तर पर मैथिलीक शिक्षण आ पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन पहिल शर्त जकाँ छै, जाहि लेल वर्तमान मे बहुत कम प्रयास भेल आ भ' रहल अछि। जे व्यक्तिगत प्रयास एहि क्षेत्र मे भेल तकरो अपन सीमा छै। मैथिली पत्रकारिता के सन्दर्भ मे शरदिंदु जीक चिंता बहुत जेनुइन अछि- "दुर्भाग्य मैथिलीक छै जे पत्रकारिता जगत में पचास प्रतिशत सँ बेसी मैथिल कार्यरत छथि मुदा ओ मैथिली भाषा मे किछु नइँ लिखताह। मानहानि अथवा स्तरहीनताक बोध हुनका होइत छनि। ख़ासक' ओ मैथिली लेखनकें हीन बुझैत छथि। तें आइ स्थिति ई छनि जे ओ दोसरक खेत तामैत-कोड़ैत छथि आ दोसर हुनकर खेतकें चरिकें चलि जाइत छनि।" शरदिंदु जीक एहि चिंता संग ईहो जोड़ब उचित जे ई पत्रकार सभ मैथिली में किएक नइँ लिखैत छथि। जा धरि आर्थिक उपार्जनक साधन मैथिली पत्रकारिता नइँ बनत, ताधरि ई चिंता बनले रहत। जीवन यापन लेल प्रेम सँ पहिने अर्थक आवश्यकता होइत छै।

"मैथिल संस्था : 'छी छा' सँ 'दूर-दूर छिया-छिया' धरि" मे लेखक मैथिली संस्था सभक पोस्टमार्टम करैत छथि। ओ सूचना दैत छथि जे भारत भरि मे लगभग डेढ़ सौ मैथिली संस्था अछि मुदा सभ अपन-अपन डपोरशंख

फूकबा मे व्यस्त आ मस्त। विद्यापति पर्वक नाम पर गीत-नाद, नाच-गान धरि सीमित एहि संस्था सभ द्वारा समवेत रूपें जँ पोथी आ पत्रिका लेल ठोस पहल होइ त' निःसंदेह मैथिलीक कल्याण भ' सकैत छै। मिथिला मे लाखो रुपैया लगा क' एक सँ एक यज्ञ होइत अछि, श्राद्धक नाम पर लाखो बुकि देल जाइत अछि मुदा एक टा पत्रिका अथवा पोथी कीनबाक इच्छा कतेक लोक मे होइत छै? असल मे मिथिलाक वृहत्तर समुदायक बीच 'मैथिल जातीयता'क विकासक लेल कोनो प्रयास नइँ भेल, जकर परिणाम आइ सोझाँ अछि।

'मर्मान्तक' मे किछु व्यक्तिगत आ पारिवारिक संस्मरणक संग सामाजिक-सांस्कृतक विषय सभ पर टिप्पणी कैल गेल अछि जाहि मे शरदिंदु जीक वृहत्तर सामाजिक-सांस्कृतिक सरोकारक दिग्दर्शन होइत अछि। भाव अथवा मनोभाव पर लिखब अत्यंत कठिन होइत अछि। मानव स्वभाव सँ अंतर्मुखी आ अपना प्रति व्यामोह सँ ग्रस्त रहैत अछि तें ओ दोसराक भीतर बेसी झांकैत अछि। लेखक एहि संकलन मे आस्था, भय, चित्तवृत्ति, सुख-शांति, घृणा, पीड़ा, इच्छा, तनाव आदि विषय पर जे टिप्पणी करैत छथि से दार्शनिकता, मनोवैज्ञानिकताक संग-संग अनुभव आ मानवता सँ ओतप्रोत अछि। कोनो रचनाकार लेल अपन जातीय-धार्मिक सीमा सँ ऊपर उठि मनुष्य बनब पहिल शर्त थिक। कोरोना महामारी सम्पूर्ण दुनिया कें ठमका देलक। मंदिर, मस्जिद, गिरिजा आ गुरुद्वारा सभ पर ताला लगा देलक। मुदा की आस्थाक नाम पर समाज मे पसरल कट्टरता कें कोरोना कम क' सकल? शरदिंदु जी अपन आस्था शीर्षक टिप्पणी मे लिखैत छथि- "की आस्था मरि जायत। की आस्थाक रूप में परिवर्तन होयत! की आस्थाक प्रति कट्टरतामे कमी आओत! की आगाँ विभिन्न सम्प्रदायमे आस्थाक टकराहटि कम होयत। कोरोना आगाँ जे करय, आस्थाकें घर-घर पसारि दिअय वा समेटि क' एकठाम क' दिअय एखन तँ आस्था एकेठाम केन्द्रित अछि- कहुना हमर प्राण बाँचि जाय बादमे सोचल जायत जे कतय माथ झुकाबी।" मुदा ई देखल

गेल जे जेना-जेना कोरोना घटैत गेल तेना-तेना आस्थाक नाम पर घृणा आ तकरारक खेती पुनः शुरू भ' गेल। एहि सँ ईहो स्पष्ट होइत अछि जे आब लोक 'आस्तिक' सँ बेसी 'धार्मिक' भ' गेल अछि।

'हमर अभाग हुनक नइँ दोष' मे किछु एहन व्यक्तिगत प्रसंगक चर्चा अछि जे व्यक्तिक दोहरापनक संग, लोलुपता आ 'विषकुम्भम पयोमुखम' बला चरित्र कें सोझाँ अनैत अछि। बिच्छू कखनो पाछाँ सँ नइँ डंक मारैत अछि, आकि साँप कखनो पीठ पर नइँ डसैत अछि, किएक त' एकरा सभ लग मानव जकाँ विकसित दिमाग नइँ होइत छै। ई सौभाग्य मनुष्ये कें भेटल छै। आ बुद्धिजीवी लोकनिक दिमाग त' सामान्य सँ किछु बेसिए विकसित होइत अछि तें हुनकर 'विष' अन्तःसलिला रहैत अछि। वर्ष 2021 मे मैथिली अकादेमी अपन पत्रिकाक प्रूफ पढ़बा लेल 280/- रुपैया दैत अछि सेहो कतेक तागेदाक बाद। जँ सरकारी संस्थाक ई आर्थिक हालत छै, तखन बिहारक नेता सभ कें मैथिलीक संस्था सभ कोन मुहें पाग-डोपटा पहिरा क' मंच पर बैसा चारण-गान करैत अछि से विचारणीय अछि। एहने किछु प्रसंग सभक चर्चा एहि खंड मे भेल अछि जे लेखकीय इमानदारी आ तटस्थताक प्रमाण थिक। एहिना 'साक्षात्' मे स्वयं द्वारा लेल गेल अपन साक्षात्कार अछि। जाहि मे एक टा प्रसंग एहन मार्मिक अछि जे एहि बात दिस इशारा करैत अछि जे कोनो व्यक्ति जँ मैथिली सेवाक (प्रकाशन, पत्रकारिता आकि लेखन) बलें अपन जीवन यापन कर' चाहत त' ई समाज ओकरा कतेक रिटर्न देतै। अपन जीवनक सब सँ पैघ गलती आ कचोट कें अभिव्यक्त करैत ओ लिखैत छथि- "हम अपन एकमात्र पुत्र राजशेखर कें इंजीनियरिंगक पढ़ाइक खर्च नइँ द' सकलियनि जे कि हुनकर सभ सँ पैघ लक्ष्य रहनि। ओ इंटरक बाद ओहि हेतु चयनित सेहो भ' गेल छलाह मुदा...। आ एतहिए सँ हमर जीवनक दिशा ओ दशा बदलि गेल, हम निर्जीव-निराकार मनुष्यक रूप मे अपन काया ल' क' पृथ्वीक भार बनल जीव रहल छी। अहाँ एकरा पुत्र-

मोह कहि सकैत छी, से तँ छैके, मुदा एहि 'केस' मे हम दायित्व आ कर्तव्य सँ च्युत भेल छी।"

असल मे 'बात बात पर बात' चारि खंड मे प्रकाशित शरदिन्दु जीक संस्मरणात्मक आत्मकथा थिक जकरा पढ़ैत ह्रदय मे एक टा टीस उठैत अछि जे मैथिली आ मिथिलाक लेल एक टा जेनुईन चिंता कर' बला व्यक्ति कें ई समाज कतेक प्रतिदान करैत अछि।

'विदेह' ई अंक निकालि क' शरदिंदु कुमार चौधरीक लेखनक मूल्याङ्कन करबाक आरम्भ केलक अछि, ताहि लेल हुनक कर्ता-धर्ता लोकनि कें बहुत बहुत आभार आ धन्यवाद।

शरदिन्दु जीक रचना सभ कें पढ़ैत तुलसीदासक ई पंक्ति बेर बेर मन पड़ैत अछि किएक त' तुलसी देवतो लोकनिक चारित्रिक दुर्गुन पर व्यंग्य कर' सँ नइँ चुकैत छथि-

"सुर नर मुनि सब कै यह रीती।
स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती।।

सम्पर्क- डॉ श्रीधरम, असिसटेण्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, आत्मा राम सनातन धर्म कॉलेज, धौलाकुँआ (दिल्ली विश्वविद्यालय), निवास- बी-२७७-ए, वसंत कुंज एनक्लेव, नई दिल्ली ११००७०, मो. ९८६९३२५८११

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३. विदेह ३५९ म अंक ०१ दिसम्बर २०२२ (वर्ष १५ मास १८० अंक ३५९)- अंक ३५८ पर टिप्पणी

कल्पना झा, पटना

१. शरदिन्दु चौधरीक संस्मरण साहित्य [बात-बातपर बात (I-IV)]/ २. शरदिन्दु चौधरीक संस्मरणात्मक हास्य-व्यंग्य संग्रह- 'जँ हम जनितहुँ'३. शरदिन्दु चौधरीक तीनटा व्यंग्य संग्रह- 'बड़ अजगुत देखल..', 'गोबरगणेश' आ 'करिया कक्काक कोरामिन'- गजेन्द्र ठाकुर पर टिप्पण्णी

बहुत नीक, समीचीन तीनू आलेख। एकहक टा बिन्दुकेँ फड़िछा कऽ लिखल गेल अछि। ई तीनू आलेख पढ़ि शरदिन्दु सरक व्यक्तित्व आ हुनका द्वारा रचित पोथी सभसँ लोक नीक जकाँ परिचित भऽ जाएत। बहुत मेहनतसँ तैयार कएल गेल तीनू आलेख, जे पढ़ैत रोचक सेहो लागल। माने बोरिंग नहि अछि। साधुवादक पात्र थिकहुँ अपने, बहुत मनोयोगपूर्वक तैयार कएल तीनू आलेख।

मधुकान्त झा

विदेहक शरदेन्दु चौधरी विशेषांक मे चौधरी जी के "समय साल पत्रिका" संपादन पर अजीत झा जी के एक लेख अछि।चुंकि उक्त पत्रिका संचालन सं जुड़ल रहलहुं तें एकर चर्चा आह्लादित कयलक। अजीत जी कें धन्यवाद। समय साल पत्रिका गैर साहित्यकारो के मैथिली पढबा लिखबाक लेल उत्प्रेरक बनत से कामना राखि आरंभ भेल छल। एकर लाभ सभ सं बेसी हमरा भेटल से स्वीकार करैत छी। एहि लेल संपादक शरदेंदु जीक सदा आभारी रहब। समय साल जखन प्रकाशित होबय लागल तहिया मैथिली में एक पत्रिका नहिं रहि गेल छल। जहां धरि समय साल पत्रिका के अंतिम पृष्ठ के अश्लील हेबाक बात अछि से बात अनेक विशुद्धवादी लोक कहैत छलाह।

अजीत जी सेहो चर्चा कयलनि। शरदेंदु जी जं ओकरा अश्लील नहि स्वीकार कयलनि तं ओकर कारण अछि। जीवन मे भोजन आ कामुकता (Food and Sex) सर्वोच्च स्थान रखैत अछि। कोन मैथिल बॉलीवुड सं प्रभावित नहिं?जतय सेक्सी फिल्म के बाढि बहैछ। कोन गाम अछि जतय अश्लील भोजपुरी आ पंजाबी हरियाणवी गीत दिन राति लाउडस्पीकर नहिं सुनबैत अछि। ब्लिज सनक नामी पत्रिका के अंतिम पृष्ठ एही सौंदर्य के प्रतीक छल। समय-साल मे वार्तालापक अंतिम पृष्ठ परदाक अंदर रहैत छल, अश्लील कहब कनी कठाइन लगैछ। समय संग चलबाक एक प्रयास छल।ओना अपन अपन मत। सच कहू तं ओहि अंतिम पृष्ठक "लतिका"हम स्वयं छलहुं। तें उपरोक्त गलत सफाई । ओना एकर प्रशंसक कम नहिं छला। हम उक्त पृष्ठ के दू पोथी के रूप मे प्रकशित कयल। लट लीला आ नटलीला। नामकरण अजित आजाद कयलनि। जकरा चाही पठा देब। ओतेक खराप नहिं लागत। पुनः अजीत जी के धन्यवाद। अपराध के क्षमा करी।

केदार कानन

शरदिंदु जी पर महत्वपूर्ण काज सम्पन्न कयलहुं अहांलोकनि। धन्यवाद क पात्र थिकहुं। शुभकामना।

कामेश्वर चौधरी, विकासपुरी, नई दिल्ली

प्रिय शरदेंदुजी पर विशेषांक नीक लागल।हुनक़ भाषा प्रेम, साहित्यक कर्मठता और मैथिली सेवा प्रेरणाप्रद रह अछि। हमर (ECRly) में पटना प्रवासक अंतरालमे घनिष्ठ सम्बन्ध रहल. UPSCक सिवल Service क

लेल अपना खर्च पर किताब पठबथि।
पूज्य पिताक अनुशरन करैत साहित्यकार रचना करैत रहलाह।मैथिली भाषा प्रसारमें हिमल भूमिका स्मरणीय रहत।
हिनक दीर्घजीवनक शुभकामना

डॉ विजयेन्द्र झा

बाप रे बाप! अपने एतेक काज मैथिलीमे क' रहल छी, हमरा बुझने अपनेक काजक समक्ष मैथिली- साहित्य जगतमे प्रायः सभ झूस पडि जएताह। अपनेक एहि विराट आ' विशाल सामग्रीकें पढबाक लेल यथेष्ट समय आ' असीम धैर्य चाही। हमरा उत्सुकता बहुत अछि एकरासभकें पढबाक आ' हम अवश्य पढब । कनेक पलखति भेटैत अछि तखन। ता' हम सभटाकें 'सेभ' क' कए राखल अछि। हम एकटा अनुष्ठानमे लागल छी। शीघ्रहि एकरा निपटाए अपनेक एहि अमूल्य धरोहरसभक रसपान करब। बहुत-बहुत आभार, साधुवाद आ' प्रणाम!

डॉ. प्रमोद कुमार, पॉन्डिचेरी

विदेहक ३५८ वां अंक पढल । ई अंक श्री शरदेन्दु (शरदेन्दु चौधरी विशेषांक अछि। सबस' पहिने हम श्री गजेन्द्र ठाकुर जी (संपादक) कें कोटि कोटि धन्यवाद दैत छियैन्ह जे ओ, कोन कारण स' से नै जानि मुदा ओहन साहित्यकार, कवि , आलोचक वा पत्रकार पर विशेषांक निकालि रहल छथि जिनका गद्दी पर बैसल लोक या त' बिसरी गेलाह वा टारि देलखिन्ह। मैथिली भाषा साहित्यक विकास मे बहुतो एहनो मनीषी लोकनि भेलाह जे, जी जान स' माँ मैथिली केर सेवा कैलैन्ह । निः स्वार्थ। तेकर ई अर्थ नै जे हुनका कात

क' देल जान्हि । श्री जगदीश चंद्र ठाकुर संग साक्षात्कार में वो स्वीकारैत छथि जे मैथिली में शीर्ष पुरस्कारक लेल मैथिलीक विकास में योगदान, साहित्यक कौशल, निपुणता वा मौलिकताक गुण रहनाई पर्याप्त नै, ओकरा लेल कलयुगिया गुणक खगता होइत छै। जे हुनका नै छन्हि आ तें हुनका अनदेखा कैल गेलैन। श्री कापरी जीक लेख निक लागल मुदा हमरा ओ लेख कम संस्मरण बेसी लागल। श्रीमती कल्पना झाक लेख ईमानदार लागल। ओ स्वयं कहैत छथि जे हुनका श्री शरदेन्दु जीक विषय में बेसी नै बुझल छलैन्ह । किताब मंगा क' पढलाक बादे वो लिखली अछि। कुल मिला क' हमरा ई अंक बहुत निक लागल।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**